''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'' महामंत्र दिमागी संकटहारी है और ध्यान अमृत दायक है।

स्मारिका- २०१०-११

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

अनुभव अंक
पृष्ठ 3 से 24 तक

ज्ञान अंक
पृष्ठ 25 से 48 तक

ॐ आनन्दमय
ॐ शान्तिमय

प्रकाशक
श्री विश्वशान्ति आश्रम
झूँसी-इलाहाबाद

''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'' महामंत्र दिमागी संकटहारी है और ध्यान अमृत दायक है।

ॐ आनन्दमय **ॐ शान्तिमय**

मुझे बड़ी खुशी है कि आप सभी भगवन लोगों ने इस पत्रिका को सहर्ष स्वीकार किया है और अपने-अपने विचार से हम सबको लाभान्वित किया है। इस पत्रिका के लिए आपलोगों के निरन्तर अनुभव आ रहे हैं, जिसे पढ़कर न केवल आश्रम से संबद्ध लोग बल्कि अन्य सांसारिक लोग भी लाभान्वित हो रहे हैं। आपके अनुभवों से अन्यत्र भटक रहे विस्मृत मानव को प्रेरणा और मार्गदर्शन मिल रहा है। कब और कौन-सा अनुभव अथवा ज्ञान, किस मनुष्य का रास्ता बदल कर, अध्यात्म की सीढ़ी की ओर मोड़ दे, कुछ कहा नहीं जा सकता।

आप सभी भगवन जन से आग्रह है कि आप सब अपने जीवन में घटित अनुभवों को निरन्तर आश्रम में भेजते रहें ताकि और लोग इन अनुभवों से प्रेरणा ले कर अपना जीवन सुगम, सुन्दर और सार्थक बना सकें। यह पत्रिका कैसी लग रही है, अपने विचारों से हमें अवश्य अवगत करायें। आपका पत्र आगामी अंक में प्रकाशित किया जायेगा। उन भगवन जन से मैं क्षमा चाहूँगा जिनके भेजे गये अनुभव इस अंक में प्रकाशित नहीं हो पायें हैं, लेकिन आपके अनुभव की प्रतिलिपि आश्रम में सुरक्षित रखी जाती है और उसे आगामी अंक में प्रकाशित की जायेगी।

ॐ शान्तिमय

■ ***संपादक– नन्द लाल सिंह***

संपादक	आनन्दमय- नन्द लाल सिंह **E-mail: takhtotaaz@rediffmail.com**
संयोजक	आनन्दमय- ओम प्रकाश सिंह
आशीर्वाद	सभी गुरुजन लोगों का
सहयोग राशि	**15 रुपये**
प्रकाशक	**श्री विश्वशान्ति आश्रम** त्रिवेणीपुरम, झूँसी, इलाहाबाद
अक्षर संयोजन	**शचि कम्प्यूटर्स (तख़्तोताज)** **381-ए, पुराना अल्लापुर, इलाहाबाद।** **Mo. 9839873793** **Visit us: www.takhtotaaz.com**

नोट- इस पत्रिका से प्राप्त धन का उपयोग पत्रिका के अगले अंक के प्रकाशन को और बेहतर बनाने व इसकी संख्या बढ़ाने में किया जायेगा। ताकि अधिक से अधिक लोग आश्रम के ज्ञान से परिचित हो सकें और ध्यान के महत्व व विधि को समझ सकें।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

खण्ड-१ अनुभव अंक

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

''सत्य-अनुभव''

आश्रम में प्रेषित एक बहन जी ने अपने अनुभव में लिखा है कि इस आसुरी संसार में जब जन्म लिया है, तो प्रतिकूलताओं का आना तो अनिवार्य ही है, और वे जीवन रूपी नौका को झकझोरा ही करती हैं। किन्तु ॐ आनन्दमय भगवान के सन्देश तो आत्म-बल देते रहते हैं। प्रतिकूलताओं के समय का यह सन्देश कि वे सदैव अहितकारी ही नहीं होती, उनके निवारण के लिये प्रयत्न करो, तो बड़ा बल देती हैं फिर क्षण-क्षण परिवर्तनशील समय है, एक दिन यह भी समय चला जायेगा।

- ■शमशान का मार्ग वैराग्य उत्पन्न कर मुक्ति का मार्ग है।
- ■संसार का मार्ग दु:खदायक कर्मों में सुख दिखा कर जन्म-मृत्यु का मार्ग है।
- ■शमशान का मार्ग भगवान की याद कराने का मार्ग है।
- ■ संसार का मार्ग भगवान को भूल जाने का मार्ग है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री आनन्दमय भगवान शरणम्

भगवन् मैं दिल्ली निगम विद्यालय में प्रधानाचार्य के पद पर कार्यरत थी। सन् २००६ में रिटायरमेंट के बाद मैं चाहती थी कि मुझे किन्हीं ऐसे महापुरुषों का संग मिले और ऐसा सत्संग मिले जिससे मुझे कुछ आध्यात्मिक उपलब्धि हो सके।

वैसे तो मैं बचपन से ही धार्मिक प्रवृत्ति की होने के कारण धार्मिक पुस्तकों व लेखों का पठन-पाठन करती रहती थी, परन्तु फिर भी कुछ रिक्तता थी, कहीं कुछ खालीपन था।

मेरी एक मित्र (अनीता अग्रवाल) मेरे इन विचारों व भावों से अवगत थी। उसने मुझसे कहा– **''जैसा तुम चाहती हो वैसा ही सत्संग है, जहाँ मैं जाती हूँ, तुम मेरे साथ चलो।''**

एक दिन वह मुझे सत्संग ले गई, जो सेठी जी भगवन् सत्संग चलाते हैं। पहले तो मुझे ''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'' ही समझ में न आया। सच्ची-प्रेम भक्ति का पठन-श्रवण किया। ध्यान का ढंग तो बिल्कुल ही निराला है। मैं पशो-पेश में थी। इस दुविधा में ४-५ दिन बीत गये, परन्तु मैं सत्संग जाती रही।

एक दिन मैं दोपहर को लेट गई , अर्द्ध-सुप्तावस्था-सी थी। मुझे लगा मेरे सिर की तरफ खड़े होकर किसी ने मुझसे कहा– **''शब्दों पर ध्यान दो शब्दों पर।''** मैं एक दम उठी, लेकिन वहाँ पर कोई भी नहीं था। मगर वे शब्द अभी भी मेरे कानों में दबाव के साथ गूँज रहे थे। तब मैं समझ पाई कि वह प्रभु पिता जी के सिवाय और कौन हो सकता है, जो मुझे राह दिखाएगा। उसके बाद मैं सच्ची प्रेम भक्ति व ग्रन्थों का पठन करते समय शब्दों पर विशेष ध्यान देने लगी, जिससे मुझे उनमें छुपे भाव समझ में आने लगे।

इन दो से ढाई वर्षों में, मैं पाँच बार श्री आश्रम (इलाहाबाद) आकर श्री सन्तों का स्नेह व आशीर्वाद प्राप्त किया। श्री आश्रम का नजारा आँखों में समाया रहता है। मैं ॐ आनन्दमय प्रभु जी की अति धन्यवादी हूँ जिन्होंने मुझे आडम्बरहीन सत्संग के सत्य मार्ग पर लगाया। ॐ शान्तिमय

■ **प्रभु पिता की कृपा अभिलाषी**
सन्तोष अरोड़ा (दिल्ली)

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मैं कुमारी अंजलि कानपुर में बी.ए. फाइनल पढ़ने वाली छात्रा हूँ। मेरे पूज्य पिता जी को भगवान की दया से ध्यान समाधि-मग्न ब्रह्मदर्शी महापुरुष भगवान का दर्शन और सत्संग प्राप्त हुआ उन्होंने हम सभी भाई, बहनों को इस मार्ग में लगाया और हमेशा ॐ आनन्दमय भगवान के प्रति श्रद्धा, प्रेम, विश्वास के साथ ही हम लोगों की आस्था को सुदृढ़ बनाते गये। मैंने जो इस दिव्य सत्संग में अनुभव किया उसमें से इस पत्रिका में तीन विषयों पर लिख रही हूँ। पुन: भविष्य में प्रकाशित होने वाली पत्रिका में प्रेषित करने की शुभ इच्छा है।

ॐ श्री समाधिमग्न ब्रह्म पदाधीश शरणम्
ॐ श्री कर्मयोगाचार्य देव जी शरणम्

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ध्यान योग क्या है?

ध्यान योग वह योग है, जो सारे योग से अनभिज्ञ है, ध्यान योगी मनुष्य सभी कामनाओं, से परे होकर एक ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान में ही मन लगाता है, अत: उसकी आठो इन्द्रिया वश में रहती है, अनुकूल-प्रतिकूल में सुख, दु:ख, मान बड़ाई प्रतिष्ठा, जय पराजय में एक ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान की लीला समझकर उनके मंत्रों का जाप करते हुये अपने श्री इष्ट देव भगवान के विग्रह स्वरूप को प्रतिक्षण तथा आठो पहर याद करता है, एवं उनके बताये गये, विश्वशान्ति भाग-१ के पृष्ठ-१३ से १६ तक के नियमों का दृढ़ता से पालन करता है, अत: आसन पर बैठकर योगसिद्ध महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जाप करते हुए अपने श्री इष्ट देव भगवान के विग्रह स्वरूप को याद करते हुये मानसिक पूजा करता है, अत: हर समय ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का जप करते हुये शान्त चेहरे का एवं प्रेम प्रसन्न मुद्रा का दर्शन देता है, ध्यान योगी मनुष्यों को ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी प्रतिक्षण विलक्षण आनन्द प्रदान करते रहते हैं, तथा उसकी केवल मात्र ॐ आनन्दमय भगवान में ही ममता आसक्ति बनी रहती है, यही मेरा ध्यान योग के प्रति अनुभव है, ध्यान योग की विधि, श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग-२ के **''श्री ध्यान योग की विधि''** नामक लेख में प्रकाशित है, यदि आप श्री विश्वशान्ति आश्रम के प्रचारक एवं ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय अनुरागी प्रेमी भक्तों का संग सेवा करेंगे तो आपको स्वयं ही अनुभव होगा।

पूजा क्या है ?

जो प्राणी ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान के नियमों का पालन करके सच्चे मन से विश्व सेवार्थ या विश्वशान्ति के लिये भगवान की पूजा करता है। एवं विश्व को आनन्दमय शान्तिमय बनाने में प्रयत्नशील रहता है, राजसी, तामसी एवं भगवान में श्रद्धा रखने वाले भक्तों को एक श्री ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान में श्रद्धा कराना तथा निष्काम भाव पूर्वक ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान की सेवा पूजा करना तथा उनके नाम गुण ज्ञान का प्रचार-प्रसार करना ही सच्ची पूजा कहलाती है।

भक्ति क्या है?

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान को सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान, सर्वान्तर्यामी, सर्वज्ञ समझना तथा सौन्दर्य और ऐश्वर्य आदि गुणों के अनन्य प्रेम प्रसन्नता से मन को ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान में लगा देना। योगसिद्ध महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जाप आठो पहर करते रहना एक पल के लिये भी ॐ आनन्दमय भगवान की विस्मृति को न सह सकना भगवान में ही मन लगाना तथा उनके विग्रह स्वरूप को हरक्षण याद करते रहना तथा एक मात्र ॐ आनन्दमय भगवान ही प्रेमास्पद है, ऐसा समझने पर उस भक्त की इस संसार

की किसी भी वस्तु में जरा भी लालसा नहीं रह जाती, ऐसी अवस्था में संसार के किसी भी भोग विलास का उसके लिये कोई महत्व नहीं रहता, जब भक्त को संसार की किसी भी वस्तु से मोह नहीं रह जाता ऐसी स्थिति में संसार तथा परलोक की समस्त वस्तुओं से उसका मन हट जाता है, और प्रेम प्रसन्नता एवं श्रद्धा के साथ एक ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान का ही निरन्तर चिन्तन करता है, एक पल के लिए भी वह ॐ आनन्दमय भगवान की विस्मृति को सहन नहीं कर सकता, यही एक ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान की भक्ति कहलाती है, यही मेरा ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान की भक्ति का अनुभव है। **ॐ शान्तिमय**

■ **अंजली**

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

जन्म-मृत्यु से मुक्ति दिलाने वाले, बीच मझधार में फँसी जीवन नौका को किनारे लगाने वाले
ॐ श्री गुरु भगवान शरणम्

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मेरी आयु ७० वर्ष की है। जब मैं डेढ़ वर्ष का था तभी लौकिक पिता का ॐ श्री प्रभु पिता जी ने मुझे मेरा वियोग करा दिया था और यहीं से मेरे संघर्षमय जीवन की रूप रेखा प्रारम्भ हुई। मेरी पूज्य माता जी महान कर्मठ, धैर्यवान, संकटों का वीरता के साथ सामना करने वाली महिला थीं क्योंकि पिता की मृत्यु के बाद उन पर ४ सन्तानों के पालन पोषण का भार आ गया। पहले की महिलायें अधिक पढ़ी लिखी नहीं होती थीं। इस उत्तरदायित्व को निभाने के लिये उन्होंने विद्या अध्ययन भी शुरु किया। इस तरह प्रभु की शक्ति के बल पर सन् १९५७ में उन्होंने हाई स्कूल की परीक्षा पास की। ऐसी कर्मठ, धैर्यवान पूज्य माता जी की छत्र छाया में मेरा पालन पोषण हुआ।

सांसारिक, सामाजिक उथल-पुथल, अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों को झेलते हुये उनका अशान्त मन शान्ति प्राप्त करने के उद्देश्य से एक ऐसे गुरु की खोज में लगा था जो उन्हें उनके जीवन में शान्ति प्रदान कर सके। उन्होंने कई गुरुओं को गुरु भी माना उनके आदेशानुसार चलीं भी लेकिन उनका वह लक्ष्य कोई पूरा नहीं करा पा रहा था। लेकिन इस दिशा में भी वह निराश नहीं हुयीं और खोज में लगी रहीं। पुण्योदय के साथ जब वह शुभ दिन आया तो उनको सत्य स्वरूप श्री समाधिस्थ ॐ श्री महापुरुष भगवान के दर्शन और उनका सत्संग प्राप्त हुआ और उनकी यह अभिलाषा पूर्ण हुई और यहाँ ही उनको धर्म विषय में पूर्ण तृप्ति मिली क्योंकि दयामय प्रभु पिताजी ने अब उनके भटकते हुये दु:खीमन को अपनी मुट्ठी में बाँध लिया था। उन्होंने अपने जीवन काल में ॐ श्री महापुरुष भगवान के सत्संग व उनके दर्शन-समागम के लाभों को लेखनी रूप में दिया जो कि अनुभव अंक में प्रकाशित है। हाँ इस विषय में, मैं अपने को अधिक भाग्यवान समझता हूँ कि धर्म के क्षेत्र में मुझे अपने जीवन में कहीं भटकना नहीं पड़ा। भटकने का समय आने के पूर्व ही प्रभु पिता जी ने अपने समीप बुला लिया और धर्म के क्षेत्र में मैं पूर्ण तृप्त और सन्तुष्ट हूँ।

सांसारिक, सामाजिक व पारिवारिक कष्टों व संकटों की अनुभवी पूज्य माताजी ने पुत्र होने के नाते मुझे भी इस सत्य मार्ग पर लगाया। वह मुझे भी सत्संग में लाने लगीं। बाल्यावस्था थी इच्छा व अनिच्छा से प्रेमवश अथवा भयवश मैं भी सत्संग में जाने लगा। बाल्यावस्था के कारण मन खेलने में अधिक लगता था सत्संग में आने से मन भागता था। लेकिन कुछ समय तक सत्संग में आते रहने से सत्संग में कुछ रूचि पैदा हुई। सत्संग में जब सन्ध्या प्रार्थना व भजन कीर्तन चलता तब तक तो मैं बैठा रहता लेकिन जब ध्यान का प्रकरण प्रारम्भ होता तब मेरा मन उबता था। उस समय मैं सत्संग से उठकर कम्पनी बाग में टहलने लग जाता। क्योंकि अकेले घर आ नहीं सकता था। सत्संग समाप्ति पर ही माताजी के साथ वापस आना होता था। मेरी संगीत में रूचि को

समझकर माता जी ने मुझे घर पर ही आनन्द कीर्तन के २-३ भजन, सन्ध्या प्रार्थना व आरती हारमोनियम पर सिखाया क्योंकि वह संगीत की भी प्रेमी थीं। फिर क्या था सत्संग में मुझे भी भजन गाने व ज्ञान उच्चारण करने का अवसर पूज्यनीय आनन्द स्वरूपा जी व पूज्यनीय आनन्द निधि जी द्वारा प्राप्त होने लगा और यहीं से मुझे सत्संग के प्रति विशेष रूचि व सत्संग में आने का उत्साह बढ़ा।

सत्संग में नियमित आते रहने से और ॐ श्री महापुरुष भगवान का दर्शन समागम मिलते रहने से मेरे मन को भी उन्होंने अपनी ओर आकर्षित किया। और मेरे चंचल मन को भी उन्होंने अपनी मुट्ठी में लिया। ध्यान के समय जो मैं भागता था, या मेरे मन में अरूचि थी उसको दयामय प्रभु पिता जी ने समाप्त कर दिया। जब दया सागर ने अपना जादू मेरे मन पर चलाया और कुछ क्षण ध्यान द्वारा मन की एकाग्रता का अनुभव कराया तो मैं प्रभावित हुये बिना नहीं रह सका क्योंकि वह अमूल्य रत्न उस आनन्द-शान्ति को प्राप्त करने का पात्र श्री भगवान मुझे बना चुके थे। पहले मैं माता जी के प्रेम वश व भयवश सत्संग में आता था लेकिन जब से श्री प्रभु पिताजी ने मेरे चंचल मन को अपनी मुट्ठी में ले लिया तब से वह क्षण आया जबकि मैं माता जी से कहने लगा कि मैं सत्संग में जा रहा हूँ आप आती रहियेगा। मेरे मन को श्री ध्यानमय जी ने ध्यानमय बना दिया था। आर्थिक संकट के कारण एक साईकिल भी नहीं थी और मैं पैदल ही सत्संग के लिये निकल पड़ता। मन की ऐसी स्थिति हो गई थी कि रास्ते भर यही सोचता कि कितनी जल्दी सत्संग में पहुँच कर ध्यान में बैठ जाऊँ। अब मैं सत्संग में नित्य जाने लगा। सत्संग में जल्दी पहुँच जाने के कारण वहाँ श्रद्धालु प्रेमियों, निष्कामी व निरंहकारता के स्वरूप प्रेमी भक्तों की सत्संग की सेवाओं को देखकर मैं और भी प्रभावित हो गया। और इस तरह मैं भी उनके साथ सत्संग की व्यवस्था में शामिल हो गया। और सत्संग की सेवाओं को करने में अपना अहोभाग्य समझा।

ऐसी करी गुरु देव कृपा मेरे चंचल मन को मोड़ दिया।

सत्संग में श्रद्धा-प्रेम के विकास के साथ अब श्री प्रभु पिता जी ने मुझे अपने दरबार में पहुँचने का सौभाग्य भी प्रदान किया। प्रत्येक रविवार मैं प्रातः काल सत्संग करने के उपरान्त आश्रम पहुँच जाता। वहीं जलपान व प्रसाद भी मुझे प्राप्त हो जाता था। हाँ आश्रम पहुँचने से पूर्व बाजार से कुछ सब्जी व फल खरीदने की सेवा मुझे आश्रम से मिली हुई थी। जिसे मैं श्रद्धा-प्रेम उत्साह के साथ करता था। बाजार से सब्जी-फल कैसा खरीदना है इसकी शिक्षा मुझे बड़ी बहन जी समय-समय पर देती रहती थी।

मध्याह्न के प्रसाद पाने के पश्चात् मैं भगवत् भ्राता श्री आनन्द किरन जी भगवन् के साथ सत्संग की व्यवस्था करने के लिये कम्पनी बाग सत्संग भूमि में पहुँच जाता था और भी प्रेमी अपने-अपने निवास स्थान से पहुँच जाते थे। इस तरह मेरा श्रद्धा-प्रेम-उत्साह को बढ़ाने में पूज्यनीय दोनों बहने व भ्राता श्री आनन्द किरन जी की मुझ पर विशेष कृपा रही। जिसको मैं भूल नहीं सकता और आजीवन ऋणी रहूँगा।

ॐ शान्तिमय

■ **सेवा में, ज्ञान प्रकाश**

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री समाधिमग्न देवाय नमः

(५ फरवरी २०१० में पूजनीय ब्रह्मलीन बहन जी की श्रद्धाञ्जलि में लिखी गई लेखनी प्रेषित)

श्रीमद्भगवतगीता के द्वितीय अध्याय के ४७ में श्लोक में कहा गया है कि– **''तेरा कर्म करनें में ही अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं। इसलिए तू कर्मो के फल का हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो।''** अर्थात्

तुमको न तो कर्मो के फल का हेतु बनना चाहिये और न ही कर्म न करने में ही आसक्त होना चाहिए।

गीता के इस ''निष्काम कर्म'' के भाव को जीवन में उतार कर ॐ आनन्दमय प्रभु जी के बतलाये हुए महामंत्र ''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'' का जाप पिछले डेढ़ साल से, जब से इस आश्रम के सम्पर्क में आनन्दमय ओम प्रकाश जी भगवन् की प्रेरणा से आया, तब से कर रहा हूँ और इन डेढ़ सालों में मुझे सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक तीनों तरफ से ही इतना लाभ मिला है कि जितनी आशा न थी। इस आश्रम में जुड़कर मेरा जीवन सरल, सुबोध और साधनायुक्त बन गया है।

अन्तत: मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहूँगा कि इस महामंत्र के बारम्बार जपने से सारे विपदाओं का अंत स्वत: ही हो जाता है, किसी अन्य उपाय की आवश्यकता नहीं पड़ती।

परम् पूजनीय छोटी बहन जी के पावन चरणों में श्रद्धा-सुमन पुष्पाञ्जली और शत्-शत् नमन् ।

–ॐ शान्तिमय

■ **नन्द लाल सिंह,**
संपादक-तख़्तोताज (हिन्दी मासिक पत्रिका)

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

श्री भगवत् स्वरूप श्री प्रेमियों,

सुख-दु:ख, लाभ-हानि, जय-पराजय, मान-अपमान, अनुकूलता-प्रतिकूलता, स्तुति-निन्दा, इन वस्तुओं की प्राप्ति स्वयं मनुष्य अपने कर्म द्वारा करता है। कर्म से ही प्रारब्ध अर्थात् भाग्य बनता है। प्रत्येक मानव अपनी इच्छानुसार कर्म करने में स्वतंत्र है और किये हुये कर्मों का फल भोगने में परतंत्र। मानव जैसा कर्म करता है अर्थात् जैसा बीज बोता है न्यायकारी श्री प्रभु माली के सहज उसी के बीज रूप कर्म का फल विशाल करके दे रहे हैं यहीं नहीं कि इस जन्म में उसका कर्म फल भोग समाप्त हो जाता है अपितु मनुष्य जन्म में किये हुए कर्मों का फल बहुत जन्मों तक मिलता है। जैसे हम दिवाल पर गेंद मारते हैं तो वह उल्टी हमारे पास वापिस आती है। इसी प्रकार जैसा हम कर्म करते हैं उन्हीं का फल सैकड़ों गुना करके प्राप्ति होती है। अब यह प्रत्येक मानव की इच्छा पर है कि वह अपनी इच्छानुसार कर्म करे फिर भी बीज रूप से कुछ सूत्र नीचे दिये जाते हैं:–

विश्व के प्राणीमात्र को सुखी रखने की भावना से महान सुख की प्राप्ति होती है। सज्जनों को किंचित भी सुख पहुँचाने से महान सुख की प्राप्ति होती है।

किसी भी प्राणीमात्र को किंचित भी दु:ख पहुँचाने की भावना मात्र करने से महान दु:ख की प्राप्ति होती है।

यदि मानव इन ऊपर बताये हुये सुख–दु:ख, लाभ-हानि, जय-पराजय, मान-अपमान, अनुकूलता-प्रतिकूलता और स्तुति-निन्दा, इनसे बचना चाहे तो गुणातीत महापुरुषों की शरण में श्रद्धा पूर्वक चला जाय। उनके पास जाने से यह ऊपर बतायी हुयी कोई भी वस्तु नहीं मिलेगी। वहाँ अखण्ड आनन्द, अपार शान्ति, समता-सन्तोष एवं पूर्ण शान्ति का राज्य है।

जब तक मनुष्य की ममता, आसक्ति नाशवान, क्षणभंगुर राजसी प्रेमी पदार्थों में रहती है तब तक दु:ख, प्रतिकूलता, निन्दा, अपमान मिलता ही रहेगा क्योंकि उसका प्रेम क्षणभंगुर नाशवान प्रेमी पदार्थों में है वही प्रेम जैसे ही पूर्ण आनन्द-शान्ति की प्रतिमा महापुरुषों में हो जाता है वैसे ही वह सम्पूर्ण दु:खों से छुटकारा पाकर आनन्द और शान्ति पा लेता है। यह निश्चित सिद्धान्त है। जैसे एक सर्दी से ठिठुरता हुआ मनुष्य सूर्य की धूप में आ जाता है तो उसका शीत का कष्ट समाप्त हो जाता है।

या जैसे आँधी, तूफान और मूसलाधार वर्षा के पानी से व्यथित कोई भी मनुष्य एक अच्छे बने पक्के मकान में चला जाता है तो उसकी विपत्ति दूर होकर शान्ति मिलती है। महापुरुषों की शरण ऐसा ही मकान है जहाँ किसी प्रकार का दु:ख, अशान्ति नहीं आ सकती। इसलिये बताया:–

रोग, शोक, भय, दु:ख विपदा का बादल घिर जब आता है।
शरण ग्रहण से महापुरुषों की बिन बरसे उड़ जाता।

महापुरुषों की शरण ग्रहण करने का अर्थ है उनके

आदेशों का, उनकी बतलाई हुयी मर्यादा का पालन करना।

जैसे एक बीमार मनुष्य यदि स्वस्थ एवं आरोग्य होना चाहे तो आवश्यक है कि स्वस्थ होने के लिये डाक्टर के आदेशों का पालन करें, उसमें श्रद्धा रखे कि यह मुझे ठीक कर देगा। कड़वी से कड़वी औषधि खाने में भी न हिचके। यहाँ तक कि शीघ्र से शीघ्र अच्छा होने के लिए बड़े से बड़े आपरेशन और इंजेक्शन से भी न हिचके। यदि डाक्टर के आदेशों में तो विश्वास है नहीं और रोगी स्वयं इलाज जानता नहीं तो वह ठीक नहीं हो सकता।

इसलिए महापुरुषों में श्रद्धा करें और मन के प्रतिकूल लगने वाली परिस्थितियों को आपरेशन और इंजेक्शन को कल्याण हेतु समझें । ॐ शान्तिमय

■ **राजेन्द्र**

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

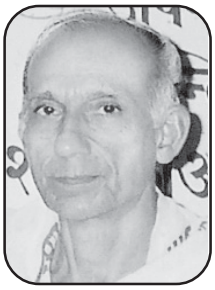

श्री गीता कहती है अध्याय सात के २७वें श्लोक में कि– ''**संसार में इच्छा और द्वेष (काम-क्रोध) से उत्पन्न सुख-दुःखादि द्वन्द्व-रूप मोह से सम्पूर्ण प्राणी अत्यन्त अज्ञता को प्राप्त हो रहे हैं।**'' आज से ५००० वर्ष पूर्व मानव की स्थिति कैसी थी उसका योगेश्वर भगवान ने वर्णन किया, फिर वर्तमान में जैसी स्थिति है, इस विषय में तो क्या कहा जाये। ऐसी विषम परिस्थिति में ब्रह्मवेत्ता ध्यान-समाधि मग्न महापुरुषों का संयोग प्राप्त हो जाना, दुर्लभ भाग्य का विषय है जो अनुभवी ब्रह्मवेत्ताओं का कथन है–

सुत-दारा अरु लक्ष्मी,
पापी के भी होय ।।
संत समागम और
प्रभु कथा दुर्लभ जग में दोऊ।।

इस कथन से अनुभव हुआ कि सुत-दारा और लक्ष्मी पापी की सम्पत्ति है। एवं संत समागम और प्रभु कथा यह धर्मात्मा की सम्पत्ति है।

दुर्लभ मानव जीनव, कितनी अमूल्य शक्तियों के साथ मिलता है, इसकी कल्पना क्षणिक, नाशवान, अनित्य भौतिक शक्तियों से नहीं की जा सकती। हाँ, इस जीवन में ही उस शक्ति-सम्पन्न अनन्त सुख और आनन्द की प्राप्ति की जा सकती है, और प्राप्ति कर लेने के पश्चात् फिर कुछ प्राप्त करने की समस्त इच्छायें सदा के लिए शान्त हो जाती हैं, हर समय, हर परिस्थितियों में, सम-शान्त रहते हुये, भगवत आनन्द की, मग्नता बनी रहती है। ऐसी स्थिति तत्त्व-ज्ञानी महा पुरुषों के समागम से ही प्राप्त होती है।

ॐ आनन्दमय भगवान की कृपा से यह दिव्य-शक्तियों का समागम मुझे बाल्यावस्था से ही हो गया, जिससे जीवन में उत्तरोत्तर हर प्रकार की उन्नति के साथ-साथ बहुत प्रकार की जिज्ञासाओं का समाधान स्वाभाविक होता गया, एवं भगवान के प्रति श्रद्धा प्रेम-भावना दृढ़ होती गई, त्याग-वैराग्य की वृत्तियों से साधन स्थिर होता गया।

जीवन में अनेकों घटनाओं में, विषमताओं में आश्चर्य जनक अद्भुत चमत्कारी अनुभव हुये, जैसे की धार्मिक ग्रन्थों में पठन-श्रवण में आते रहते हैं। अद्भुत मानव-जीवन के निर्माता सर्वज्ञ-सर्वशक्तिमान ॐ आनन्दमय भगवान मानव योनि के अतिरिक्त अन्य अनन्त योनियों का निर्माण कर उनका संचालन भी स्वयं ही कर रहे हैं। सूक्ष्म से सूक्ष्म जीव हो या बड़े से बड़ा जीव हो, उसके मानसिक मनोवेग के अनुरूप ही सारी व्यवस्था हो रही है, जो गोपनीय और गम्भीरता का विषय है और मानव की सोच के बाहर का विषय है।

बीज को अंकुरित होने के लिये जल-वायु-भूमि-वातावरण अनुकूल मिल जाये, फिर शीघ्र अंकुरित हो, दिन दुगुना, रात चौगुना बढ़ने लगता है। दयामय प्रभु पिता जी कि कृपा से भगवत-परायण जीवन-यात्रा यापन में मुझमें अद्भुत चमत्कारी अनुभव होने के साथ ही साथ

दिमागी-शान्ति और आत्म बल की वृद्धि होती गई। ७०वर्ष की लम्बी जीवन यात्रा में प्रभु कृपा शक्ति के बल से अनेकों एक से बढकर एक प्रभावशाली अनुभव हुये। हाँ अब तक जो सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान ॐ आनन्दमय भगवान ने जो-जो अपनी सर्वज्ञकारी चमत्कारी शक्ति का अनुभव कराया, उन सबसे अधिक महत्वपूर्ण चमत्कार का अनुभव १३ नवम्बर २०१० मध्याह्न १२ बजे का था। जीवन में सुनते-पढ़ते आये हैं कि पल में प्रलय होगी। और करुना-कन्द भगवान भक्तों की मर्मवेदना भरी पुकार में आते हैं। इन सब बातों का १३ नवम्बर को आँखों के सामने प्रत्यक्ष सत्य का अनुभव हो गया।

आश्रम का वाहन २० अक्टूबर, २००९ में इलाहाबाद से सत्संगों के कार्य-कर्मों में शामिल होने के लिए रवाना हुआ। वाहन में ७ स्वरूपों की सत्संग-मंडली थी, जिसमें छोटी बड़ी उम्र के छात्र-छात्रायें भी थी। वाहन कानपुर, भिण्ड, दिल्ली, सहारनपुर, हरद्वार, बिजनौर, मुरादाबाद, गढ़मुक्तेश्वर आदि के सभी कार्यकर्मों को पूरा कर अन्तिम कार्यक्रम शिकोहाबाद के लिये मुरादाबाद से प्रात:काल रवाना हुआ।

अन्तिम सत्संग के कार्य-कर्मों में शामिल होने की शुभ इच्छा से निश्चिन्तता पूर्वक वाहन में स्मरण-ध्यान करते हुये प्रेम-प्रसन्नता में मग्न सात-स्वरूपों को क्या पता था कि प्रलय होने वाली है, वाहन ने अभी आधा मार्ग ही तय किया था, मध्याह्न १२बजे का समय हो चुका था, यकाएक प्रलय का दृश्य आ गया।

७०-७५ कि.मी. की रफ्तार से दौड़ता हुआ वाहन, जिस दिशा से आ रहा था उसी दिशा की तरफ वाहन एकदम नाचकर भयंकर आवाज के मध्य में वाहन में उपस्थित किसी भक्त की करुणापूर्ण आवाज– **''हे भगवान! बचाओ...''** के साथ हाइवे की सड़क पर एकदम उलट कर एक तरफ का बाया हिस्सा जमीन के साथ और दाहिना ऊपर आकाश में खड़ा हो गया। सम्भव है तेज-स्पीड को कन्ट्रोल में लाने के लिये ही प्रभु पिता जी ने उसको इस प्रकार नचा कर पलट दिया। वाहन के मुख्य शीशे के साथ-साथ कई शीशे चूर-चूर हो सड़क पर बिछ गये।

वाहन में बैठे हुये स्वरूपों में से ३ तो बिल्कुल स्वस्थ्य थे, ४ को हल्की चोट आई। मानो भगवान ने सभी को अपनी गोद में ले लिया था। देखते-देखते जनता इकट्ठा हो गई साधारण प्रयास से अन्दर से सभी स्वरूप बाहर आ गये। दो जवान छात्रों ने अपने बाइक पर जख्मी लोगों को बैठाकर ३ कि.मी. दूर गाँव के डाक्टर से उपचार कराकर घटनास्थल पर पहुँचा गये। एकत्रित जनता जनार्दन परम-पिता-परमात्मा को धन्यवाद दे रही थी। हे प्रभो! आपने ही रक्षा की अन्यथा इस भयंकर दुर्घटना में कई मृत्यु शय्या पर सदा के लिये सो जाते।

वाहन अपनी उसी स्थिति में सायंकाल ६बजे तक विश्राम करता रहा, ताज्जुब की बात तो यह थी कि किसी तरह साधन से वाहन को खड़ा किया गया, खड़ा कर स्टार्ट करते ही वह भी अपनी तीव्र गर्जना से स्टार्ट हो गया।

छाताधारी ॐ आनन्दमय परमात्मा ने पूरी सहायता की, यद्यपि घनघोर मेघ छाये थे यदि वर्षा हो जाती, तो परिस्थिति अति गम्भीर हो जाती। परन्तु प्रभु कृपा से उस घटनास्थल से ६बजे तक रवाना होने पर भी आकाशी मौसम से कोई विक्षेपी स्थिति पैदा नहीं हुई। सभी मानसिक स्थिति से सम-शान्त-प्रसन्न थे।

यह सभी के लिये जीवन में सबसे बड़ा चमत्कार का अनुभव हुआ कि परम-पिता परमात्मा सर्वत्र, सब रूपों में और हमारे हृदय में व्यापक रूप से विराजमान हैं। और वही हृदय को सच्ची-प्रेम की पुकार से पल में प्रकट हो जाते हैं। परन्तु पल में प्रकट करने की वह आह होने की आवश्यकता है, आह में गजेन्द्र के सामने आये, द्रौपदी की आह में आये और अनेक दृष्टान्त हैं और अभी भी आये।

आज वह हाय कहाँ? आज की आह है कि, आह धन में, आह भवन-भूमि में, आह पद-कुर्सी में, आह मान-सम्मान में, आह सन्तान-परिवार में है।

आज मनुष्य फल-फूल, जल, चन्दन-तिलक चढ़ाकर भगवान को मूर्ख बनाकर ठगना चाहता है, परन्तु वह बुद्धिमानों के बुद्धिमान है, वह ठगने वालों की अहं को चूर-चूर करने वाले है। शास्त्रों में अनेकों प्रमाण है, रावण ने महात्मा की वेश-भूषा बनाकर नारी हरण के लिये छल, छिद्र, कपट का व्यवहार किया सिद्धि भी मिल गई, परन्तु परिणाम क्या हुआ सारी लंका में हा..हाकार हो गया अन्त में अपने सहित सारी लंका को विध्वंस किया।

इस प्रकार छल-कपट, छिद्र कर मनुष्य-मनुष्य को धोखा दे सकता है, भगवान को नहीं।

भगवान को धोखा देने के प्रयास वालों का सर्वनाश ही होता है। अत: दिमागी रोग दमनकारी, अन्त:करण को शुद्ध पवित्र बनाने वाले वैदिक सनातन ब्रह्मवाची महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का सदैव स्मरण-ध्यान करते रहना चाहिये।

ॐ शान्तिमय ■ **आनन्द किरन जी भगवन**

हमारा आदर्श श्री विश्वशान्ति आश्रम

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

काम क्रोध का नाश हो ।
प्रेम प्रसन्नता का विकास हो ।।
हर्ष शोक का त्याग हो ।
समता सन्तोष की प्राप्ति हो ।।

यह संदेश है, श्री विश्वशान्ति आश्रम का। जहाँ के भक्तों में काम-क्रोध का अभाव है। जिन्होंने हर्ष शोक का त्याग किया है, जो सदा प्रेम प्रसन्नता से अपना जीवन व्यतीत करते हैं। फलस्वरूप गीता के समत्व बुद्धि योग को प्राप्त होकर जीवन में सन्तोष को धारण किया है, उनका जीवन समता-सम्पन्न बन गया है। वे बात-बात में उत्तेजित नहीं होते हैं, प्रतिकूलताओं में विचलित नहीं होते हैं। सौम्य स्वभाव है सबका। यह प्रभाव है, श्री विश्वशान्ति आश्रम के दिव्य ज्ञान का। यहाँ पर दिनचर्या के प्रत्येक क्षण में जीने की कला बताई गयी है। यहाँ का साधन अपनाने वाला प्रेमी भक्त, प्रभु पिता की सच्ची प्रेम भक्ति में मग्न रहता है।

सच्ची प्रेम भक्ति में २१ सूत्र हैं, जिनसे आश्रम में प्रात:कालीन दिव्य सत्संग का प्रारम्भ होता है। इन २१ सूत्रों में प्रथम सात सूत्रों में भगवान से प्रार्थना की गयी है। प्रार्थना सिर्फ अपने लिये ही नहीं, वरन सम्पूर्ण विश्व के हित में की गयी है। अगले सात सूत्रों में सर्वशक्तिमान प्रभु पिता के आदेश हैं। आदेश के साथ-साथ आश्वासन भी है। सर्वशक्तिमान भगवान के आश्वासन पर यदि सभी प्रेमी भक्त विश्वास कर लें तो मनुष्य कभी चिन्तित नहीं हो सकता, कभी दु:खी नहीं हो सकता। **''हे प्रेमियों ! श्रद्धा प्रेम विश्वास करो, मैं तुम्हारा परम हितैषी हूँ।''**

प्रभु पिता जिसके परम हितैषी हों, उसके दु:खी और अशान्त रहने का प्रश्न ही नहीं उठता। जैसे आश्वासन और जैसे आदेश हैं, उसी के अनुसार अगले सात सूत्रों में प्रेमी भक्त अपने इष्टदेव प्रभु के सम्मुख प्रतिज्ञा करते हैं। तत्पश्चात् ध्यानयोग का अभ्यास कराया जाता है, इसके बाद सब प्रेमी भक्त अपने-अपने दैनिक कार्यों में और कर्तव्य कर्मों में व्यस्त हो जाते हैं।

भजनों के एक-एक शब्द में सुखी जीवन जीने की सही विधि बताई गयी है। **''ॐ आनन्दमय आनन्दमय गाते चलो, काम करते चलो, नाम जपते चलो। तन से सेवा करो, मन से नाम रटो, प्रभु से प्रेम करो प्रभु का ध्यान करो''।**

न कुछ त्यागना है और न कुछ छोड़ना है। सभी को कर्तव्य कर्म करते रहना है और साथ-साथ महामंत्र ॐ आनन्दमय, ॐ शान्तिमय का जप करते चलना है। यही विधि है स्वकर्म, दक्षता पूर्वक, करने की।

सायंकाल पुन: सभी प्रेमी अपने-अपने निवास स्थानों

पर अथवा आश्रम में, जैसी जिसकी सुविधा होती है, निष्काम भावों की जागृति के उद्देश्य से २१ सूत्रों को उच्चारण करते हैं और तदनुसार अपना व्यवहार बनाने की चेष्टा करते हैं।

श्री विश्वशान्ति आश्रम एक ऐसी आदर्श संस्था है, जहाँ पर उत्तम गुण, ज्ञान, भाव, आचरणों को ही महत्त्व दिया जाता है। मन, वाणी, शरीर से किसी को भी कभी किंचित मात्र भी कष्ट न पहुँचाना, इस आश्रम का व्यवहारिक ज्ञान है। इस प्रकार के उत्तम आचरणों को नि:स्वार्थ भाव से करने पर अन्त:करण की शुद्धि हो जाती है और भक्तवत्सल भगवान की प्राप्ति हो जाती है।

ऐसे भक्तों को अत्यधिक सुख की प्राप्ति होती है, अक्षय आनन्द की प्राप्ति होती है।

ॐ शान्तिमय

■ **आनन्दलता आनन्दमय**

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय श्री विश्वशान्ति आश्रम का एक नवीन एवं अद्भुत प्रयास

प्रचलित कथा के अनुसार श्री कृष्ण भगवान ने जिस समय अर्जुन को गीता ज्ञान सुनाया था उस समय भी उसका उद्देश्य विश्व-शान्ति ही थी। मन के विकारों के वशीभूत होकर अर्जुन अपने कर्तव्य से विमुख हो रहे थे। विश्व-शान्ति हेतु उस समय युद्ध आवश्यक था। युद्ध के बाद ही शान्ति स्थापित होने की संभावना थी। महाभारत के युद्ध में धर्म के समक्ष अधर्म खड़ा था। उस युद्ध में शत्रु को पहचानना कठिन नहीं था, बल्कि कठिनाई थी मात्र अर्जुन का मोहग्रस्त हो जाना। जिसका निवारण श्री भगवान ने गीता-ज्ञान द्वारा किया, परिणामस्वरूप अर्जुन निष्काम भाव से कर्म में प्रवृत्त हुआ।

शान्ति की स्थापना के लिये महाभारत का धर्म-युद्ध उस समय की मांग थी जो गीताज्ञान से ही संभव हो पाया। उस युद्ध में शत्रु सामने था जिसका वध तीर-तलवार से किया जा सकता था किन्तु आज वही कामी, क्रोधी, लोभी शत्रु हमारे मन में घुस कर बैठा है जो आपसी कलह का मुख्य कारण है। उसका शिरच्छेदन तीर-तलवार से नहीं किया जा सकता। आज हमें अपने मन में छुपे इन शत्रु सदृश्य विकारों का विनाश करने के लिये श्री विश्वशान्ति आश्रम के ज्ञान की जो (भगवत् गीता शास्त्र द्वारा प्रमाणित है) अति आवश्यक है।

आज हमें किसी अन्य से नहीं, वरन् स्वयं के ही विकारों जैसे– काम, क्रोध, राग, द्वेष, ईर्ष्या, अहंकार आदि से संघर्ष करना है। इस संग्राम में विजयी होने के लिये पुन: हमें गीता-ज्ञान की आवश्यकता है।

हमें स्वयं के लिये, स्वयं से संग्राम करना है। अर्थात् अपना कल्याण स्वयं करना है। इसके लिये आवश्यक है कि गुरुदेव के द्वारा प्रदान किये हुये गुण-ज्ञान रुपी ज्ञानास्त्रों से सुसज्जित होकर संसार के कर्म-क्षेत्र में विचरण करें। जो व्यक्ति अपने अंतर में छुपे दुर्गुण-दुराचारों को ही अपना वैरी समझता है, अन्य किसी को नहीं और इसका नाश करने के लिए सदैव तत्पर रहता है, वही सच्चा विजयी है। हमें अपनी आसुरी प्रवृत्तियों से निरंतर संग्राम-रत रहना है तभी आत्मोन्नति का पथ प्रशस्त होगा।

इस सात्विक संग्राम में हमारे सारथी ब्रह्मवेत्ता, तत्त्वदर्शी श्री ॐ आनन्दमय भगवान बनें, इसके लिये आवश्यक है कि महापुरुषों द्वारा बतलाये हुये कल्याणकारी मार्ग का अनुशरण एवं उनकी हितकारी आज्ञाओं का पालन अनन्य भाव से भक्त अर्जुन की भाँति करें। ऐसा करने पर स्वयं पर स्वयं की विजय सुनिश्चित है। जीते हुये मन बुद्धि वाले मनुष्य के लिये संसार में कोई शत्रु रह ही नहीं जाता।

सांसारिक संग्राम मनुष्य की अधोगति का कारण है जबकि मन-इन्द्रियों को वश में करने वाले, दिव्य-समर में विजयी पुरष की बाँहें ॐ आनन्दमय भगवान स्वयं पकड़ते है। अपने मन-बुद्धि को जीतने वाला परम पद को प्राप्त करता है, यही सात्विक विधान हैं।

श्री विश्व-शान्ति आश्रम हमें वह दिव्य-ज्ञान के अस्त्र-शस्त्र सरल हिन्दी भाषा में अठारह अलौकिक ग्रन्थों के रूप में प्रदान करता है, जो स्वयं में छुपे कामादि शत्रुओं का विनाश करने में पूर्णत: सक्षम हैं। इन ग्रन्थों के गुण-ज्ञान को धारण करने से ही मनुष्य का जीवन सुख शान्तिमय बनने का विधान है।

आज के परिपेक्ष्य में, श्रीमद्भगवत् गीता हमें लौह-अस्त्र के त्याग और ज्ञानास्त्र को धारण करने की प्रेरणा देती है। मनुष्य को अपने अन्दर छुपे दुर्योधन (काम,क्रोध,लोभ,मोह,अहंकार) वैरी का श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ के ज्ञानास्त्र से दमन करना है।

आज के शुभ दिवस पर ॐ आनन्दमय के इस दिव्य आदेश का हमें भक्त अर्जुन के सदृश्य मन, वचन और कर्म से पालन करना है। विश्व-शान्ति की स्थापना का सुगम मार्ग यही है। अज्ञान विमोहित कामनाओं से तपायमान, चिंतित, क्रोधित मनुष्यों के लिये श्री ईष्ट देव ॐ आनन्दमय भगवान का सर्वहितकारी आदेश निम्नवत् है।

''हे प्यारे प्रेमियों ! दु:ख, चिंता, कामना, क्रोध, ईर्ष्या और कलह मत करो, अपनी आठ इंद्रियों को वश में करते रहो।''

श्री विश्वशान्ति आश्रम के साधक भक्त अर्जुन की भाँति ॐ आनन्दमय प्रभु पिता पर पूर्ण श्रद्धा-विश्वास करके इस आदेश के अनुपालन में प्रवृत्त हैं।

ॐ शान्तिमय

■ **संगीता आनन्दमय**

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

श्री योगाचार्य समाधिमग्न गुरु भगवान शरणम्

वर्ष १९६७ में मैं उद्योग विभाग उत्तर प्रदेशीय सेवा में रूड़की में कार्यरत् था। जून १९६७ में श्री रामचरण मिश्रा जी राजकीय कार्य से मेरे घर पधारे उन्होंने सच्ची प्रेम भक्ति ग्रन्थ मुझे भेंट कर सत्संग कराया। सत्संग में बहुत आनन्द आया और तभी से श्री गुरु भगवान के साक्षात् दर्शन करने की तीव्र अभिलाषा मन में बैठ गई। इस अभिलाषा से मुझे इलाहाबाद जाना पड़ा। कम्पनी बाग में सामूहिक सत्संग में साक्षात् दर्शन लाभ प्राप्त हुआ। आँखे गुरु भगवान के मुखारविन्दु से हट नहीं पा रही थी और मन अत्यन्त हर्षित हो रहा था। ऐसा विलक्षण आनन्द पहले कभी नहीं प्राप्त हुआ था। मैं श्री रामचरण मिश्रा जी का जीवन पर्यन्त आभारी रहूँगा। श्री मिश्रा जी इस समय इस संसार में नहीं हैं लेकिन मैं उनका ऋणी हूँ। इस ऋण को उतारने का प्रयास निष्काम सेवा एवं प्रचार से करने की अभिलाषा करता हूँ।

मैं १९६७ से १९७२ तक रुड़की में कार्यरत रहा। इस दौरान पूज्यनीय डाक्टर साहब के साथ सत्संग का भी लाभ प्राप्त हुआ। एक बार पूज्य डाक्टर साहब ने लकड़ी का विग्रह स्टैण्ड (बड़ा) बनवाने के लिए कहा। मैं रुड़की रेलवे स्टेशन पर श्री विग्रह स्टैण्ड को रेल गाड़ी (सवारी) में चढ़ाने की जुगत में था गाड़ी में बहुत भीड़ थी। चिंता थी कि कैसे चढ़ाऊँ ? गाड़ी आने पर मैंने स्टैण्ड को चढ़ाने का प्रयास किया। साथी सवारियों ने पूछा यह क्या है मैंने बताया यह गुरु भगवान के श्री विग्रह का स्टैण्ड है यह कहते ही साथी यात्रीयों ने स्टैण्ड को हाथों हाथ उठाकर डिब्बे में सुरक्षित स्थान पर रख दिया। उस दिन से मन में दृढ़ विश्वास हो गया कि भगवान के कार्यों में कभी कोई बाधा नहीं आती। उस समय डाक्टर साहब पी.ए.सी सहारनपुर में तैनात थे।

वर्ष १९६७ से १९९६ (सेवा निवृत्ति) तक यदा-कदा सामुहिक सत्संग श्री विश्वशान्ति आश्रम, कनखल, हरिद्वार (राजस्थान वानप्रस्थ आश्रम) में सम्मिलित होकर लाभ उठाता रहा हूँ। इस दौरान पारिवारिक सामाजिक एवं राजकीय कार्य सम्बन्धित समस्याओं एवं बाधाओं से जूझना पड़ा, लेकिन दैनिक प्रार्थना (सच्ची प्रेम भक्ति) एवं गुरु स्मरण निरन्तर चलता रहा। ॐ आनन्दमय भगवान की कृपा से सभी समस्याओं का समुचित निदान हुआ। अब पारिवारिक जिम्मेदारियों से निवृत हो गया हूँ। गुरु भगवान का ध्यान लगता है। मन शान्त रहता है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र का प्रभाव दूरगामी है और मनुष्य जीवन को सार्थक बनाने वाला है। आस्था विश्वास के साथ निरन्तर स्मरण जाप से मेरे जीवन में जो त्रुटियां थी वे दूर हुई हैं। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का पंथ ही ऐसा है जिसमें सब कोई सुविधा, सुखमय जीवन यापन कर सकते हैं और कर रहे हैं। विश्वशान्ति आश्रम का उद्देश्य आध्यात्मिक सम्पत्ति बनाने का है जिसका जीता जागता प्रमाण है आश्रम की स्थापना के ५५-६० वर्षो बाद भी केवल झूँसी आश्रम का लक्ष्य मानव समुदाय द्वारा निष्काम सेवा, पूजा सिखाने व कराने का है जो किसी और आश्रम, संस्था का मेरे ज्ञान में नहीं है। संसार में अधिकतर आध्यात्मिक केन्द्र आडम्बरों एवं स्वार्थ से परिपूर्ण हैं एवं मठाधीश परम्परा के अनुयायी हैं। इसी कारण उनके विरुद्ध आरोप-प्रत्यारोप लगते रहते हैं। हमारा श्री विश्वशान्ति आश्रम ऐसी सभी सम्भावनाओं से परे है एवं उत्कृष्ट निष्काम सेवा का प्रतीक है। यहाँ नाम दान की अपेक्षा ज्ञानदान देने का विधान है जो सार्वजनिक है।

श्री गुरुचरणों में सदैव स्थान ग्रहण करने की कामना सहित।

■ **सेवक- रामचन्द्र आनन्दमय**
१७६ रामबाग, सूरजकुण्ड रोड, मेरठ।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री गुरु भगवान शरणम्
ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

श्री ॐ आनन्दमय भगवान तो अकारण ही कृपा करने वाले हैं। वह समय-समय पर अपनी कृपा-शक्ति का परिचय देते रहते हैं। ऐसी ही कृपा इस बार श्री आनन्दमय भगवान की मुझ निमित्तमात्र पर भी हुई। उन्होंने मुझे इस साल इलाहाबाद (जनवरी २०१०) में कुंभ मेले में प्रचार के लिए आने का सुअवसर प्रदान किया।

पहले तो आने के लिए मुझे कुछ हिचकिचाहट हुई, ठंड के कारण। मैं यह सोचने लगा कि श्री आश्रम में तो सब बढ़िया व्यवस्था है, किन्तु कुम्भ में बहुत समस्या आ सकती है। जैसे कि नहाने-धोने की, खाने-पीने की और सोने की। जमीन पर सोना पड़ेगा। परन्तु भगवन यकीन करना कि ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। वहाँ पहुँचने के बाद आनन्द और शान्ति का ही आभास होने लगा। ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी ने बहुत शक्ति प्रदान करी।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का प्रचार कार्य करते हुये मानसिक बल एवं आत्मबल की जागृति बनी रही। प्रचार के समय ऐसा अनुभव हुआ जैसे स्वयं प्रभु पिताजी मेरे संग खड़े हैं और मुझे प्रोत्साहित कर रहे हैं। मेरे द्वारा ज्ञान का उच्चारण करवा रहे हैं। कुछ नवीन जिज्ञासु सत्संग के श्रद्धालु हो रहे हैं। प्रचार का आनन्द सबसे विलक्षण था। सारा दिन मैं और अन्य भगवत भक्त प्रचार सेवा करने के पश्चात् रात्रि में भजन, ध्यान और सत्संग के उपरान्त प्रसाद पा करके सो जाते थे। और भगवन विश्वास करें कि एक दिन भी ऐसा प्रतीत नहीं हुआ कि मैं जमीन पर सोया हूँ। ऐसा आभास होता था कि प्रभु पिताजी अपनी गोद में लिए सुला रहे हों। आठ दिन कैसे बीत गए पता ही नहीं चला।

अब मैं समयानुसार प्रचार के लिए जरूर जाया करुँगा। क्योंकि जो आनन्द, शान्ति और प्रभु जी की शक्ति मैंने इस बार महसूस की, पहले कभी नहीं की। प्रचार में ही सच्चा आनन्द है। **ॐ शान्तिमय**

■ **दासानुदास- रोहित माटा, नई दिल्ली।**

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री ध्यानाचार्य देवाय नमः

सादर चरणस्पर्श,

भगवन मैं मेरठ की एक प्राइवेट संस्था में बी.एससी. माइक्रोबायलॉजी का छात्र हूँ। मैं इसी संस्था के छात्रावास में रह रहा हूँ। मैं प्रतिदिन मंत्र जाप करता हूँ मुझ पर भगवान की बड़ी कृपा है। मैंने अपने छात्रावास के कमरे में प्रभुपिता जी का विग्रह लगा रखा है। एक दिन मेरे एक सीनियर दिल्ली एम्स हास्पिटल से अपनी पारीक्षा देने के लिए आये और छात्रावास में दूसरे लड़कों के साथ रहने लगे वह वहाँ कुछ दिन रुके और वहाँ से परेशान होकर चले गये, फिर कुछ दिन बाद मैं उन्हें अपने कमरे में लाया मेरे कमरे में आते ही उन्होंने प्रभुपिता जी के दर्शन किये, कमरे में आते ही वह बोले कि इस कमरे में तो मुझे बड़ी शान्ति व ऊर्जा का अनुभव हो रहा है और एक तरह का आनन्द महसूस हो रहा है। तभी उन्होंने प्रभु पिता जी के बारे में पूछा तो मैंने उन्हें आश्रम का पता बताया इसके बाद वो कहने लगे कि मैं तो अब इसी कमरे में रहूँगा, और सारी परीक्षा यहाँ से ही दूँगा, यह सब प्रभुपिता की कृपा है। जिसके कारण उन्हें उस कमरे में अपार आनन्द-शान्ति का अनुभव हुआ।

मेरा कमरा थोड़ा अन्दर की तरफ सबसे अलग है। जिसके कारण वहाँ सभी छात्र कहते हैं कि वहाँ भूत-परेत का चक्कर है। कुछ छात्रों (लोगों) के साथ वहाँ कुछ घटनायें घट चुकी है। तो इसकी वजह से सभी वहाँ मुझे सोने के लिए मना करते हैं। कहते हैं कि इस कमरे में अकेला मत सोना यहाँ भूत-परेत रहते हैं, लेकिन मुझे उसी कमरे में नींद आती है। और डर भी नहीं लगता मेरे अलावा कोई उस कमरे में जाता भी नहीं है। सभी छात्र डरते हैं। और मैं यदि किसी अन्य कमरे में सोना चाहता हूँ तो मुझे नींद ही नहीं आती है। और आती है तो डरावने सपने दिखकर आँख खुल जाती है। और मैं रात ही को अपने रुम में वापस आ जाता हूँ वहाँ मुझे ऐसा कोई अनुभव नहीं होता और नींद भी अच्छी आती है। यह सब ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी की कृपा है। जिससे मैं उस कमरे में शान्तिपूर्वक रह रहा हूँ।

■ **भगवन आपका सेवक**

छात्र सौरभ कुमार, मेरठ

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री समाधिमग्न महापुरुष देवाय नमः

भगवन, ॐ आनन्दमय प्रभुपिता जी की कृपा से भगवान के विधान में लगे हुए एक प्रेमी भक्त श्री दयाराम जी ने भगवान के विधान के ग्रन्थ दिये जिनका हमने अध्ययन किया कुछ दिनों के पश्चात जून माह में हरिद्वार में सत्संग होता था उस समय हमारी छोटी लड़की (शगुन) को हरिद्वार में उसके सिर के बाल उतरवाने के लिए गये थे तब सत्संग प्रेमियों ने हमसे कहा कि आप आश्रम में जरूर आना और सबेरे के समय में आना, जिससे आपको सत्संग मिल जाये फिर बोले कि प्रभुपिता जी के दर्शन कई-कई दिन तक नहीं होते। सबेरे जब हरिद्वार के लिए तैयार हो गये तो पहले आश्रम जाने का मन बनाया फिर बाकी कार्य करगें। जब हम आश्रम पहुँचे तो सत्संग चल रहा था तथा छोटी बहन जी ज्ञान उच्चारण कर रही थीं और ॐ आनन्दमय प्रभुपिता जी कृपा से उस दिन प्रभुपिता जी ध्यानवस्था में सत्संग में बैठे थे प्रभुपिता जी के हम सबको दर्शन हुए और सत्संग सुना तब से आज तक भगवान के विधान का मंत्र का जाप व सच्ची प्रेम

भक्ति का पाठ कर रहे हैं। पहले कभी-कभी क्रोध आता था अब ॐ आनन्दमय भगवान की कृपा से क्रोध बहुत कम हो गया मन प्रसन्न व शान्ति बनाये रखते हैं।

जून माह २०१० को बिजनौर में गाँव आसपुर नवादा में जून माह का सत्संग हुआ उससे सभी स्थानों व जिलों के प्रेमी भगवन पधारे और सत्संग हुआ उसमें ॐ आनन्दमय भगवान जी की ऐसी कृपा बनी रही कि सेवा करने में सेवाकर्ताओं को आलस्य व शरीर में थकावट बिलकुल नहीं हुई।

यह सब ॐ आनन्दमय भगवान जी की कृपा ही सत्संग के पहले गर्मी व तपन बहुत ज्यादा थी लू चल रही थी सत्संग के समय में ॐ आनन्दमय भगवान जी ने मौसम ठण्डा बना दिया और ६ दिन तक सत्संग का कार्य चलता रहा तब से साधन भी बढ़ गया, बच्चे भी भजन ध्यान कर रहे हैं। यह ॐ आनन्दमय प्रभुपिता जी की कृपा है। ॐ शान्तिमय

■ **बिजेन्द्र जी भगवन, बिजनौर**

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

सर्वस्व रोगों के विनाशक, कर्म योगाचार्य ध्यानयोगाचार्य, विधानाचार्य ॐ श्री आनन्दमय देव शरणम् ।

आज के भौतिक युग में जहाँ चारो ओर राग-द्वेष, कलह, क्रोध, दु:ख, चिन्ता आदि से हम लोग पीड़ित हैं वहाँ एक ऐसा दिव्य वातावरण भी है जहाँ सर्वशक्तिमान ॐ आनन्दमय भगवान की दया से और ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र से परमसुख, परमशान्ति और परमआनन्द प्राप्त होता है। संसार के सारे मंत्र और जाप के बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता कि कितना आत्म सुख आत्म शान्ति प्रदान कर सकता है लेकिन ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का यह महामंत्र सर्व मानस रोग विनाशक और दिमागी संकटहारी अवश्य है जिसे हम निश्चित रूप से महसूस कर सकते हैं, जैसे एक गूंगा व्यक्ति मीठा फल खा कर उसके स्वाद के बारे में कुछ बोल नहीं सकता लेकिन अपने अन्त:करण में गद्‌गद् होकर आनन्द का अनुभव करता है।

मैं अपने भगवन श्री दीनानाथ जी के चरणों में बार-बार नमन करता हूँ जिन्होंने मुझे श्री विश्वशान्ति आश्रम जैसे देवतुल्य स्थान का दर्शन कराने का सौभाग्य प्राप्त कराया। जहाँ श्री विश्वशान्ति ग्रंथ और महा पुराणों का जो दिव्य ज्ञान है वह बहुत ही अनोखा व विलक्षण है जिसका इस संसार में कोई मुकाबला नहीं है।

ॐ आनन्दमय प्रभुपिता जी की कृपा से जो दिव्य ज्ञान मुझे प्राप्त हुआ ऐसा लगता है कि जैसे साक्षात नारायण प्रभु ने ही दिया हो। रोग, शोक, भय, दु:ख , चिन्ता में जब हम घिर जाते हैं तो ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र के जाप से तुरन्त क्षणभर में यह सब दूर हो जाता है।

हमारे कार्यालय में कार्य की शुरुआत ही ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय के महामंत्र से ही होती है। चाहे जितना अधिक कार्य हो या कठिन बड़ी सरलता से समाप्त हो जाता है। यह महामंत्र के जाप का प्रभाव देखकर में जहाँ रहता हूँ वहाँ अगल-बगल के लोग भी प्रभावित होकर यह महामंत्र जाप करने लगे हैं। और खुशी की अनुभूति कर रहे हैं जिनमें पं. दिनेश कुमार मिश्रा जी का नाम प्रमुख है और वे भी आश्रम से जुड़ गये हैं।

हमारे भगवन श्री दीनानाथ जी रोज शाम को हम लोगों को गीता का पाठ और आश्रम का कैसेट अवश्य ही सुनाते हैं जिसे सुनकर हमारा शरीर व मन बड़ा ही ऊर्जावान हो जाता है और उसके अमृतपान से साहस, समता, भक्ति, शान्ति, कर्म और धर्म आदि के दैवीय गुण विकसित होते हैं जिससे हमारे अन्दर अधर्म, शोषण और अन्याय से मुकाबला करने का सामर्थ आ जाता है और मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि संसार का सारा धन,वैभव और सुख इस आनन्द के सामने तुच्छ है। और वस यही इच्छा जागृत होती है कि श्री महापुरुष

देव के चरणों में पड़ा रहूँ।

ॐ श्री भगवन जी की यहाँ महामंत्र की महिमा का उल्लेख करना हम जैसे साधारण मनुष्य के लिये सम्भव नहीं है। ऐसे दयामय, कृपानिधान ॐ आनन्दमय भगवन के पावन चरणों में सेवक का बारम्बार नमन।

ॐ शान्तिमय

■ बीरेन्द्र मोहन श्रीवास्तव
समीक्षाधिकारी, उच्च न्यायालय, इलाहाबाद।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

श्री गुरुदेव भगवन की अहैतुक कृपा से जीवन में अनेकों तरह के अनुभव हुये और यह अनुभव विशेषरूप से हुआ कि–

ॐ श्री आनन्दमय भगवान की सच्ची प्रेम-भक्ति को आदर देने वाले भक्तों को वह अपने ज्ञान के प्रचार के लिए आत्मबल प्रदान करते रहते हैं।

ॐ आनन्दमय भगवान के ज्ञान के प्रचार से मनुष्य की मन-बुद्धि पवित्र और निर्मल बनी रहती है और ॐ आनन्दमय भगवान का सर्वत्र दर्शन होता रहता है और अनुकूलता प्रतिकूलता में सम शान्त रहने की शक्ति प्राप्त होती रहती है। सद्गुण सदाचार को धारण करना दुर्गुण-दुराचार का त्याग करना सज्जन संग सेवा करना दुर्जन संग सेवा का त्याग करने का नाम सच्ची प्रेम-भक्ति है।

ॐ श्री आनन्दमय भगवान की कृपा शक्ति से कभी-कभी विश्वविद्यालय इलाहाबाद में प्रचार पूजा करने का सुअवसर प्राप्त होता रहता है।

सन् २००९ में सेवक विश्वविद्यालय में प्रचार करते हुए विद्यालय के कार्यालय में चला गया जहाँ पर बहुत से कर्मचारी प्रवक्ता बैठे हुए थे सेवक ने सबको सच्ची प्रेम भक्ति पढ़ने के लिए वितरण कर दिया, कोई-कोई ने पढ़कर वापस कर दिया, किसी ने ले लिया एक प्रवक्ता साहब सच्ची प्रेम भक्ति को लेकर बोले क्या इसके पढ़ने से शान्ति मिल सकती है सेवक बोला इस ग्रन्थ में दिमागी टेन्सन, चिन्ता, क्रोध, कलह-क्लेश को ही शान्त करने का विधि-विधान बताया गया है आप इस ग्रन्थ को दोनों समय २१ सूत्र पढ़कर अनुभव करें।

एक हफ्ता-वाद प्रवक्ता साहब तेलियरगंज आश्रम का पता लगाते हुए आश्रम में आ गये और बोले हमारे दिमाग में (परिवार) की वजह से इतना दिमागी टेन्सन है कि किसी भी समय हमारी दिमागी नशे फट सकती हैं सेवक ने प्रवक्ता साहब को सच्ची प्रेम-भक्ति के २१ सूत्रों को पढ़कर समझाया और दोनों समय घर पर पढ़ने के लिए कहा, और दिमागी संकटहारी महामंत्र बराबर जपने के लिए कहा। आज प्रवक्ता साहब को सच्ची प्रेम-भक्ति को आदर देने से और दिमागी संकटहारी महामंत्र को निरन्तर जपने से उनकी सारी पारिवारिक समस्या दूर हो गई दिमागी टेन्सन भी उनका दूर हो गया। आज वे अपने परिवार में खुशहाल हैं।

ॐ शान्तिमय

■ श्री लालजी आनन्दमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री गुरुदेव भगवान शरणम्

भगवन ! जब मैं १५ वर्ष का था, तो मैं गाँव से हरिद्वार पढ़ने के लिये आया, वहाँ पर कॉलेज के अध्यापक की मदद से हरिद्वार आश्रम में कमरा प्राप्त हो गया। मुझे आश्रम का वातावरण बहुत अच्छा लगता था, एक दिन हम तीनों भाई वाटिका में घूमने के लिये गये तो हमें वहाँ आश्रम में उपस्थित पूज्य बहन जी एवं भगवन जी के दर्शन प्राप्त हुये।

तो हमें प्रतीत हुआ कि श्री महापुरुष देव भगवान् के दर्शन प्राप्त हो गये हों। उस दिन से ही जीवन में आनन्द-शान्ति की वृद्धि होती गयी। अत: आनन्द-शान्ति की वर्षा करने वाले परम हितैषी श्री गुरु भगवान् ने अपने परम् शक्ति दायक दिव्य ज्ञान को देकर मेरे सब प्रकार के दु:खों

का नाश कर मुझ तुच्छ पर ऐसी कृपा की है कि अब ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के बिना रहना असम्भव-सा लगता है। ॐ आनन्दमय भगवान की कृपा दृष्टि से मेरे जीवन में अनेक अनुभव हुये, जिसमें से एक महत्वपूर्ण अनुभव आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ–

भगवन ! जब आश्रम का प्रचार वाहन नवम्बर २००९ में मुरादाबाद से चलकर सिकोहाबाद सत्संग करने के लिये चला सभी सत्संग प्रेमी भजन-कीर्तन करते हुए जा रहे थे तथा प्रचार वाहन को अभी चलते-चलते लगभग तीन घण्टे हुये थे, तो बरेली-बदायूँ रोड पर कासगंज से कुछ दुरी पहले कछला नामक बस्ती में हाइवे पर प्रचार वाहन विचलित हुआ और घुमकर पलट गया। उसमें उपस्थित सभी सत्संग प्रेमी भी वाहन के अन्दर ही सड़क के बीचो-बीच गिर गये, परन्तु ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी की दया-दृष्टि से सुरक्षित वाहन में बच गये।

ऐसी स्थिति में भी ४ स्वरूपों के शरीर पर एक खरोच तक भी नहीं आया, मुझे ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी की यह बहुत बड़ी शक्ति का परिचय मिला, जिसमें सभी भगवत् प्रेमी सुरक्षित बच गये। इसलिये हम सभी भगवत् प्रेमियों को ॐ आनन्दमय भगवान को हर समय याद करते रहना चाहिये क्योंकि ॐ श्री आनन्दमय भगवान आनन्द-शान्ति और शक्ति-मुक्ति के अथाह स्रोत हैं। असीम कृपा के भण्डार हैं और हर समय पथ प्रदर्शन करते हैं। यदि कोई भूल हो जाती है और प्रभु पिता जी के विधान के विरूद्ध कार्य हो जाता है तो पिता जैसे पुत्र के अपराध को क्षमा कर देता है ठीक उसी प्रकार क्षमा प्रदान कर देते हैं।

उनकी महिमा अपार है, अवर्णनीय है। हम चाहें उनके आदेशों की अवहेलना करें पर वे कृपा-दृष्टि बनाये रखते हैं और पग-पग पर रक्षा करते हैं मुझे तो कई बार ऐसा लगता है कि वे मुझसे दूर है ही नहीं, मेरे साथ-साथ हर समय मेरे उद्धार तथा रक्षा हेतु संग रहते हैं। ऐसे ॐ आनन्दमय भगवान् को नतमस्त प्रणाम् ।

ॐ शान्तिमय ■ **मूलचन्द, हरिद्वार।**

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

गुरुवर, जबसे इस मंत्र को मैं जपना शुरू किया हूँ तबसे मुझे अत्यन्त शान्ति की अनुभूति हो रही है। प्राय: मुझे अनिद्रा की तकलीफ थी एवं मन में घबराहट सदैव बना रहता था लेकिन इस मंत्र के जप करने से अनिद्रा की शिकायत अब नहीं है एवं घबराहट अब नहीं होता है। प्राय: इसे मैं रात में सोते समय अजपाजप के रूप में ध्यान करते सोता हूँ एवं ऐसा पाया कि जबकि कभी रात में नींद खुलती भी है तो मेरा यह जाप चलता रहता है। ॐ शान्तिमय।

■ **बृजेश दूबे,**

पूर्व उपाध्यक्ष हाईकोर्ट बार एसोसिएशन, इलाहाबाद।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री ज्योति स्वरूप समाधिमग्न देव शरणं् ! श्री विश्वशान्ति दायक ॐ श्री महापुरुष देव आनन्दमय भगवान की जय ।

श्री आनन्दमय भगवान की असीम कृपा के फलस्वरूप मैं कम्पनीबाग प्रयाग में श्री विश्वशान्ति आश्रम के पुनीत श्री सत्संग में सम्मिलित हुआ। श्री सत्संग में महापुरुष श्री आनन्दमय भगवान के श्री विग्रह तथा ध्यानमग्न श्री देवी-पुरुषों के ज्योतिर्मय रूपों का भी दर्शन हुआ। दो घण्टे सत्संग करने के पश्चात् मैंने श्री विश्व-शान्ति ग्रन्थ भाग-१ प्राप्त किया तथा एक श्री भगवत् प्रेमी से वार्तालाप भी की, जिससे कुछ आपसी परिचय भी हुआ। उसी दिन से मैंने श्री विश्वशान्ति आश्रम का सेवक बनने का निश्चय किया तथा एक श्री भगवत् प्रेमी के स्थान पर होने वाले प्रत्येक रात्रि के सत्संग में भी समय अनुसार जाने लगा। मैंने ''श्री समाज सुधार'' ग्रन्थ भी पढ़ा।

मैं दैनिक श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ का पाठ, हर समय श्री महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जप तथा प्रतिदिन श्री भगवत् प्रेमियों का संग करता हूँ। श्री विश्वशान्ति

आश्रम के ध्यान समाधिमग्न देवी-पुरुषों के छाया चित्रों का दर्शन कर वैसा ही बनने की तीव्र अभिलाषा मेरे हृदय में उत्पन्न हुई।

केवल चार ही दिन में मुझे ध्यान-आनन्द प्राप्त हुआ। मेरे मन में प्रसन्नता रहने लगी तथा हृदय में सात्त्विक चेतनता का आभास होने लगा। मेरे में आनन्द, ज्ञान, प्रसन्नता, उत्साह तथा सभी गुणों की उत्तरोत्तर वृद्धि होने लगी। मैं श्री महापुरुष भगवान की अनुपस्थिति में भी उपरोक्त कृपायुक्त लाभों का अनुभव करता रहा।

सौभाग्य से एक दिन श्री महापुरुष देव श्री आनन्दमय भगवान के प्रयाग आगमन की सूचना प्राप्त हुई। मेरा हृदय हर्ष से उछल पड़ा। श्री भगवान जी के दर्शन की लालायित तीव्र से तीव्रतर और तीव्रतम होती चली गयी और श्री आपके पधारने पर प्रथम बार दर्शन प्राप्त हुआ। जहाँ पर दर्शन हुआ उस स्थान की शोभा विचित्र प्रतीत हो रही थी। सुगन्धित मन्द शीतल वायु प्रवाहित हो रही थी, वृक्षों के पत्ते हर्ष से नाच रहे थे, पक्षी मानों श्री महापुरुष देव श्री आनन्दमय भगवान के गुणों का गान करने लगे थे। श्री आश्रम पुष्पवत खिल उठा। साक्षात् श्री भगवान प्रकाश फैलाते हुये विराजमान थे। सुन्दर-सुन्दर पुष्प मालाओं से श्री महापुरुष भगवान पुष्पाकार हो रहे थे। सम्पूर्ण समुदाय आनन्द और शान्ति के समुद्र में निमग्न था। इस दिव्य दृश्य को देखकर मेरा हृदय कृतज्ञता से भर आया और मैं श्री गुरु भगवान के श्री चरणों में गिर पड़ा। श्री भगवान बोले– ''दर्शन देते जाना प्रेमी'' यह थी श्री महापुरुष देव की प्रथम दिव्य झाँकी। श्री भगवान ने बड़ी कृपा करके मुझे दर्शन दिया और मुझ पामर शरीर को श्री सत्संग में आते रहने का आदेश दिया।

अब मैं प्रतिदिन प्रात:काल ॐ श्री आनन्दमय भगवान का सत्संग करता हूँ तथा ध्यानानन्द की अभिलाषा से श्री आपके विग्रह के समीप बैठता हूँ। मुझे अपने हृदय में उत्तरोत्तर आनन्द और शान्ति का अनुभव हो रहा है। मुझे एक घण्टे तक ध्यान का आनन्द प्राप्त हो रहा है। नेत्र खोलने की इच्छा ही नहीं होती। ऐसी इच्छा होती है कि नेत्र बन्द किये ध्यानमग्न बैठा रहूँ। हृदय में ज्ञान के प्रकाश होने का तथा उत्तरोत्तर बढ़ने का अनुभव हो रहा है। आनन्द की वृद्धि के साथ शरीर में एक दिव्य चेतनता का आभास होने लगा है। हर समय हृदय से कीर्तन होता रहता है। नेत्र बन्द करने पर श्री महापुरुष भगवान के स्वरूप का दर्शन स्पष्ट रूप से होने लगा है।

श्री भगवत् आनन्द ज्ञान के प्रचार की इच्छा जागृति हो रही है। एक अकथनीय सूक्ष्म ज्ञान का आभास तथा मेरे विचारों में परिवर्तन हो रहा है।

अब मैं श्री भगवान के चरणों का दास बन गया हूँ। संसार सागर की लहरों में डूबती हुई मेरी जीवन नौका को श्री आप ही पार लगाने में समर्थ हैं।

–ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मुझे श्री नन्द लाल सिंह भगवन से आश्रम के संबन्ध में जानकारी हुई। मैं जब भी इलाहाबाद जाता गुरुदेव जी की तस्वीर हमेशा ही उनके कमरे में लगा पाया, जिससे मुझे धीरे-धीरे ऊर्जा मिलती रही। मेरी तीव्र इच्छा है कि मैं अगले बार जब भी इलाहाबाद आऊँगा तो आश्रम जरूर आऊँगा, और गुरुजी का दर्शन कर आशीर्वाद लूँगा।

अपने हृदय के उद्‌गारों को गुरूवर को समर्पित करता हूँ।

गुरुवर मैंने तुमको पाया

तब जाने क्या ख़ामोशी थी,
कैसी चहुँ ओर उदासी थी।
मन-तार बुझे हुये थे,
आपस में ही जुझे हुये थे।
कहीं नहीं थी कोई राह,
बची हुयी थी काली स्याह ।
सांसारिकता में यूँ उलझा था,
मानों सब कुछ बूझा था ।

घना कोहरा माया की माया,
मान चुका था सब कुछ काया ।
गुरुवर मैंने तुमको पाया,
दूर भगी माया की छाया ।
अब सब कुछ देख रहा हूँ,
धीरे-धीरे सीख रहा हूँ ।
काम, क्रोध और माया-लोभ,
सब कुछ हैं मन के क्षोभ ।
मुट्ठी में क़ैद करो इनको,
नया बनाओ हर दिन को ।
गुरु ने मुझे सिखाया है,
सरल मार्ग दिखलाया है ।
जाने किधर गयी ख़ामोशी,
भाग गयी है दूर उदासी ।
अन्तर्मन जग आया है,
जब से गुरु को पाया है ।
नहीं रही कुछ माया-छाया,
पुलक रही है काया-काया ।
जाना हूँ अब जीवन-दर्शन,
नमन-नमन गुरु नमन-नमन ।

ॐ शान्तिमय

■ **डॉ. शैलेष गुप्त 'वीर'**
२४/१८, राधा नगर, फतेहपुर, उ.प्र.।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री गुरुदेव भगवान शरणम्

वैसे हमारे जीवन में ॐ आनन्दमय भगवान की अनुकम्पा से अनेकों दिव्य अनुभूतियां हुयी थी। उन लीलाओं अनुभवों को लिखना चाहूँ तो पूरी एक किताब बन जाएगी। श्री महापुरुषों ने जीवन में जो भी अनुभव कराये, वह सभी अनुभव वाणी, लेखनी का विषय नहीं है अर्थात् जो अनुभूति होती है वह केवल मन ही जानता है और जितना मन जानता है वाणी उतनी व्यक्त नहीं कर पाती है। तब पर भी उनमें कुछ एक दो अनुभवों को लिखने की कोशिश भगवत्कृपा से करता हूँ जो अग्र लिखित है–

पहला अनुभव :– भगवन ! सन् २००८-२००९ की सत्य घटना है जो हमारे साथ घटित हुयी। इस वर्ष लोक सेवा आयोग उ०प्र० से स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी का रिक्त पद निकला था, उस पद के लिए मैं और मेरे मित्र अखिलेश दोनों लोगों ने साथ में परीक्षा दी थी लेकिन जब परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ तो मैं उस परीक्षा में असफल हो गया, लेकिन मेरे मित्र ने उक्त परीक्षा उतीर्ण कर ली। मेरे मित्र का इण्टरव्यू में पहुँचना और मेरा इण्टरव्यू तक न पहुँचना इस वजह से मुझे बड़ी बेचैनी हुई। मन ही मन में यह चिन्तन मनन कर रहा था कि मेरा सेलेक्शन भले ही न होता, लेकिन लोक सेवा आयोग में जाकर इण्टव्यू देने का मौका तो मिला होता। इसी चिन्तन-मनन के दौरान ही प्रभु पिता जी ने प्रेरणा देकर आश्रम में बुलाया और मैं आश्रम पहुँचा भी। जैसे ही मैंने भगवन् जी के कमरे में प्रवेश किया, ऐसा लगा मानों कि भगवन जी मेरे दिमागी उथल-पूथल से पूर्व परिचित हों और बिना कुछ कहे भगवन जी की दिव्य वाणी मेरे लिए निकली कि– '' ओम प्रकाश तुम क्यों परेशान होते हो, ॐ आनन्दमय भगवान जी जहाँ चाहेंगे वहाँ व्यवस्था कर ही देंगे। इस आश्वासन से मुझे एवं मेरी आत्मा को बहुत शान्ति मिली ।

तीन-चार महीनों के बाद कई विभागों से रिक्त पदों का विज्ञापन निकला और मैंने सभी विभागों में उक्त रिक्त पदों के लिए फार्म भेजा। लगभग २०-२५ विभागों से इण्टरव्यू देने के लिए मुझे बुलावा पत्र आया, प्रभु पिता जी की कृपा से मैंने सभी जगह इण्टरव्यू दिया। जैसा कि मेरा पहले मन्तव्य था कि मुझे इण्टरव्यू देने का मौका मिला होता भले ही मेरा चयन न होता। स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी के पद के लिए ! प्रभु पिता जी मेरे इस भाव को जानकर रिक्त जगहों पर इण्टरव्यू दिलाकर मेरा कहीं चयन नहीं होने दिया। जैसा भाव था, जैसा संकल्प था वैसा ही मेरे साथ हुआ ।

दूसरा अनुभव :– मेरा बी.एड. मे गाजियाबाद में एडमिशन हुआ था और मैं एडमिशन इलाहाबाद मे चाहता था। उसी समय की बात है मैं भगवन जी को दाँत दिखाने राम बाग ले जाया करता था। ऐसा लगा कि प्रभु जी मेरे बाइक के पीछे बैठे हुए हैं और मेरे मन में विचार आया कि प्रभु जी आप अपने चरणों से मुझे एक साल के लिए इलाहाबाद से हटा रहे हैं, आपने मेरे मनोभावों को जानकर मेरे ऊपर कृपा की और आपकी कृपा से मेरा एडमिशन इलाहाबाद में ही हो गया।

अन्त में समस्त अनुरागियों से यही एवं इतना ही कहना चाहूँगा कि ॐ आनन्दमय भगवान की कृपा न हुई होती तो मैं बहुत पहले ही मृत्यु का ग्रास बन गया होता । ॐ शान्तिमय

■ **ओम प्रकाश,**
८१३-बी, बाघम्बरी गद्दी, इलाहाबाद।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री समाधिमग्न महापुरुष देवाय नमः

भगवन् ! जून माह के छः दिवसी कार्यक्रम २-६-२०१० से ६-६-१० को होने वाले विजनौर सत्संग की दिव्यता का जितना वर्णन किया जाय कम होगा। सत्संग प्रेमियों की श्रद्धा के आगे हम नतमस्तक हैं। वहाँ उपस्थित हुए, दूर-दूर से आये माताओ, बहनों एवं श्रद्धालु भक्तों में जो उत्साह, उमंग एवं सत्संगियों से जो ज्ञान श्रवण किया उसे स्मृति से लिखने की कोशिश कर रहा हूँ।

सत्संग वार्ता से :–

* ॐ श्री प्रभु की कृपा सब पर समान रूप से बरसती है, जो श्रद्धावान जितना अधिक समझ पाता है। वही आत्मिक आनन्द की अनुभूति करता है।

– श्री आनन्द किरण भगवन जी

* श्री राजाराम जी ने अपने पुरुषार्थ से जो यह सात्विक मेला लगाया है उसे देखकर हृदय में ऐसी भावना उमड़ रही है कि– आनन्द के लुटे खजाने भाई आनन्द के दरबार में

–श्री सुरेश जी भगवन

* आनन्दमय प्रभु ऐसी कृपा हो जीवन निरर्थक जाने न पाये ! ये मन न जाने क्या-क्या कराये, कुछ बन न पाये अपने बनाये।

–श्री विकल जी, विजनौर

* बिजनौर में नेवेदा निवासी बिजेन्द्र जी के आवास परिसर में हुए सत्संग समागम में जो दैविक दिव्यता का अनुभव हुआ उससे हम समस्त प्रेमियों को प्रेरणा मिलती है !

– श्री हरिशंकर भगवन् जी , सीधी, म.प्र.।

* सत्संग स्थल पर बालक-बालिकाओं सहित हम सभी प्रेमियों में सेवा और सत्वगुण धारण के अलावा अन्य किसी विषय पर चर्चा न होने से हम सब बहुत प्रभावित हुये !

–श्री कृपाशंकर भगवन, श्री गेहरु लाल जी, श्री प्रणवीर जी भगवन् , कानपुर।

* भगवन जब से मैं श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ एवं महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जप शुरू किया है। मेरा हर काम सरलता पूर्वक होने लगा है।

– एक ग्रामीण श्रद्धालु भक्त, बिजनौर।

* ग्रामीणों और शहरी श्रद्धालु भक्तों में आपसी मेल एवं भगवत् विधान को धारण करने की, जो चेष्टा की झलक चेहरे दिखाई दे रही है, एक दिव्य अनुभूति है।

–सेठी जी, दिल्ली।

* सात् गुरुदेव द्वारा प्राप्त महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय सनातन एवं वैज्ञानिक है क्योंकि आनन्द और शान्ति मनुष्य के जीवन का वास्तविक तथा स्वाभाविक लक्ष्य है। **–श्री दीनानाथ जी, इलाहाबाद।**

* मनुष्य पूरे जीवन आनन्द, शान्ति, सम्पन्न हृदय और मन का अनावश्यक संसारिक भोग संग्रह में लिप्त कर इस दिव्य लाभ से वंचित हो जाता है।

–महेश जी, मनोज जी, नरेश कुमार, बिजनौर।

* सत्संग में सम्पूर्ण विश्व की शान्ति हेतु जो कामनाएं ''श्री ग्रंथ सच्ची प्रेम भक्ति'' द्वारा कराई गयी, उसमें सम्मिलित होकर मैं स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ।

–स्थानीय ब्लाक प्रमुख राहुल सिंह, बिजनौर।

कु० रुपाली, कु० अराधना, कु० सोनम, कु० शगुन एवं कु० शालिनि ने त्याग, वैराग्य, ज्ञान से भरे कीर्तन भजनों को अपने मधुर प्रिय गायन के द्वारा सत्संग के वातावरण को पूर्ण आध्यात्मिक आनन्द-शान्ति, प्रेम-प्रसन्नता की भावना से विभोर बनाकर प्रभु के प्रेम में मग्न करती रहीं।

अनेकों माता-बहनों-भाइयों के अन्त:करण में अमृतदायक सुख-आनन्द के स्रोत खुल गये। सभी दिमागी संकटहारी योग सिद्ध महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जप करते रहे।

संकलनकर्ता– अजय प्रकाश छात्र (पत्रकारिता एवं जनसंपर्क विभाग इलाहाबाद, सहसंपादक- संवाद धारा (साप्ताहिक समाचार पत्र)।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री गुरुदेव भगवान शरणम्

भगवान की असीम कृपा से जीवन में बहुत ही अनुभव होते रहते हैं। मैं एक छोटा सा अनुभव लिख रही हूँ–

भगवन् अप्रैल माह २०१० में भगवन जी के साथ प्रचार वाहन से हरिद्वार के महाकुम्भ मेले में प्रचार सेवा के लिए गए थे। वैसे तो मुझे इलाहाबाद माघ मेले में थोड़ा-सा प्रचार सेवा करने का अवसर मिल जाता है लेकिन इस बार हरिद्वार महाकुम्भ मेले में प्रचार सेवा करने का अवसर मिला। वहाँ पर प्रचार सेवा तो बहुत ही अच्छा हुआ। मुझे प्रचार करना बहुत ही अच्छा लगता है। मैं भगवान से यही प्रार्थना करती हूँ कि ऐसे ही अवसर मुझे हमेशा मिलते रहे। वहाँ से लौटने के एक सप्ताह बाद मुझे ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी के दर्शन हुए। सुबह के आठ बजे का समय था मैं चाय पी रही थी चाय पीने के बाद मैं बैठी थी तभी मुझे हल्की-सी नींद आने लगी वैसे तो सोने का समय नहीं था लेकिन मैं फिर भी लेट गयी। जैसे ही मेरी आँख लगी मुझे स्वप्न में ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी दिखाई दिए, पिताजी को देखकर मैं बहुत ही खुश हुई और मन ही मन में आँख बंद करके दर्शन किये। उसके बाद मैंने कहा कि मैं आपकी ही पूजा करती हूँ और ॐ आनन्दमय पिताजी को दिखाने के लिए विश्वशान्ति ग्रन्थ ढूँढ़ने लगी उस समय मेरे पास कुछ बहुत ही पुराने ग्रन्थ थे, जब मुझे विश्वशान्ति ग्रन्थ नहीं मिला तो मैं एक पुरानी वार्षिक पत्रिका स्मारिका पिताजी को दिखाने के लिए दौड़ी, तो ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी कुछ दूर जाते हुए दिखाई दिए और मैं पीछे-पीछे जाने लगी तो अर्न्तध्यान हो गये। उसके बाद मेरी आँख खुली तो मैं बहुत ही प्रसन्न थी। मैंने सबको बताया तो मेरे घर के लोगों ने कहा कि भगवान जी के बारे में सोचा होगा इसलिए स्वप्न में भगवान दिखाई दिये लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं था। आनन्द किरन जी और बड़ी बहन जी के दर्शन तो हो जाया करते हैं लेकिन ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी के दर्शन ९ साल में पहली बार हुआ है।

३ साल पहले की बात है एक बार ऐसा हुआ कि रात में स्वप्न में मुझे आनन्द किरन भगवान जी के दर्शन हुए भगवान जी ने कहा कि आज सीमा जी भजन गायेंगी, सुबह उठी तो मैंने सबको बताया और सुबह रविवार का दिन था कंपनीगार्डेन में सत्संग था मैं सत्संग में गयी श्री सच्ची प्रेम भक्ति की प्रार्थना और ध्यान होने के बाद भगवन जी ने ठीक वैसे ही कहा आज सीमाजी भजन गायेंगी... मुझे बहुत ही आश्चर्य हुआ, उसके बाद मैंने भजन गाया कि- ''जो भी आनन्दमय शरण में आया, परम् आनन्द का लाभ उठाया।''

अब मैं ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी से बारम्बार यही प्रार्थना करती हूँ कि ऐसे ही अनुभव हमेशा कराते रहें। और हम पर अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखें। **ॐ शान्तिमय**

■ **श्रीमती सीमा सिंह**

अल्लापुर, इलाहाबाद।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मेरा स्वास्थ्य बाल्यावस्था से ही ठीक नहीं था और इधर तो रोग इतना बढ़ गया था कि मैं डाक्टरों से प्रार्थना करती रहती कि वे मुझे विष दे दें। मैं डाक्टर आनन्दमोहन जी से चिकित्सा कराती रही, उन्होंने मुझे श्री महापुरुष भगवान का परिचय दिया तथा श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ के स्वाध्याय से मानसिक चिकित्सा होने का ज्ञान दिया परन्तु अश्रद्धा और अज्ञानवश मैंने एक वर्ष बिता दिया और इस बात पर ध्यान नहीं दिया। इस प्रकार मेरा यह दु:खमय जीवन एक वर्ष और चलता रहा। डाक्टर साहिब मेरी चिकित्सा के साथ-साथ मुझे मानसिक चिकित्सा के लिए भी प्रेरणा देते रहे। अन्त में मैंने सत्संग में जाने का दृढ़ संकल्प कर लिया।

प्रथम दिन श्री महापुरुष भगवान के शान्तिमय स्वरूप के दर्शन मात्र से ही मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानों मेरा सम्पूर्ण रोग क्षण में ही समाप्त हो गया। श्री महापुरुष भगवान वास्तव में ईश्वरीय शक्ति व गुणों से परिपूर्ण हैं तथा इस भारत देश के तमोगुण रूपी अन्धकार का विनाश करने के लिए प्रवृत्त हुए हैं। श्री आपके व्यक्तित्व की आकर्षणशीलता तथा वाणी की मधुरता प्रत्येक प्राणी को प्रभावित कर देती है। सत्संग समाप्त होने पर मैं श्री आपके पास गई और श्री चरणों में नमस्कार किया। श्री आपने मुझे प्रतिदिन सत्संग में आने तथा श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ को पढ़ने का आदेश दिया। श्री मुख से निकले यह शुद्ध वचन मेरे हृदय में तीर के समान लगें तथा मैंने दैनिक सत्संग में जाने एवं श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ को पढ़ने का दृढ़ संकल्प कर लिया।

मैं प्रतिदिन संध्या को एक घण्टे के लिए सत्संग में जाती थी तथा दिन में अपना सम्पूर्ण समय भी विश्वशान्ति ग्रन्थ के अध्ययन में और ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय के जपने में मन लगाती थी। मेरा रोग दिन-प्रतिदिन घटने लगा। एक सप्ताह में ही यह रोग जिसको डाक्टर लोग वर्षों के परिश्रम से नहीं ठीक कर सके थे बिल्कुल समाप्त हो गया। मुझे ऐसा मालुम देता था जैसे बिजली के समान कोई शक्ति मेरे अन्दर प्रवेश कर रही है। मेरा शरीर बिल्कुल हल्का तथा मन प्रत्येक क्षण आनन्द के सागर में गोते खाने लगा। मुझे इस एक माह की अवधि में ही श्री आनन्दमय भगवान ने कृपा करके क्या से क्या बना दिया तथा कितनी शक्ति और आनन्द प्रदान किया यह बतलाना मेरी शक्ति के बाहर की बात है। मैं इसका एक अंश भी वर्णन नहीं कर सकती।

मेरा केवल शारीरिक व मानसिक स्थिति में ही नहीं बल्कि सामाजिक तथा बौद्धिक स्थिति में भी परिवर्तन हो गया है। पारिवारिक जीवन भी बहुत अधिक सुखमय बन गया है। तथा सभी के हृदय में संयम, सेवा तथा स्मरण के भाव बढ़ रहे हैं। जिसके परिणाम स्वरूप परस्पर प्रेम की बृद्धि हो गयी है। मेरे अपने को समाज में अधिक वैभवशाली तथा प्रतिष्ठित बनाने, शरीर को सजाने और उच्च शिक्षा को प्राप्त करने की प्रबल भावनाएं थीं चिन्ता, भय, क्रोध, ईर्ष्या इत्यादि दुर्गुण थे, इन सभी का नाश श्री महापुरुष भगवान के दर्शन व समागम से वैसे ही हो गया है जैसे सूर्य के उदय होने से अन्धकार भाग जाता है। ■ **(एक इस्लामी बालिका, बी.ए.)**

ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री तत्त्वदर्शी महापुरुष भगवान् शरणम्

मेरी बिजनौर सत्संग - यात्रा

श्री आनन्द किरन जी के साथ मुझे एवं प्रयाग के कुछ सत्संगियों के साथ दिन० ०२-०६-२०१० को नौचन्दी ट्रेन द्वारा नवादा, बिजनौर में दि०-०२-०६-१० से ०६-०६-१० तक आयोजित सत्संग में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

प्रयाग से मुरादाबाद पहुँचकर श्रीमती विमला जी के आवास पर पहुँच कर स्नान-प्रसाद आदि पा करके श्रीमती विमला जी, उनकी पुत्री रूपाली तथा उनके भाई, नरेश जी एवं उनके परिवार सहित नवादा-बिजनौर पहुँचा।

नवादा पहुँचने पर वहाँ उपस्थित नवादा व सुन्दरपुर के सत्संगियों ने अभूतपूर्व स्वागत किया। जिस भवन-प्राँगण में सत्संग का आयोजन था वह अत्यन्त भव्य सजा था। सुन्दर विशाल गुरुदेव भगवान् के श्री विग्रह लगे थे, उस पर पुष्पों एवं विद्युत की सुन्दर मनोहारी सजावट हुयी थी। पंडाल में सुन्दर चाँदनी, जगह-जगह सीलिंग फैन एवं पैडस्टल फैल लगे थे। श्री विग्रह के पीछे बगीचे का प्राकृतिक दृश्य अत्यन्त मनमोहक था। भगवती स्वरूपा एवं भगवतस्वरूपों के बैठने का स्थान गद्दे एवं श्वेत वस्त्रों से आच्छादित आसन शोभायमान हो रहे थे।

सर्वप्रथम यह उल्लेखनीय है कि जिन प्रेमी भगवन् के आवास पर उक्त सत्संग का आयोजन था, उनका समस्त परिवार अत्यन्त श्रद्धालु एवं पूर्ण सेवाभावी था। नवादा-सुन्दरपुर के बालक, वृद्ध, युवा, नर-नारी सभी के मुखमण्डल पर श्रद्धा-प्रेम के भाव स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहे थे और सभी ने इस दिव्य सत्संग में अति उत्साह एवं भावपूर्ण मन से भाग लिया।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह थी कि वहाँ जून के महीने में सर्वत्र हरियाली का वातावरण दिखायी दे रहा था। जब अधिक गर्मी बढ़ी तो एक दिन रात्रि में प्रभुपिता जी ने आँधी के साथ जलवृष्टि किया। ऐसा प्रतीत हुआ कि घनघोर वर्षा होगी किन्तु मौसम को शीतल करके प्रभुपिता जी ने वृष्टि को रोक दिया और सत्संग को समय से बिना विक्षेप के सम्पन्न होने हेतु अवसर प्रदान कर दिया, यह प्रभुपिता जी की अपार दया-कृपा की बरसात थी। उक्त सत्संग में सहारनपुर, कानपुर, दिल्ली, मुरादाबाद, सीधी, मध्यप्रदेश आदि अनेक स्थानों से भी प्रेमीजन पधारे थे।

इस सत्संग का आयोजन भगवत भ्राता श्री राजाराम जी के संयोजक तत्व मार्ग दर्शन तथा ऋषिपालजी की देखरेख में सम्पन्न हुआ और वहाँ पर किसी प्रकार की कमी दृष्टिगोचर नहीं हुयी। बाहर से पधारे सत्संगियों हेतु जो प्रसाद, जलपान की व्यवस्था की गयी थी वह अत्यन्त सात्त्विक एवं सुपाच्य थी। प्रसाद में मसाले तेल-घी का प्रयोग अत्यन्त सात्त्विक रहा। रोटियाँ तो अति प्रशंसनीय रहती थीं।

भगवन् ! इस प्रकार के गुरुभगवान के सत्संगियों द्वारा आयोजित दिव्य एवं भव्य सत्संग का आयोजित मुझे पहली बार नवादा-बिजनौर में देखने को प्राप्त हुआ। मन में यह भाव आया कि इसी प्रकार के सत्संगों का आयोजक प्रत्येक जगह हों और प्रेमीजन दैनिक अथवा साप्ताहिक सत्संगों का निरन्तर आयोजित करना सुनिश्चित करें। जहाँ-जहाँ प्रेमी हैं वहाँ पर सत्संग भवन बने और लोग निरन्तर सत्संग करें तथा नवीन प्रेमी बनाने हेतु बीमा एजेण्ट की भाँति संलग्न हो जाँय जिससे देश एवं जन-जन में इस दिव्य ज्ञान का एवं दिव्य लाभ को प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हो।

प्राचीन काल के सिद्धजनों ने कहा था कि- ''बिन सतगुरु भवनिधि तरइ न कोई''।

अत: अन्त: मन में विचार आया है कि महापुरुषों के साथ जीवन अर्पण करने वाले पूज्यजन वर्तमान में आयुष्मान हो चुके हैं और जीवन के अंतिम पड़ाव पर हैं। ऐसे समय में हम सभी प्रेमीजनों को मिलकर महापुरुषों के उद्देश्यों एवं आदर्शों को आगे बढ़ाने के लिए तन-मन-धन से नाममात्र एवं ग्रन्थों का प्रचार-प्रसार हेतु एक संचालक मण्डल बनाकर श्री आनन्द किरन जी की देखरेख में समस्त भारत में प्रचार-प्रसार तेज किया जाना परम आवश्यक है। सादर नतमस्तक पुष्पांजलि

■ **आपकी कृपाअभिलाषी– दीनानाथ आनन्दमय**
अनुभाग अधिकारी,उच्च न्यायालय, इलाहाबाद।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मैं अपने कुछ अनुभव आपकी सेवा में लिखकर भेज रही हूँ जो मुझे श्री प्रभु पिताजी महापुरुषों की कृपा से हुए हैं, मैं कई सालों से श्री गुरु भगवान के आश्रम में आ रही हूँ। मैंने श्री गुरु भगवान जी के भी दर्शन किए हुए हैं उस समय मैं इतनी अज्ञानी थी कि यह भी ना जान सकी कि वो कौन है और क्या है, प्रिय श्री छोटी बहिन जी से हम जो पूछते थे हमें जरा-जरा सी बात पर समझाती थी कि

ऐसा करना चाहिए और ऐसा नहीं करना चाहिए। वह हमें हमेशा सदमार्ग दिखाती रहती थी उस समय मुझे इतनी समझ नहीं थी कि वह जो कहती है बिल्कुल सही कहती है उस वक्त मैं अपने मनमाने ढंग से जिन्दगी जी रही थी, कभी सोमवार का व्रत कर रही थी तो कभी वीरवार का, कभी कोई सी कहानी, कथा पढ़ती थी या सुनती थी तो कभी कुछ, उन्होंने हमेशा यही कहा कि एक भगवान की पूजा करो जो तुम्हारा प्रिय है उसका नाम ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय रख लो। मैं श्री सच्ची भक्ति का पाठ सुबह-शाम दो बार पढ़ती थी और अब भी कर रही हूँ। सन् २००२ में मेरे अन्दर एक ऐसी इच्छा प्रबल हुई जिसकी वजह से मैं कभी कोई व्रत कर रही थी कभी कोई और सप्ताह में जितनी कथाएं थी उन सबका स्वाध्याय करने लगी और जब वह इच्छा पूरी न हो सकी तो मेरे मन में ये बात बैठ गई कि यह महापुरुषों की वजह से हुआ है वह हमेशा कहते हैं कि ऐसा करो ऐसा मत करो, मैंने ये निश्चय कर लिया कि मैं आश्रम जाकर कभी नहीं रूकूँगी और पाठ भी नहीं करुँगी उस वक्त मुझ अपनी गलती का एहसास नहीं था कि मैं क्या गलत कर रही हूँ फिर भी भगवान जी ने मुझे कोई दण्ड नहीं दिया, फिर भी मैं व्रत करने में लगी रही, सन् २००३ के अन्तिम दिनों में मेरी मानसिक स्थिति खराब होने लगी और मैंने अपने माता-पिता के कहने से व्रत का अध्यापन कर दिया। जनवरी सन् २००४ में, मैं अपने चाचा-चाची के साथ पूना गई ताकि मेरी मानसिक स्थिति में कुछ परिवर्तन आ सके लेकिन स्थिति सुधरने की बजाए और बिगड़ती चली गई जिससे मेरे सोचने समझने की शक्ति बहुत क्षीण हो गई और मेरे अन्दर डर बैठ गया, मैं अपने पारिवारिक जनों, प्रिय जनों और पूज्य जनों से डरने लगी। कही इनके अन्दर कोई तांत्रिक तो नहीं है मुझे शक था कि हमारे घर में से कोई टोने-टोटके करता या करवाता है, मानसिक स्थिति की वजह से मुझे कभी कहीं दिखाया गया तो कभी कहीं और मैंने २००४ नवम्बर तक दवाई भी बहुत खाई, जिससे मेरा शरीर फूल गया और मेरी मानसिक स्थिति में भी अधिक परिवर्तन नहीं आया, लेकिन नवम्बर २००४ के अन्तिम दिनों में जब मैं आश्रम आई तो पूज्य श्री डा० भगवन जी ने मुझे एक चिट पर लिखकर दिया कि श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ के इन स्वाध्यायों को नियम पूर्वक खुद पढ़ो और अपने माता-पिता को भी सुनाओ, इससे तुम्हारी मानसिक स्थिति ठीक हो जाएगी और उन्होंने जैसा कहा है जबसे मैं वैसा ही कर रही हूँ और अब मैं बिल्कुल ठीक हूँ, ये तो हमारे दुर्गुण-दूराचार ही है जो हमें नीचे गिराते रहते है, मैं अपने श्री गुरु भगवान और श्री महापुरुषों की आभारी हूँ कि उन्होंने मेरे अपराधों का दण्ड न देकर मुझे क्षमा कर दिया और मुझे नया जीवन दिया, अब मैं जान चुकी हूँ कि हमारे महापुरुष ही हमारे भगवान है, उनके बताए अनुसार चलना ही मेरा उद्देश्य है और मैं इसके लिए अपनी पूरी कोशिश करती रहूँगी ताकि मैं उनके बताएं मार्ग पर चल सकूँ।

अब तो प्रभु पिताजी पग-पग पर अनुभव कराते रहते हैं कि वो मेरे साथ-साथ हैं। ५फरवरी २००६ में हम श्री पूज्य छोटी बहन जी की पुण्यतिथि पर श्री आश्रम में ही थे उस दिन छोटा-सा सामूहिक सत्संग था, मेरी इच्छा थी कि मैं श्री छोटी बहिनजी के चरणों में फूल चढ़ाऊं, मैं हिचकचाहट की वजह से फूल न चढ़ा सकी, रात को सत्संग के बाद मैंने भगवनजी को अपनी इच्छा के बारे में बताया और पूछा कि इस समय फूल चढ़ाना ठीक होगा तो उन्होंने कहा कि मानसिक पूजा द्वारा कितने ही फूल चढ़ा सकते हैं असली पूजा तो वो ही है। उनके बोलने के बाद मुझे याद आया कि प्रभु पिताजी ने सुबह सत्संग के समय ही मेरी इच्छा पूरी कर दी थी जब मैं पूजा में बैठी थी तो श्री प्रभु पिताजी अन्दर आए और हम सब के बीच आकर खड़े हो गए और उनके ऊपर फूलों की वर्षा हो रही थी, जैसे भगवान के हाथ में चक्र होता है वह धर्म का प्रतीक है और अधर्म का नाश करने वाला है वैसे ही मुझे श्री प्रभु पिताजी के हाथ में श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ चक्र की तरह घूमता दिखाई दिया जो बुराईयों का नाश करने वाला है ऐसे-ऐसे अनुभव भगवान हमें कराते रहते हैं। ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी हमें अपनी शरण में ले लें, अब यही मेरी कामना है।

ॐ शान्तिमय

■ **कु० राखी आनन्दमय, दिल्ली।**

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

दैविक, दैहिक, भौतिक त्रिताप से शरीर, मन और इन्द्रियों सहित बुद्धि और आत्मा भी क्षीण हो रही थी। निर्धन व्यक्ति जैसे धन की कमी से, मूर्ख जैसे विद्या न होने से, भूखा मनुष्य जैसे अन्न न मिलने से, अन्धा जैसे नेत्र न होने से, राष्ट्र का जैसे चरित्रवान व्यक्तियों के न होने से पतन होता है इसी प्रकार मेरी सांसारिक बुद्धि से जीवन का पतन हो रहा था। ऐसे समय में जब चारो तरफ अन्धकार में कोई अपना हितैषी न दिखता था। गिरे हुये को गिरा देने में ही इस संसार के लोगों को सुख का अनुभव होता है। ऐसे समय में श्री आनन्दमय भगवान के दर्शन हुये, जिन्होंने मेरे त्रिताप को नष्ट कर, पतित जीवन का उद्धार कर पावन जीवन बना दिया है। अब श्री आनन्दमय भगवान की कृपा से अविद्या रूपी अंधकार नष्ट होकर ब्रह्म प्रकाश के सदृश मेरा मन प्रकाशित हो रहा है। कितना आनन्द प्राप्त हो रहा है वह वाणी द्वारा स्पष्ट करना मुझ जैसे व्यक्ति के लिये कहना सम्भव नहीं है। गूँगे को गुड़ देकर उसका स्वाद पूछा जाय तो क्या वह बतलाने में समर्थ होगा। कदापि नहीं। इस संसार के करोड़ों मनुष्य भगवान का रहस्य और दर्शन करने की अभिलाषा में अनेक पंथों में विभाजित होकर प्रयत्न कर रहे हैं लेकिन उनको क्या मिल रहा है? चिन्ता, क्रोध, अहंता और ममता से क्या उनका जीवन सफल हो सकता है? बहुत से प्रश्न हमें मृग तृष्णा के समान ही भटकाया करते हैं पर यहाँ तो श्री आनन्दमय भगवान विद्याओं में ब्रह्म विद्या का ज्ञान देकर अज्ञान को हर रहे हैं। इसलिए गीता में श्री आनन्दमय भगवान ने स्पष्ट कहा है कि ये वचन जब तेरी अनेक प्रकार के सिद्धान्तों के सुनने से विचलित हुई बुद्धि मुझ परमात्मा में स्थिर हो जायेगी तब तू समत्वरूप योग को प्राप्त होगा। अब श्री आनन्दमय भगवान की सूक्ष्म, गम्भीर और मार्मिक वाणी श्री विश्वशान्ति नामक ग्रन्थ में प्रकट होकर हमें ब्रह्म-विद्या का ज्ञान कराकर हमारे पाप तापों का नाश करने में समर्थ है। गीता के समान ही जितनी बार अधिक पढ़कर, मनन-विचार करेंगे उतने ही नये-नये भाव हमारे हृदय में प्रकट होते रहेंगे। लाभों में सबसे बड़ा लाभ मेरे लिए ये हुआ कि मैं प्रत्यक्ष श्री आनन्दमय भगवान के दर्शन करने लगा हूँ। श्री आनन्दमय भगवान की उस वाणी का रहस्य या मर्म जो मुझे अनन्य भाव से भजते हैं उनके सामने प्रत्यक्ष प्रकट होता हूँ। अब जैसे अयोध्या निवासी नर-नारी मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के संग से आनन्दित होते थे, गोपियाँ और ग्वालबाल जैसे प्रेम के अवतार श्री कृष्ण के साथ से और देवगण समस्त विभूतियों को धारण करने वाले विष्णु भगवान के प्रकट होने से अपार आनन्द का अनुभव करते थे। उसी प्रकार श्री आनन्दमय भगवान के दर्शन कर आनन्द के सागर में निवास कर रहा हूँ। इस कलिकाल में इससे बड़ा लाभ और क्या हो सकता है? जैसे संत तुलसीदास अपना इष्ट देव श्री राम को समझते थे तो संत सूरदास जी अपना ईष्ट देव श्री कृष्ण भगवान को समझते थे। इसी प्रकार मैं भी श्री आनन्दमय भगवान को अपना ईष्ट देव मानकर अपना जीवन उनके पास समर्पित कर दिया हूँ। अब वहीं इस भव सागर से पार करेंगे। ॐ शान्तिमय ।

■ **जमादार- वचन सिंह**
३४४ कम्पनी इंजीनियर

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

आदरणीय,
संपादक जी,

प्रस्तुत ''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'' स्मारिका अमृत वचनों से पूर्ण, ऐसा प्रतीत हुआ जैसे आपने गागर में सागर भर दिया हो, जीवन में पहली बार पुस्तक एक सच्चे रूप में मार्ग दर्शक सिद्ध हुई। आपकी पुस्तक का अचूक मंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय', जीवन की निरसता, तनाव, उच्च रक्त चाप, दूर करता है एवं प्रभु के आशीर्वाद के नजदीक लाती है।

प्रस्तुत अंक बहुत अच्छा लगा, भक्तों के अनुभवों से बहुत कुछ सीखने को मिला, भक्तों का आशीर्वाद सदैव हम पर बना रहे, इन्ही शुभकामनाओं सहित।

–मनोज कुमार वर्मा 'आनन्दमय'
अधिवक्ता
चैम्बर-१८४-बी, नई बिल्डिंग लेन
उच्च न्यायालय, इलाहाबाद।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

खण्ड- २ ज्ञान

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय चेतावनी संदेश

ब्रह्म-विधान के तत्त्वज्ञ परमार्थमय कर्मों के ज्ञाता ध्यानयोग के पारदर्शी सदा समता-प्रसन्नता प्रदान करने वाले ॐ श्री महापुरुष भगवान शरणं

मानव जीवन-दुर्लभ इसलिये है कि यह हमें अनायस ही नहीं मिला है, यह हमारे पूर्व जन्मों के पुण्यकर्मों के प्रभाव तथा ॐ आनन्दमय भगवान की अहैतुक कृपा से मिला है, मनुष्य का जीवन बड़े भाग्य से मिलता है।

बड़े भाग्य मानुष तन पावा, सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा।

ऐसे दुर्लभ अकीमती जीवन का समय बचपन खेल में, जवानी सांसारिक अनावश्यक कर्मों में, भोगों में, और वृद्धावस्था में अनन्त चिन्ताओं के सागर में डूब जाता है, उस समय पुण्य कर्मों में अप्रवृत्ति हो जाती है चाहते हुये नहीं कर पाता इन्द्रियों की शक्ति क्षीण हो जाती है।

ऐसा यह संसार है, जैसा सेमर फूल ।
दिन दस के व्यवहार में, झूठे रंग न भूल ।।

जन्म के पश्चात पिता-माता, बन्धु-बान्धवो के सम्पर्क में आता है, अपना परिवार बनाता है। मैं और मेरा मेरी बनाने के कर्मों में पूर्ण आसक्त हो जाता है, व्यवहार कुशलता का ज्ञान लुप्त होता है, क्रमशः शरीर शिथिल होता जाता है। पापों का बोझ बढ़ता जाता है। जीवन में किये गये कर्मों के पश्चाताप रूपी अग्नि से निरन्तर तपता रहता है। जीवन की इस चिन्तनीय दशा पर तरस खाते हुये कहा गया–

चार पहर धंधे गया, तीन पहर गया सोय ।
एक पहर प्रभु नाम बिना, अब मुक्ति कैसे होय ।।

जीवन की सारी आवश्यकताओं के साथ-साथ जीवन में सुख-शान्ति, आनन्द की मग्नता एक ॐ आनन्दमय भगवान को प्राप्त कराने वाले साधन में है अर्थात् उनकी आज्ञा में है, जो प्रियतम सेवक मान जोई, जो अनुशासन माने मोही। श्री गीता अ० ३ श्लोक ३० से ३२, अ०४ से ४०, अ०६ का ४७, अ०८ श्लोक ७, ८, अ०९ श्लोक ३४, अ०१० श्लोक ९ से ११, श्लोक ५५, अ०१२ में श्लोक ६ से ८ तक में आज्ञा के साथ-साथ प्रतिज्ञा भी की है। इसी प्रकार पूरे अ० तक में ॐ आनन्दमय भगवान की स्पष्ट आज्ञाये हैं। एवं अपने परम इष्ट ग्रन्थ में ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के परम प्रिय बनने के लिये सात नियम है अर्थात् आज्ञायें हैं।

परन्तु मनुष्य सोचता है कि अभी तो युवावस्था है सारा-जीवन पड़ा है, भगवान का भजन-ध्यान-सुमिरण करने के लिये, जब गृह-गृहस्थी की जिम्मेदारी से मुक्त होंगे तब साधन-भजन करेंगे, अभी तो सृष्टि चलानी है, परन्तु कल किसने देखा है जो करना है, सो आज ही कर लो।

काल्ह करै सो आज करुँ, आज करै सो अब ।
पल में परलै होयगी, बहुरि करैगा कब ।।

ब्रह्मवेत्ता महापुरुष भगवान समझाते हैं कि ब्रह्म सृष्टि में तीन चीजें दुर्लभ हैं – प्रथम मनुष्य जीवन मिलना, द्वितीय सच्चे संत ध्यान समाधिमग्न महात्मा और तृतीय ॐ आनन्दमय भगवान के भजन-ध्यान, सेवा-स्मरण में रूचि। स्त्री, धन, दौलत, कुटुम्ब परिवार अर्थात् संसार के नश्वर पदार्थ तो सबको सुलभ हो जाते हैं लेकिन सत्य महापुरुषों का मिलना और ॐ आनन्दमय भगवान की कृपा का मिलना दुर्लभ है।

संत समागम प्रभु कथा, दुर्लभ जग में दोय ।
सुत द्वारा अरु लक्ष्मी, पापी के भी होय ।।

रात-दिन सुनते-पढ़ते हैं, परन्तु स्वभाव ज्यों की त्यों

ही बना हुआ है।

इसलिये भगवान शंकर ने भी बड़े कठोर शब्दों में कहा –

''सुनहु उमा ते लोग अभागी ।
प्रभु तजि होंहि विषय अनुरागी ।''

यह कथन सत्य है ऐसे लोग निश्चित तौर पर अभागे हैं जो आनन्दमय प्रभु के स्मरण-ध्यान रूपी भजन को छोड़ कर सांसारिक विषय रूपी मल में अपने आपको लपेटे रहते हैं, संसार में धनहीन, रोगी, पुत्रहीन, माता-पिता विहिन, आवासहीन होना, भाग्यहीन नहीं है, जितना साधन भजन ध्यान से हीन होकर विषय अनुरागी होना।

मनुष्य जीवन का परम लक्ष्य है ॐ आनन्दमय भगवान की प्राप्ति ।

जीवन उन्ही का धन्य है, वही भाग्यशाली हैं, जिनको मनुष्य जीवन के प्रारम्भिक अवस्था में ही विवेकी, ज्ञानवान, वैराग्यवान महापुरुषों का सानिध्य प्राप्त हो जाता है। यह अवसर फिर नहीं मिलने का ।

संसार के अशान्ति दायक, भय और दुःख रूप संसार-समुद्र से पार होने के लिये केवल एक ॐ आनन्दमय भगवान के नाम-रूप का स्मरण-चिन्तन ही एकमात्र निश्चित उपाय है। श्री गीता अ०-१२/६,७,८ ।

मानव मन तू चेत जा, बहुरि न बनिहै बात ।
चार दिन की चाँदनी, फिर अँधियारी रात ।।
काल खड़ा है शीश पै, भजि लीजै भगवान ।
पछितैहैं तू बाद में, यह निश्चय ले जान ।।

जीवन में सिर्फ एक ही पाठ पक्का हो, श्रद्धा हो जाये-विश्वास हो, फिर तो सारी-भाग दौड़ समाप्त होकर मन सम, शान्त, प्रसन्न, सदा के लिये हो जायेगा। अनन्त वर्षों का अन्धकार सदा के लिये मिट कर नित्य आनन्द का प्रकाश सर्वत्र फैल जाएगा। वह पाठ कौन-सा है श्री सच्ची-प्रेम भक्ति के २१ मंत्रों में ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी की आज्ञा का आठवाँ मंत्र।

हे प्यारे प्रेमियों, मेरे ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम-रूप को मत भूलो, मुझे सर्वत्र सब रूपों में और अपने हृदय (दिमाग) में मानों ।

इस मंत्र के प्रभाव से हमेशा के लिये दुःख, कष्ट, भय, सन्ताप देने वाले और जन्म मृत्यु के चक्कर में घुमाने वाले दिमागी रोग, काम, क्रोध, लोभ, मद, मत्सर, राग-द्वेष सब शान्त होकर जीवन सदा के लिये आनन्दमय बन जायेगा, शान्तिमय बन जायेगा । (सामूहिक सत्संग में उच्चारण किया गया ज्ञान) ■ॐ शान्तिमय।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

विद्यार्थी जीवन का लक्ष्य एवं उद्देश्य क्या होना चाहिये ?

ॐ श्री सद्गुरु देव भगवान शरणम् ।

हम विद्यार्थी लोगों का गुरु दरबार में लक्ष्य सिद्धान्त एवं ध्येय सीमित नहीं रहना चाहिये कि केवल भौतिक विद्याओं का ही अध्ययन करें, फिर मानवीय पद, प्रतिष्ठा प्राप्त कर डाक्टर, इंजीनियर और वकील बनें एवं उच्च से उच्च पद को प्राप्त कर और फिर विवाह सन्तान भोग करते हुये जीवन को सुखमय बनाने के लिये अधिक से अधिक भोग सामग्री संग्रह करें। सर्वश्रेष्ठ सुखमय जीवन इन्हीं उपरोक्त विचारों से होगा, यह धारणा मन से निकाल दें। क्योंकि ब्रह्मवेत्ता महापुरुषों के अनुभवों से, अध्यात्मिक दृष्टि से, भगवत् सिद्धान्त से, भविष्य में यह हमारे लिये महान दुःखों का कारण होगा ।

हम लोगों को ॐ आनन्दमय भगवान के विधान के अनुसार अपने जीवन को सद्गुण-सम्पन्न सदाचारी ही बनना चाहिये फिर हमारे द्वारा होने वाले सभी कार्य एवं व्यवहार-आचरण-आदर्श श्रेष्ठ होंगे। इससे हमारा अपनों से बड़े पूज्यजनों के प्रति माता-पिता, भाई-बन्धु, इष्ट मित्रों के प्रति अधिक से अधिक सम्मान करने का स्वभाव बनेगा। जीवन में नम्रता सरलता, सहनशीलता, धैर्य, उत्साह आदि अनेकों गुणों के प्रभाव से हमारे अन्दर प्रियता-प्रसन्नता, समता-सन्तोष की प्राप्ति होकर हर समय आनन्द, शान्ति की मग्नता बनी रहेगी। हम अपने

लिये परिवार एवं समाज के लिये हितकारी व भाग्यशाली समझें जायेंगें ।

दूसरों के प्रिय बनने के लिये और अपने प्रिय बनाने के लिये हम लोगों को अपने स्वभाव में सरलता, वाणी में मधुरता, आचरणों में निष्कपटता, सेवाभाव, व्यवहार में नम्रता, प्रियता, प्रसन्नता आदि को अपने अन्दर उदय करना होगा जाग्रत करना होगा तभी काम बनेगा।

श्री गुरुदेव की हितकारी वाणी है कि–

१- अपना हित-चिन्तन करना पाप है ।

२- दूसरे का हित चिन्तन करना धर्म है ।

३- दूसरे का अनिष्ट चिन्तन करना महापाप है ।

सद्गुण-सदाचार सम्पन्न विद्यार्थी ही देश के भाग्य को उदय करने में समर्थ होंगें । प्रेम-प्रसन्नता के त्यागी और चिन्ता-क्रोध के रागी अध्यापक-अध्यापिकाओं द्वारा शिक्षित छात्र-छात्राओं का चरित्र होगा कैसा? तामसी दुर्योधन और सूपनखा के जैसा । ■**ॐ शान्तिमय ।**

।। ॐ श्री समाधिमग्न महापुरुष देव भगवान शरणम् ।।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

भगवन ! मनुष्य शरीर पाकर ॐ आनन्दमय प्रभु पिता का पुरष्कार रूप ध्यान लग जाना अहोभाग्य का विषय है। परन्तु जैसे हीरे की प्रशंसा और आदर जौहरी करता है वैसे ही ध्यान योग की वृद्धि और ध्यानयोग की प्राप्त स्थिति की रक्षा निष्कामी भक्त करता है।

''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'' महामंत्र का विधि-विधान पूर्वक जप करने से और श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ के नियमानुसार पठन-श्रवण से ध्यान तो बहुतों का लगा है। परन्तु मान बड़ाई प्रतिष्ठा की कामना के कारण वे ठहर नहीं सकें? जिन-जिन ध्यान योग अभ्यासी साधकों ने मान-बड़ाई, प्रतिष्ठा की अर्थात् अहं की कामना की है, उनकी श्रद्धा छलनी के सदृश हुई है।

जिन-जिन ध्यानयोग अभ्यासी साधकों ने मान-बड़ाई, प्रतिष्ठा के अहंकार को स्वीकार किया है, उनके भगवत् पद की वृद्धि में रुकावट आयी है।

जिन ध्यानयोग अभ्यासी साधकों ने दूसरे साधकों की मान बड़ाई-प्रतिष्ठा का दर्शन कर ईर्ष्या-द्वेष किया है, वह ध्यान योग से च्युत होकर नष्ट-भ्रष्ट हुए हैं, जिनकी गाथा पूर्व में समय-समय पर सुनाई गयी थी।

अहंकार युक्त जिद्दवाद पूर्वक आज्ञापालन करवाने का आग्रह करना तामसी कर्म है (अ०१८/३२,३५)

अहंकार बुद्धि से प्रेम-पूर्वक अथवा लोभ पूर्वक आज्ञा-पालन करवाने का आग्रह करना राजसी कर्म हैं। (अ०४/४०, १८/६३)।

निरअभिमानता पूर्वक हित भाव से प्रार्थना करना सात्विक कर्म है। (श्री गीता अ० ३/३४, १८/७३)

क्रोधी मनुष्यों की श्रद्धा आदेश दाता बनने में होती है ।

कामी मनुष्यों की श्रद्धा सलाहकारिता में होती है ।

निष्कामी मनुष्यों की श्रद्धा श्री श्रद्धेय देव के आदेश पालन में होती है ।

बड़प्पन भाव का अहंकार टी.बी. के रोग के सदृश खतरनाक है। ममता के भावों को धारण करना पेचिश के रोग के सदृश है कामना के संकल्पों को धारण करना ज्वर के रोग के सदृश है ।

नाराज़गी का दर्शन टी.बी. का दर्शन है । चिन्ता का दर्शन पेचिश का दर्शन है । ■**ॐ शान्तिमय**

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय भगवान की जय ।

ॐ शान्तिमय भगवान की जय ।।

भगवन् ! रहस्य युक्त अपने निश्चित विचार उच्चारण करने की पूजा की जा रही है, जो मनन करने योग्य है–

''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय''

ध्यान अमृत दायक श्री सज्जन स्वरूप हैं जग माहीं, परन्तु कर्म योग के अश्रद्धालु नारी-नर पावत नाहीं ।

भगवन ! क्या कहूँ और क्या बजाऊँ गाल, अपनी दैनिक प्रार्थना ही सच्चे कर्मयोग की निधि है, और दैनिक

प्रार्थना ही सच्ची प्रेम-भक्ति है। यही आनन्दमयी शान्तिमयी माता हर समय भगवत् आनन्द में मग्न रखने की प्रतिज्ञा करवाती हैं।

भगवन् ! मैं औषधि का दर्शन, श्रवण करता रहूँ, और पथ्य-परहेज युक्त औषधि सेवन न करुँ तथा डाक्टर साहब को हाथ जोड़कर कहूँ कि, आप मुझसे धन मान ले लें और मुझे बलशाली बना दें, आपकी बड़ी कीर्ति होगी। इस परिस्थिति में औषधि दाता दयालु जी क्या करें? ■ **ॐ शान्तिमय**

चंचल बालक की क्षमा प्रार्थना युक्त
सादर पुष्पाञ्जलि

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

''प्रचार सेवकों के लिये हितकारी सन्देश''

ॐ श्री समाधिमग्न ब्रह्मपदाधीश, परम पूज्य, परम गुरु भगवान् के विज्ञानमय कोष से प्रकट हुए ब्रह्मज्ञान को उच्चारण करना ॐ आनन्दमय भगवान् की पूजा सामग्री है ।

मच्चिता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम् ।
कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च ।।
(श्री गीता अ० १०/९)

यह निरंहकारी राजविद्या के विद्यार्थी जनों का पाठ है। और यही ब्रह्मपद अधिकारी भक्तों का नित्य कर्म है। हाँ ! ब्रह्मज्ञान उच्चारण कर्ता साधक यदि दिमागी कोश में अपने को श्रेष्ठ प्रसिद्ध करने के विचारों को आदर देता है तो वो निरहंकारी प्रेम विद्या का विद्यार्थी वैसे ही पश्चाताप करेगा जैसे आगाध दल-दल में फँसी हुई अपनी नौका में पाषाण खण्ड भरने वाला पश्चाताप करता है।

ॐ श्री दिमागी शान्ति और आत्मबल के आचार्य देव ने ''**श्री सच्ची प्रेम भक्ति**'' में प्रथम आदेश दिया है । हे प्यारे प्रेमियों ! मेरे ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम रूप को मत भूलो, मुझे सर्वत्र सब रूपों में और अपने हृदय (दिमाग) में मानों ।

हे प्रिय आत्मन् ! दिमागी शान्ति और प्रेम प्रसन्नता वर्द्धक इस दिव्य वाणी के भावार्थ में सब रूपों को ईष्ट स्वरूप भगवान् की मान्यता देकर अभ्यास करना बतलाया है और अपने को श्रेष्ठ मानने का व मैं-मेरे के विचारों का अभाव किया है।

हे प्यारे मन ! श्रेष्ठपन को मान-बड़ाई और पूजा-प्रतिष्ठा के गन्दे फल-पुष्पों को स्वीकार करना है कब?

–ब्रह्मदर्शी पंडित-महात्मा का पद प्राप्त कर लेगें तब ! अन्यथा प्रेम-पात्री नहीं रहने देंगे, कलह पात्री बना देंगे ! हे प्यारे मन ! इस ब्रह्म वाटिका में श्रेष्ठ-कनिष्ट दोनों की समानता का प्रभाव श्री गीता अ०५/१८ में प्रकाशित हैं ।

विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।
शुनि चैव श्वपाके च पंडिताः समदर्शिनः ।।

ॐ श्री सुहृदमय ब्रह्मदर्शी महात्मा की वाणी लेखनी सर्व हितकारी होने का विधान है। उस आनन्दमय ज्ञान सागर की कुछ बूँदें अपने दिमागी कोश को तर करने के उद्देश्य से वाणी द्वारा बरसाते रहना पुनीत सेवा है ।

सावधान

स्वार्थमय जाली ''मैं'' की रक्षा हेतु किए हुए प्रचार-प्रसार आदि कर्म-धर्म जाली सिक्के हैं। इनके फलस्वरूप दण्ड देते हैं कैसा? –श्री गीता अ- ९/१२; १८/३५ के जैसा ।

सत्कार मान पूजार्थं तपो दम्भेन चैवयत् ।
क्रियते तदहि प्रोक्त राजसं चलमध्रुवम् ।।
(श्री गीता अ० १७/१८)

भावार्थ– जो तप, सत्कार, मान, और पूजा के लिए तथा अन्य किसी स्वार्थ के लिए या पाखण्ड से किया जाता है वह अनिश्चित एवं क्षणिक फलवाला तप यहाँ राजस कहा गया है।

''रजसस्तु फलं दुःखम् अशमः'' अर्थात् राजसी कर्मों का फल दुःख अशान्ति ।

■**ॐ शान्तिमय**

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

''जिज्ञासु का समाधान''

हे प्रिय आत्मन् ! आपको ॐ श्री दयामय जी ने दिव्य अहंकार के प्रभाव का और गुप्तचर स्वरूप दुश्मन अहंकार के परिणाम का ज्ञान पठन कराया है । इस ज्ञान का पठन-श्रवण कर जो दिमागी रोगों की रक्षा वृद्धि करने वाले कर्म-धर्मों का त्याग करता है उसको ॐ आनन्दमय प्रभो पिता जी ध्यान अमृत का ज्ञाता, दाता और भोक्ता बनाए रखते हैं जो सर्वश्रेष्ठ है ।

स्मृति रहें ! ध्यान योग के ज्ञाता भोक्ता जिस विधि-विधान से अहंकारी रोगों की चिकित्सा करने के कर्म-धर्म करते है। वही कर्म-धर्म आपके लिए भी आदर्श है। यह वाणी सौ-दो सौ बार ही नहीं हजारों बार मनन विचार करने योग्य है अन्यथा तीर्थों में निवास करेगा अहंकारी रोगों का विकास करेगा । **■ॐ शान्तिमय**

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मनुष्य-जन्म की सफलता किसमें है?

आज के अर्थ-प्रधान भौतिकवादी युग में प्राय: सभी ने पैसा को ही भगवान् मान रखा है । अपने हृदय-पटल पर प्राणों-जैसा स्थान दे रखा है। जिसे शास्त्रों ने अनेक अनर्थों का मूल कहा है, संत लोग जिसे विष्ठा से भी अधिक गंदी मानते है, उसी अनर्थ मूलक विष्ठारूप अर्थ को धन सम्पत्ति को पाने के लिए मानव ने रात-दिन एक कर रखा है। और इसी में अपने जीवन की सफलता-सार्थकता मान बैठा है, मानों अभीष्ट अर्थ की प्राप्ति हो गयी तो भगवान् ही मिल गये ।

परन्तु जिस दिन भगवत्कृपा से आँख खुलेगी, उसी दिन पता लग जायेगा कि यह मल-मूत्र से भी ज्यादा घृणित वस्तु है। एक संत ने कहा है कि– ''जब मनुष्य सब ओर से निकम्मा हो जाता है, उसे नाशवान पदार्थों की वास्तविकता का यथार्थ ज्ञान हो जाता है। तब भगवत् कृपा से वह भगवान् की ओर प्रवृत्त होता है।'' पर आज तो ''पूरे कुएँ में ही भाँग'' पड़ी हुई है। लोग जरा भी नहीं सोचते कि हमने भगवान् की कृपा से यह मनुष्य जीवन पाया, बड़े सौभाग्य से हमें भारतीय संस्कृति की छत्र-छाया मिली ।

क्या ऐसा मौका सबको मिलता है? मानव जीवन में यदि किसी प्रकार धन-दौलत बटोर ही लिया तो क्या हुआ। क्या हमारे साथ एक पैसा भी साथ जायेगा?

अरे, आये तो थे खाली हाथ और सुख-भोगों में आकण्ठ लिप्त होकर महान् नरकों की तैयारी करने लगे हैं, और तो और इसी अर्थ संचयी प्रवृत्ति को हमने समर्पण समझ रखा है, पर क्या समर्पण का 'क' भी हम जानते हैं? नहीं, बल्कि समर्पण की आड़ में नारकी कीड़े का जीवन बना रखा है, हम सबने ।

अब भी समय हमारे हाथ में है, अत: सचेत होकर हम गृहस्थ में रहते हुए भी सन्यासी बन जायें। श्री मद्भगवतगीता में लिखा है कि– ''जो पुरुष न किसी से द्वेष करता है न किसी की आकांक्षा करता है, वह निष्काम कर्मयोगी सदा सन्यासी ही समझने योग्य है, क्योंकि राग-द्वेषादि द्वन्द्वों से रहित हुआ पुरुष सुखपूर्वक संसार रूप बन्धन से मुक्त हो जाता है–

ज्ञेय: स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न कांक्षति ।

निर्द्वन्द्वों हि महाबाहों सुखं बन्धात्प्रमुच्यते ।।

(श्री गीता अध्याय ५ श्लोक संख्या ३)

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

अत: इसी गीता वचन को आदर्श मानकर सुख-दु:खों में समान रहकर हमें भगवत् - मार्ग में चलते रहना चाहिये। यदि कोई यह कहा कि ''मैं बीमार हो रहा हूँ'' तो यह मानना चाहिये कि पाप-प्रायश्चित रूप प्रारब्ध कट रहा है और एकान्त में भजन करने का मौका मिला है।

धन चला जाए तो समझे अच्छा हुआ, हमको त्यागना पड़ता और भगवान् ने स्वयं कृपाकर इससे छुटकारा दिला दिया। अपने बाल-बच्चों को भी यह समझे कि ये भगवान की वस्तु हैं। हमें तो उनसे कुछ भी

नहीं लेना है, वे प्रभु की वस्तु हैं, इसलिए कर्तव्य-सेवामात्र कर देनी है।

यदि भोगों को बटोरने में जीवन लगा रखा है तो जल्दी चेत लें-दिन रात भगवान् की सेवा में लग जायें और निर्मल अन्त:करण में सदैव यह भावना करता रहे कि –

प्रतिपल निज इन्द्रिय-समूह से जो कुछ भी आचार करूँ ।

केवल तुझे रिझाने को, बस तेरा ही व्यवहार करूँ ।।

भगवान् के नाम में– चिन्तन रूप रस में मन को ऐसा डूबा दे कि बस यह स्थिति हो जाये–

जिसमें परम सुखी हों मेरे एकमात्र वे परम श्रेष्ठ ।
वही धर्म है, वहीं कर्म है, वहीं एक कर्तव्य श्रेष्ठ है ।।

यह मानव-जीवन का उद्देश्य है :–

भगवत्प्रेमियों का संग ज्यादा से ज्यादा करना चाहिये, क्योंकि यदि भूलकर भी उनके हृदय की तरंग का एक छींटा हम पर पड़ जाये तो हम निहाल हो जायेंगे। यदि हम क्रमश: पापों को छोड़ते जायें और भगवत्सम्बन्धी वस्तु को जीवन में बढ़ाते जायें तो असली धनवान् बन जायेंगे । जहाँ एक को घटाकर नष्ट कर देना है, वहीं दूसरों को बढ़ाकर जगत् के कण-कण में व्याप्त कर देना है ।

भगवान् और उनके भक्तों का मिलना किसी साधन का फल नहीं अपितु सन्तों की कृपा एवं सत्संगति का ही परिणाम है और सन्त तो भगवान् की कृपा से ही मिलते हैं ।

गोस्वामी जी ने लिखा है :–

बिनु हरिकृपा मिलहिं नहिं संता ।।

(रा०च०मा० ५-७-४)

यदि असली संत, मिल जायं तो यह समझना चाहिये कि भगवान् की कृपा हो चुकी है ।

और भक्त की कृपा से भगवान् मिलते हैं। निम्न दोहा यदि जीवन में घटने लगे तो समझना चाहिये कि हम भगवान् की ओर बढ़ रहे हैं :–

आनन्दमय प्रभु भजन में, यह पाँचों न सुहात ।
विषय, भोग, निद्रा, हँसी, जगत प्रीति, बहु बात ।।

इस प्रकार सच्चे संतों एवं भगवत् भक्तों में पूर्ण निष्ठा रखते हुए अपने समस्त कर्मों को भगवदर्पित कर भगवान् का ही आश्रय ग्रहण करना चाहिये। इसी में मानव-जीवन की सार्थकता-सफलता एवं पूर्णता है। इसके अतिरिक्त सर्वत्र अपूर्णता-ही-अपूर्णता है, फिर अनर्थकर धन-दौलत रूप अर्थ से तृप्त ही कौन हुआ है ?

''न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः ।''

■ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री योगाचार्य देव जी के अमृतोपदेश

मानव जीवन के चरम लक्ष्य की प्राप्ति संतपुरुषों के संग से सुगम है

समय बीता जा रहा है, चेतना चाहिये। हमलोग जिस काम के लिये आये थे, उसे करना चाहिये। मनुष्य का जन्म सब दु:खों के अभाव, परम शान्ति एवं परमानन्दस्वरूप परमात्माकी प्राप्ति के लिए ही मिला है। इसी को मुक्ति, परमपद की प्राप्ति, आत्मोद्धार आदि नामों से कहा गया है। अत: इसकी प्राप्ति के लिये तत्परता के साथ प्राणपर्यन्त चेष्टा करनी चाहिये, क्योंकि यह मनुष्य-जन्म के अतिरिक्त दूसरी किसी योनि में सम्भव नहीं।

संसार में कोई भी प्राणी दु:ख नहीं चाहता, बाध्य होकर सबको दु:ख भोगना पड़ता है। फिर भी लोग दु:ख निवृत्ति के लिये उचित प्रयत्न नहीं करते। सभी सुख चाहते हैं, किन्तु वास्तविक सुख की प्राप्ति के लिये कोई सच्चा प्रयत्न नहीं करता, अत: उससे वंचित रहते हैं। इसलिये हम लोगों को प्रात: काल और सायंकाल दैनिक प्रार्थना जप, ध्यान, पूजा-पाठ, स्वाध्याय आदि अर्थ और भाव को समझकर श्रद्धाभक्ति पूर्वक निष्काम भाव से करना चाहिये। व्यवहार काल में ॐ आनन्दमय भगवान के नाम और स्वरूप को हर समय याद रखते हुए भगवान्

की आज्ञा के अनुसार सबके साथ स्वार्थ का त्याग करके सत्यता और समतापूर्वक व्यवहार करना चाहिये।

रात्रि में सोने के समय संसार के व्यर्थ संकल्पों के प्रवाह का सर्वथा त्याग करके ॐ आनन्दमय भगवान् के नाम, रूप, गुण प्रभाव तत्व, रहस्य और लीला का मनन करते हुए ही शयन करना चाहिए। दुर्गुण, दुराचार, दुर्व्यसन, दुर्व्यवहार, निद्रा, आलस्य, प्रमाद, शोक, मोह, भय और राग-द्वेष को विष के समान समझकर सबका सर्वथा त्याग कर देना चाहिये एवं सद्गुण, सदाचार, भक्ति, ज्ञान और वैराग्य को अमृत के तुल्य समझकर इनका सेवन करना चाहिये। उपर्युक्त सब काम सत्पुरुषों के संग से ही सुगम है। जिनके संग से हम लोगों में दैवी सम्पदा के लक्षणों का प्रादुर्भाव हो, वे ही हमारे लिये सत्पुरुष हैं।

महात्माओं का प्रभाव श्रद्धा से ही जाना जा सकता है

महात्माओं की शक्ति अपरिमित है, मनुष्य की धारणा परिमित है। उसका वास्तविक रूप देखने में नहीं आ सकता, वे बताते भी कम हैं। वह युक्तियों से भी समझ में नहीं आता, क्योंकि वहाँ युक्ति भी नहीं चलती। तर्क के विषय में भी यही बात है। केवल श्रद्धा के द्वारा उसका ज्ञान सम्भव है। परमात्मा का रूप भी श्रद्धा पर ही निर्भर करता है। तर्क पर कसने से तो परमात्मा भी बाधित हो सकते हैं, किन्तु परमात्मा का अस्तित्व हमारे न मानने से मिटेगा नहीं। इसी प्रकार महात्माओं का प्रभाव भी हम नहीं मानेंगे तो मिट थोड़े ही जायेगा। ॐ आनन्दमय भगवान् का और महात्माओं का एक सा ही प्रभाव है। पर वैसी हमारी श्रद्धा नहीं है। इसीलिये श्रद्धा की महिमा बतायी है–

''श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्'' (गीता ४/३६)

''श्रद्धामयोऽयं पुरुषों यो यच्छ्रद्धः स एवं सः।'' (गीता १७/३)

जिस प्रकार वक्ता की वाणी एवं समय सब एक होने पर भी भाव के अनुसार उसके अर्थ-ग्रहण में भेद हो जाता है, उसी प्रकार महात्मा के प्रति भाव-भिन्नता के कारण उनसे मिलने वाले लाभ में भी तारतम्य हो जाता है। इसी से श्रद्धा का महत्व है। अश्रद्धालु को व्याख्यान से जो लाभ नहीं होता, श्रद्धालु को महात्मा की आकृति के दर्शन मात्र से ही उसकी अपेक्षा लाभ हो जाता है। विशेष श्रद्धा वाले को महात्मा की भाव-भंगिमा, मुद्रा को देखकर, मुद्रा की स्मृति से ही लाभ हो जाता है। वर्षा का जल समान रूप से बरसता है, पर पात्र के अनुसार उसके नाना भेद हो जाते हैं, वह सीप पर बरसने से मोती और साँप पर बरसने से जहर हो जाता है। इसी प्रकार महात्मा की विभिन्न क्रिया एवं व्यवहार का भी जैसी श्रद्धा होती है, वैसा ही फल होता है।

श्रद्धालु की दृष्टि में महात्मा की प्रत्येक क्रिया कल्याण कारिणी होती है। अपने भाव के अनुसार हम महात्मा को देखते हैं- कोई महात्मा को ढोंगी कहता-समझता है, कोई स्वार्थी और कोई मान-बड़ाई चाहने वाला तथा कोई पागल भी समझता है। इसी प्रकार श्रद्धा के तारतम्य से श्रद्धालुओं की मान्यता में अन्तर होता है। कोई कहता है– इनकी प्रत्येक क्रिया हम लोगों के कल्याण के लिये ही है। दूसरा कहता है– ये कल्याण रूप ही है। तीसरा कहता है– ये तो हम लोगों के कल्याण के लिये ही यहाँ आये हैं। पर महात्मा पर इन मान्यताओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

महापुरुषों का लीला-रहस्य यदि थोड़ा भी समझ में आ जाये, तो वे जो भी क्रिया करें- उनका खाना-पीना, बोलना-चलना आदि सब में उपदेश भरा रहने के कारण वे सब भी हमारे लिये आकर्षण की वस्तु हो जाती हैं। उनके प्रत्येक व्यवहार में प्रेम और रहस्य भरा है। यह समझ में आने के साथ ही उनकी सारी क्रिया इतनी आनन्द दायक हो जाती है कि हम उसे देख-देखकर आल्हादित होते रहते हैं। फिर हमारा आनन्द समाता ही नहीं।

जिसमें जितनी श्रद्धा होती है, उतना ही वह महात्मा के रहस्य को समझ पाता है तथा जितना रहस्य समझ में

आता है, उतना ही उसका परिवर्तन हो जाता है। श्रद्धालु की सारी क्रियाएँ अपने श्रद्धेय की रूचि के अनुसार स्वाभाविक ही हुआ करती हैं। ठीक उसी प्रकार जैसे मनुष्य जिधर जाता है, उसकी छाया पीछे-पीछे चलती है। महात्मा के तत्वका ज्ञान होने पर हमारी भी क्रिया उसी तरह होने लगेगी। अपना कोई मन ही नहीं रहेगा, जिसके अनुकूल-प्रतिकूल हो। श्रद्धालु का मन श्रद्धेय के अधीन हो जाता है, उसकी फिर निज की इच्छा रहती ही नहीं। जब निज की इच्छा ही नहीं रही, तब अनुकूलता-प्रतिकूलता कैसी? कठपुतली की अनुकूलता-प्रतिकूलता का कोई प्रश्न ही नहीं बनता। जिसकी ऐसी स्थिति स्वाभाविक हो जाती है- वही उसकी फलरूप अवस्था है। आरम्भ में तो अभ्यास करना पड़ता है, फिर यह अवस्था स्वाभाविक हो जाती है। श्रद्धालु को महात्मा की प्रत्येक क्रिया आनन्द दायक ही दीखती है। महात्मा के साथ जिन चीजों का संसर्ग हो जाता है, उनके द्वारा कोई वस्त्र भी छुआ जाता है तो श्रद्धालु को उसके भीतर अलौकिकता प्रतीत होने लगती है।

एक श्रद्धालु महात्मा को देख रहा है, दूसरा भी देख रहा है। दोनों के देखने में अन्तर नहीं है, पर अध्दालु के नेत्र वे ही होते हुए भाव दूसरा होने से वह दूसरी दृष्टि से देखता है। महात्मा को स्पर्श करके जो हवा चलती है, उस हवा के लगने से वह मुग्ध हो जाता है। वही हवा दूसरों को भी लगती है, पर उनको वैसी अनुभूति नहीं होती। नदी बह रही है, हम लोग वहाँ स्नान कर रहे हैं। महात्मा को छूकर जो जल आ रहा है, वह जल श्रद्धालु को स्पर्श करता है तो वह उसे गंगा जल से भी बढ़कर समझता है तथा उसे इसका अनुभव होता है। महात्मा से स्पर्श की हुई धूलि को भी वह दूसरी दृष्टि से देखता है। अक्रूर भगवान की चरण धूलि को देखकर रास्ते में कूद पड़े। और लोग भी उसी रास्ते से जाते थे, पर उन्हें धूलि में कोई विशेषता नहीं दिखाई दी। अक्रूर जी को विशेषता दिखायी दी और वे उस धूलि में लोटने लगे। श्रद्धालु को ऐसी ही अलौकिकता दिखायी देती है, चाहे अपने अनुभव को वह समझा न सकें।

महात्मा जब श्रद्धालु को छू देता है तो उसके सारे शरीर में प्रेम और आनन्द से इतनी विहलता हो जाती है कि वह बेसुध हो जाता है। छूने के साथ ही सारा शरीर प्रेम से ऐसा हो जाता है कि वह उसे सँभाल नहीं सकता। भाव अलौकिक चीज है। ॐ आनन्दमय भगवान् की प्राप्ति भाव से ही होती है। ॐ आनन्दमय भगवान् न काठ में हैं, न मिट्टी में है और न पत्थर में ही हैं। जहाँ भाव है, वही ॐ आनन्दमय भगवान् हैं। सभी चीजों में यही बात है- भाव ही प्रधान है। इसलिये महात्माओं में, सत शास्त्रों में जिस प्रकार से हमारी श्रद्धा हो, भाव हो, वही प्रयत्न हमें करना चाहिये।

■ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

भगवन् ! ॐ श्री विधानाचार्य देव जी के मंगलकारी उपदेश, आदेश और आज्ञाओं की स्मृति हेतु श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग-१ पृष्ठ सं० १३ से १६ तक प्रकाशित ७ नियमों को जनना आवश्यक है, जो मनन-विचार पूर्वक श्रवण करके पालन करने योग्य है।

भगवन् ! वर्तमान समय में इन सात आज्ञाओं की अवहेलना कर जो नारी-नर, अन्य-अन्य साधनों द्वारा दिमागी आनन्द-शान्ति और शक्ति की अभिलाषा कर रहे हैं, उनके सभी धर्म-कर्म श्री गीता अ० ९/१२ के अनुसार व्यर्थ हो रहे हैं।

स्मृति रहे ! श्री समाधिमग्न ब्रह्मपदाधीशों की प्रज्ञा-बुद्धि आठ सिद्धियों की दाता है, और सभी मनुष्यों की बुद्धि वैरी-दुश्मनों की निर्माता है। अत: हमें ब्रह्मपदाधीशों की प्रज्ञा-बुद्धि अनुसार कर्म करके ही अपना जीवन श्रेष्ठ बनाना चाहिये। अर्थात् पृष्ठ १३ से १६ तक प्रकाशित सात आज्ञाओं को विधिवत पालन करने का अभ्यास करना चाहिये।

■ॐ शान्तिमय ।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय दण्ड का और पद का विधान

हे श्री आनन्दमय प्रभु पिता जी आप इस हितमयी ब्रह्म-वाटिका के निर्माता हैं, स्वामी हैं, मालिक हैं, और शासन-कर्त्ता न्यायकारी हैं। आप अपने आज्ञाकारी नारी-नरों को ध्यान अमृत पान कराकर अपना तेजोमय परम-पद भी प्रदान करते हैं। अब हम सभी नारी नरों के लिये क्या आदेश है? हमारा क्या कर्त्तव्य है?

१- हे प्रिय आत्मन् ! मेरा परमार्थ मुख्य आदेश श्री गीता अ०-२ श्लोक ४७ से ५१ तक प्रकाशित है।

श्लोक –

कर्मण्ये वाधिकारस्ते मां फलेषु कदाचन ।

मां कर्म फल हेतुर्भूर्मा ते संङ्गोऽस्त्वकर्मणि ।।

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्ग त्यक्त्वा धनञ्जय ।

सिद्धयसिद्धयो समोभूत्वा समत्वं योग उच्यते ।।

अर्थ :–

हे भक्तों ! तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं, इसलिये तू कर्मो के फल हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो।

हे भक्तों ! आसक्ति को त्याग कर तथा सिद्धि और असिद्धि में समान बुद्धिवाला होकर योग में स्थित हुआ, कर्त्तव्य कर्मों को कर। यह समत्व ही योग कहलाता है।

२- हे प्रिय आत्मन् ! मैं प्राणी मात्र के योग्य वनस्पति तैयार करता हूँ, मेरे आज्ञाकारी जन भी स्वास्थ्य हितकारी कन्दमूल फलफूल, अन्न-शाक आदि भोजन की सामग्री तैयार करें, और उनके द्वारा ब्रह्मवाटिका की सेवा पूजा करें।

३- अपनी इन्द्रियों द्वारा देह और दिमाग को रोगी बनाने वाले कर्म न करें, अपने इष्टदेव को याद रखें, स्वार्थ मूलक लड़ाई-झगड़ों का त्याग करें।

४- श्री गीता पाठक मुझे ॐ ईश्वर आदि कहते हैं और कुरान-पाठकों ने मुझे अल्लाह कहा है। उपनिषदों में मुझे ॐ आननन्दमय कहा है, परन्तु मेरा स्वरूप एक ही है जिसे अनेक नामों से सम्बोधित किया जा रहा है। सबके लिये स्वार्थमय अहंकारी पापों का प्रायश्चित करने का एक ही विधान है, जो समत्वम् योग के नाम से श्री गीता अ० २/श्लोक ४७-४८ में प्रकाशित है। इस परमार्थमयी तपस्या का परम-फल श्री गीता अ०२, श्लोक ५१ में प्रकाशित है।

''जन्म-बन्ध विर्निमुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम्''

■ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय भगवान का भक्त

भगवान का भक्त निर्भय होता है; क्योंकि वह सम्पूर्ण जगत में अपने सच्चे प्रेमी सखा की मनोहर मूर्तिका दर्शन करता हुआ सर्वदा उसे गले लगाने को तैयार है ।

भगवान का भक्त अदम्भी होता है; क्योंकि वह ॐ आनन्दमय भगवान को घट-घट-व्यापी देखता है । इससे उसके अन्दर-बाहर भेद नहीं रह सकता।

भगवान का भक्त अक्रोधी होता है; क्योंकि वह सारे जगत् में अपने एक ॐ आनन्दमय भगवान को ही देखता है, फिर किस पर कैसे क्रोध करें?

भगवान का भक्त निरअभिमानी होता है; क्योंकि वह अपना सारा अभिमान अपने प्रभु के चरणों में समर्पण कर चुकता है; उसके पास अभिमान बचता ही नहीं।

भगवान का भक्त अकामी होता है; पूर्ण काम की प्राप्ति से उसकी सारी कामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं।

भगवान का भक्त निर्लोभी होता है; क्योंकि उसकी दृष्टि में अपने ॐ आनन्दमय भगवान के अतिरिक्त अन्य कोई लोभनीय वस्तु रहती ही नहीं।

भगवान का भक्त सदा परम सुखी रहता है; क्योंकि

वह परमसुखरूप परमात्मा में अपना अस्तित्व मिलाकर वैसा ही बन जाता है।

भगवान का भक्त निर्मोही होता है; क्योंकि परम मायावी की शरणागति से उसकी विद्या का मर्म समझने के कारण माया का कोई कार्य उसे मोहित नहीं कर सकता ।

भगवान का भक्त निरंहकारी होता है; क्योंकि वह अपने ॐ आनन्दमय भगवान के 'अहं' में अपने 'अहं' को सर्वथा मिटा देता है।

भगवान का भक्त परम प्रेमी होता है; क्योंकि वह परमात्मा के परमप्रेमी स्वभाव को पा चुकता है।

■ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

सन्त वचन

जीवन के उद्देश्य को जानने वाला ही मानव कहलाने का अधिकारी है। वास्तविक उद्देश्य आत्म साक्षात्कार है।

जीवन के सुअवसर को व्यर्थ विवाद अथवा व्यसनों में खो बैठना मूर्खता की पराकाष्ठा समझना चाहिये।

जीवन में एक ॐ आनन्दमय भगवान की उपासना से व्यष्टि को समष्टि में मिलादें यही मानवता की पूर्णता है। जीवन को श्रेष्ठ एवं प्रशंसनीय बनाने के लिये श्री विश्वशान्ति शास्त्र के उपदेशों को व्यवहार में लाना चाहिये।

जीवन में जो अहर्निश साथ देता है वही हम सबका अभिन्न सखा है। वह है परम सुहृद परमेश्वर जीवन को उज्जवल, तेजस्वी एवं प्रकाशमय बनाने वाला। वर्चस्वी जीवन ही वास्तविक जीवन है।

जीवन में विघ्न-बाधाएं आती रहती हैं, उन्हें संघर्ष स्वीकार करते हुये आगे बढ़ना चाहिये। विघ्न-बाधाओं में उलझकर हतोत्साहित हो जाना पुरुषार्थ नहीं है।

जीवन सुसंग से सुधरता है और कुसंग से ही अवनति को प्राप्त होता है अत: संग समझकर करें। जीवन में महान बनना कठिन है, पर परिश्रम से सफलता साध्य है। संयम और साधना महान बनाते हैं।

जीवन इस विश्व-वाटिका का अनोखा पुष्प है– जो विषयों के आतप से मुरझा जाता है। जीवन में नित्य नये मित्र ॐ आनन्दमय अनुरागी बनाना अच्छा है, पर एक भी शत्रु बनाना बुरा है।

जीवन की अन्तिम परीक्षा एक ही बार होती है– जिसका फल अच्छे बुरे कर्मों पर निर्भर करता है। जीवन में किसी को अहंकारी बुद्धि द्वारा आज्ञा देना न सीखकर स्वयं ॐ आनन्दमय प्रभु की आज्ञा पालन करना सीखो। तभी महान बनोगे।

जीवन सुख की खान है, किन्तु उसको खोदकर सुखरत्न की निधि निकालने की विधि सीखनी होती है। जीवन में विषय सुख को वैसा ही समझो जैसा दाद का खुजलाना-प्रथम क्षणिक आनन्द फिर असहनीय वेदना। जीवन दूसरों के सेवार्थ एवं अपने धर्माधर्म कर्मफल भोगार्थ समझना चाहिये।

जीवन में अनेक उलझनें आयेंगी, उनसे सुलझने का एक मात्र उपाय सत्पथ का अनुसरण करना है।

सत्पथ क्या है? सच्ची प्रेम भक्ति में विधान को पढ़ें।

जीवन समाप्ति से पूर्व ही बुद्धिमान अपने सच्चे ध्येय की पूर्ति कर लेता है। जीवन को तुच्छ स्वार्थों में लगाकर सच्ची मानवता को गर्त में डालना है। अत: खोटे स्वार्थ से बचो। जीवन में दूसरों को सुधारने से पूर्व अपने मार्ग के काम-क्रोधादि दुष्कण्ड को दूर करो।

जीवन सुख-शान्ति, प्रकाशमय तभी होगा जब अशान्ति और अज्ञान का समूलोच्छेद होगा। यह सम्भव है– साधन से, सत्संगति से।

जीवन का निर्माण स्वयं के हाथ में है, पवित्रात्मा एवं पापात्मा निर्णय कर्तव्यानुसार होता है। जीवन में न्याय का अपमान न करना ही वीरता है। न्याय का निर्णय शास्त्रों में है।

जीवन में कामना-पूर्ति की घृणित लिप्सा को त्याग दो। कामना पूर्ति की लिप्सा अत्यंत गर्हित होती है। जीवन में सबके विश्वासपात्र बनो, पर किसी के साथ विश्वासघात मत करो। विश्वासघात महाघातक है।

जीवन की समाप्ति होने से पहले ही भूल सुधार लें।

■ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

''सर्वोत्तम-सर्वहितकारी ज्ञान''

मनुष्य को चाहिये कि वह अपने स्वभाविक नीयत कर्म में तत्पर होकर श्रद्धा; प्रेम से लगा रहे, प्रतिकूलता में सहनशीलता और धैर्य से काम ले, शनैः-शनैः सब व्यवस्था ॐ आनन्दमय प्रभु पिता सात्विक बना देते हैं, परन्तु जो उच्छ-श्रृंखलता को धारण करके जल्दी करता है वह भाव अच्छा होता हुये भी कष्ट उठाता है, जैसे बीज को बो देने पर धीरे-धीरे पत्र-पुष्प फल निकलता है, ऐसे ही सात्विक भावनायें शनैः-शनैः पूर्ण होती हैं, जो प्रेमी भावनाओं का तुरन्त फल देखना चाहता है, वह धोखा खाता है, और सब प्रकार के विक्षेप पैदा हो जाने से या तो श्रद्धा रूपी अंकुर ही नष्ट हो जाता है, या मुख्य शाखा पर गहरी चोट आने से पौधे का प्रतिदिन बढ़ना रूक जाता है, और कोई-कोई मानसिक रोग भी लग जाते हैं।

अतः मनुष्य को चाहिये कि वह ॐ आनन्दमय भगवान के विधान पर सन्तुष्ट रहे, कामना, अहंता, ममता का त्याग करके, स्वार्थ के भावों को दूर हटाता रहे, तो समय पर अपने आप रस-पूर्ण फल निकलेगा, जैसे कोहड़े की बेल पर फूल आता है, तो यदि हम उसे तोड़ लेगें या छेड़छाड़ करेंगे, तो आगे फल का बढ़ना रूक जायेगा या सड़ जायेगा, परन्तु समय पर वह फूल अपने आप पूर्ण हो जायेगा, तो बहुत बड़ा फल बीजों सहित तैयार हो जायेगा।

ॐ आनन्दमय भगवान की शक्ति सर्वत्र है, अतः जहाँ जिस अवस्था परिस्थिति में हों, वही अधिक से अधिक आहार व्यवहार सेवा-स्मरण बनाने की चेष्टा करते रहना चाहिये, पहले स्थिति परिवर्तन की चेष्टा न करें, अपने आप क्लास बदल जायेगी।

■ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री विधानाचार्य देव जी के अमृतोपदेश

मनुष्य जीवन का समय अमूल्य है। उसकी कीमत नहीं आँकी जा सकती। परमात्मा की प्राप्ति मनुष्य-शरीर में ही हो सकती है जिससे मनुष्य सदा के लिये मुक्त हो जाता है, शान्ति की प्राप्ति हो जाती है। अन्य किसी भी योनि में परमात्मा की प्राप्ति का अधिकार नहीं है। यदि कहीं है तो वह अपवाद है। मनुष्य-योनि मिलना परमात्मा की विशेष दया है। हम लोग मनुष्य हैं तो उसका लाभ उठाना चाहिये। जिस मनुष्य जीवन में क्षणभर में परमात्मा की प्राप्ति हो सकती है ऐसे मनुष्य-जीवन को पाकर जो परम लाभ नहीं उठाता उसे आगे जाकर घोर पश्चाताप करना पड़ेगा।

जो न तरै भव सागर नर समाज अस पाइ।
सो कृत निदंक मंदमति आत्माहन गति जाइ ।।

जो ऐसे साधनों को पाकर भवसागर के पार नहीं जाता, वह मन्दमति है और आत्म हत्यारों की दुर्गति को प्राप्त होता है। यही क्यों–

सो परत्र दुःख पावइ सिर धुनि-धुनि पछिताइ।
कालहि कर्महि ईश्वरहि मिथ्या दोस लगाइ ।।

वह आगे चलकर घोर पश्चाताप करेगा। काल, कर्म, ईश्वर को झूठा दोष लगावेगा। वास्तव में उन पर दोष लगाना झूठा है। इससे कुछ मिलेगा नहीं, हम लोगों को अभी से सावधान होना चाहिये। भगवत-प्राप्ति का अन्तिम क्षण तो एक ही है, अतः भगवत-प्राप्ति का मूल्य मानव जीवन का एक क्षण है।

हमें ऐसा मौका पाकर लाभ उठाना चाहिये, मौका सदा ऐसा रहता नहीं। पीछे पछताने से क्या होगा ! यह देखकर भी साधन में तत्परता न हो तो अश्रद्धा के सिवा क्या है ! श्रद्धा हो तो हानि कैसे बर्दाश्त कर सकता है। ईश्वर ने बुद्धि दी है तो लाभ उठाना चाहिये। विचार के द्वारा सोचना चाहिये कि क्या हमारा कर्तव्य ठीक है तुम्हारी आयु समाप्त होने के बाद क्या है। यहाँ की चीज फिर तुम्हारे काम आयेगी नहीं। इसलिये जो करना है,

उसे पहले ही कर लो। धन सम्पत्ति का संग्रह संसार के कल्याण के लिये, करते हो तो ठीक है, बहुत अच्छा है। अपने लिये करते हो तो ठीक नहीं है। तुम्हारा शरीर भी तुम्हारे साथ नहीं जा सकेगा। इसलिये जो भी तुम्हारे अधिकार में है उसका उत्तम से उत्तम उपयोग कर देना चाहिये। ईमानदारी के साथ तुम्हारे ऊपर विश्वास करके प्रभु ने तुमको चीजें दी हैं। ऐसे प्रभु के साथ विश्वासघात नहीं करना चाहिए, नहीं तो चोरी का दण्ड मिलेगा। जितने पदार्थ हैं, जिनके तुम मालिक समझे जाते हो, उनका सदुपयोग करना चाहिये। परमात्मा की प्राप्ति में लगाना ही उनका सदुपयोग है, नहीं तो दुरुपयोग है। वाणी का प्रयोग (श्री गीता-१७/१५) के अनुसार करना चाहिये। यदि वाणी का प्रयोग इस प्रकार है तो सदुपयोग है। नहीं तो दुरुपयोग है। इसी प्रकार हाथ सेवा के लिये है अथवा भगवान् की, महापुरुषों की, गुरुजनों की सेवा के लिये है। अभावग्रस्त और पूज्य दो ही पात्र हैं। किसी प्रकार से बड़े हैं, वे पूज्य हैं। शरीर के द्वारा सेवा करना शारीरिक तप है (श्री गीता-१७/१४)। इस प्रकार कानों के द्वारा भगवान् की बातें सुननी चाहिये। परमात्मा की प्राप्ति के बहुत ही उपाय बतलाये गये हैं-

१- केवल भगवान् में प्रेम,
२- भगवान् में श्रद्धा,
३- भगवान् का ध्यान,
४- भगवन् की प्रेम से पूजा,
५- निष्काम भाव से सेवा,
६- परमात्मा का स्मरण,
७- अनन्यशरण,
८- सत्पुरुषों का संग करके आज्ञापालन और
९- निष्काम-भाव से गीतादिका अध्ययन ।

ये सभी श्रेष्ठ हैं। यथा शक्ति सभी को करना चाहिये। नहीं तो यह मौका तो फिर मिलने का नहीं। पश्चाताप करने से गरज नहीं सरेगी, बुद्धि का लाभ उठाना चाहिये। बुद्धि के द्वारा परमात्मा के स्वरूप का निश्चय करके परमात्मा की प्राप्ति का प्रयत्न करना चाहिये। हमारे कल्याण के लिये हमारी बुद्धि और विवेक पर्याप्त हैं हमें पात्र बनना चाहिये। पात्र बनने पर क्षणमात्र में प्राप्ति हो जाती है। जैसे बिजली फिट हो जाने पर जल जाती है और प्रकाश हो जाता है, उसी प्रकार ईश्वर पर जैसी श्रद्धा हम करेंगे वैसी श्रद्धा ईश्वर करेंगे। लाख काम को छोड़कर इस काम को करना चाहिये। इस काम की कमी रहने में बहुत दुर्दशा है। मनुष्य शरीर के चले जाने पर क्या है। चित्त में खूब वैराग्य रखना चाहिये। मन को परमात्मा के मनन-चिन्तन में लगाना चाहिये। मन का दुरुपयोग न होकर सदुपयोग होना चाहिये। हम लोग मन के अधीन हैं। मन हमारे अधीन होना चाहिये। मुक्ति और बन्धन में मन ही कारण है। मानसिक तप करना चाहिये। (श्री गीता-१७-१६) ईश्वर दया का, प्रत्येक कार्य में दिग्दर्शन करना और प्रसन्न होना चाहिये। मन चन्द्रमा के समान सौम्य होना चाहिये। हृदय के भाव पवित्र होने पर कल्याण में विलम्ब नहीं होता।

सार-सार बातें बतलायी जाती हैं। हम लोग बहुत दिनों से परमात्मा की प्राप्ति की चेष्टा कर रहे हैं। परन्तु परमात्मा की प्राप्ति बहुतों को हुई नहीं। अपनी जान में बहुत प्रयत्न करते हैं। परन्तु हमारी दृष्टि में बहुत कमी है। विशेष बाधक है-पदार्थों में, भोगों में, शरीर, कामिनी, मान, बड़ाई, प्रतिष्ठा में आसक्ति। आसक्ति के कारण इनकी इच्छा पैदा होती है। इस कारण संसार के विषय भोगों में ममता हो जाती है। आकर्षण हो जाता है, जिससे मनुष्य विषयों में डूब जाता है, जैसे दलदल में गाय। वह आखिर में तड़प-तड़पकर मरती है। पतंगे दीपक की चमचमाहट देखकर सुख समझकर जाते हैं और तड़प-तड़पकर मरते हैं। यही दशा विषयासक्त पुरुषों की है। हमको सब प्रकार से आसक्ति का त्याग कर देना चाहिये। पहले तो रुपयों का लोभ डुबो देता है। रुपयों को महत्व देना बहुत खराब है। विषयासक्त पुरुष महत्व देता ही है। चित्त में वैराग्य हो तो इन चीजों को त्याग देता है। तीव्र वैराग्यरूपी शस्त्र के द्वारा इन फाँसियों को काटा जा सकता है। (श्री गीता १५/३) के उत्तरार्ध में कहते हैं–

अहंता, ममता, वासना, कामना आदि दृढ़ मूल हैं। दृढ़ (तीव्र) वैराग्य के द्वारा मनुष्य इन्हें काट सकता है। संसार वृक्ष को काटना है। इसके बाद उस पद का अन्वेषण करे, जहाँ से वापस नहीं आवे। उसका उपाय है कि मैं परमात्मा की शरण हूँ। कौन परमात्मा, जिससे इस संसार की प्रवृत्ति हुई है। संसार में सुख-बुद्धि के कारण आसक्ति है। भोगों में सुख-बुद्धि अज्ञान के कारण हैं। मूर्खता से सुख प्रतीत होता है। सुख मानकर जीव फँस जाता है। फिर जाल में फँसी हुई मछली की भाँति तड़प-तड़प कर मरता है। गीता अ०५ के श्लोक २२ में भगवान् कहते हैं– 'इन्द्रिय विषयों का सम्बन्ध संस्पर्श है। उससे उत्पन्न होने वाला संस्पर्शज सुख है। वह आरम्भ में अमृत के समान परिणाम में विषय के समान है। ये सुख दु:ख के हेतु आदि अन्त वाले हैं। उनमें विवेकी नहीं फँसते हैं। अविवेकी (मूर्ख) फँस जाते हैं। मनुष्य को किसी प्रकार के बड़प्पन और पद को महत्व नहीं देना चाहिये। मैनेजर, कलैक्टर आदि के पद का अपने मन में आदर नहीं करना चाहिये। दूसरे के पद का आदर करना चाहिये। किसी प्रकार का अभिमान नहीं करना चाहिये। अपने मन में धन, इज्जत, कुटुम्ब, बल, रूप आदि को आदर नहीं देना चाहिये। अभिमान से बहुत दूर रहना चाहिये। इन नाशवान पदार्थों को महत्व नहीं देना चाहिये, जैसे धन, विद्या, पद, शरीर, बल, गुण, आचरण या कोई अच्छापन है तो उसे महत्त्व नहीं देना चाहिये। इतने दिनों तक परमात्मा की प्राप्ति नहीं हुई, ऐसा मानकर निराश भी नहीं होना चाहिये। इसके लिये बहुत समय की आवश्यकता नहीं है। परिश्रम नहीं है, समझने की आवश्यकता है। भीतर की स्वार्थ बुद्धि का त्याग करना चाहिये। आपके मन में रुपयों का आदर है तो भगवान् आपसे बहुत दूर हैं। रुपयों का दास भगवान् का दास नहीं हो सकता। जहाँ काम है वहाँ राम नहीं है। मान, बड़ाई, प्रतिष्ठा के लिये हमको न इच्छा करनी चाहिये, न प्राप्त होने पर आदर ही। रुपयों को महत्त्व देना जैसे हानिकर है वैसे ही मान, बड़ाई, प्रतिष्ठा को महत्त्व देना भी । मान, बड़ाई प्रतिष्ठा हो ऐसा काम तो करना चाहिये, पर उसे छूना नहीं। मान, बड़ाई प्रतिष्ठा से शरीर में जो आसक्ति है वही खतरे की चीज है। इसको त्याग कर घर में रहो, चाहे उजाड़ में। आसक्ति जब तक है तबतक भगवान् से बहुत दूर हैं चाहे आप गृह छोड़कर चले जाओ। चित्त में वैराग्य हो जाने पर चाहे आप घर में रहो या संन्यास-आश्रम में। राजा जनक को संन्यास लेने की तात्त्विक बात उनकी स्त्री ने समझायी। राजा जनक ने संन्यास लेने का तत्व नहीं समझा था, क्योंकि आसक्ति नहीं है तो चाहे जहाँ रहो। वैराग्य न हो तो संन्यास-आश्रम में मुक्ति नहीं है। तब राजा जनक ने संन्यास का विचार उठा दिया। चित्त में वैराग्य प्रधान चीज है। वैराग्य होने पर चाहे जहाँ रहे, उसे भय नहीं है। वैराग्य, ईश्वर प्रेम, ईश्वर का ज्ञान असली चीज है। ज्ञान मार्ग में परमात्मा के तत्व का ज्ञान होता है। परमात्मा सत् - चित् - आनन्द स्वरूप हैं। उनको छोड़कर मिथ्या का आदर होना मूर्खता है। भक्ति में भगवत प्रेम होना चाहिये यदि दूसरे में प्रेम है तो भगवान् नहीं मिल सकते। यहाँ व्यभिचार दोष हो जायेगा। हर एक मार्ग में विचारने से यह बात सिद्ध होती है कि आसक्ति का त्याग होना चाहिये। तीव्र वैराग्य के बिना किसी भी मार्ग की सिद्धि नहीं हो सकती। अज्ञान अनादि है, किन्तु ज्ञान से विनष्ट हो जाता है। ज्ञान के बराबर कोई चीज नहीं है। ज्ञान के द्वारा पापों का तथा अज्ञान का सर्वथा नाश हो जाता है। अज्ञान (अविद्या) दी दोषों का मूल कारण है। अविद्यादि पाँच क्लेशों का मूल कारण अविद्या है। अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश- ये पाँच क्लेश हैं। अस्मिता-अहंकार, राग-अनुकूलता, द्वेष-प्रतिकूलता, अभिनिवेश यानी-मरण-भय। कारण के नाश से कार्य का नाश अपने आप हो जाता है। जो आया नहीं है, आने वाला है, वह दु:ख हेय-नष्ट करने योग्य है। बीते हुये का क्या त्याग करना, जो दु:ख आने वाला है उसका ही त्याग करना है। वर्तमान तो एक मिनट में समाप्त हो जायेगा। अस्मिता के नाश से राग-द्वेष-अभिनिवेश का नाश हो जाता है। संयोग के नाश से सम्पूर्ण क्लेशों का

नाश हो जाता है। मैं-पन अविद्या का एक अंग है। देह में आत्मबुद्धि का होना ही अविद्या है। देह नाशवान् है। इसमें नित्यबुद्धि भी अविद्या है। यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति के साथ हैं– (१) निष्कामकर्म योग, (२) भक्तियोग, (३) ज्ञानयोग। इनका साधन करना है। मन बड़ा पाजी तथा धोखेबाज है। बुरी शिक्षा देता रहता है। कभी तो निराशा पैदा कर देता है कि परमात्मा की प्राप्ति कठिन, असम्भव है। तब मनुष्य थोड़ा ढीला हो जाता है। उत्साह टूट जाता है। मन में धीरता, वीरता, गम्भीरता आदि भाव उत्पन्न होने चाहिये। ईश्वर की शरण होने पर ये सब अपने आप हो जाते हैं। शरणागत परमशान्ति को प्राप्त कर लेता है। भगवान् हेतु रहित प्रेमी, दयालु एवं हितैषी हैं। सदा पास रहते हैं। फिर भय कैसे आयेगा। छोटा बच्चा माँ का आश्रय लेने पर दूसरे बच्चों से और बिडाल या कुत्ते से नहीं डरता है। भगवान् तो माँ से भी बढ़कर हैं। वे सब प्रकार समर्थ हैं उनकी गोद में बैठकर निर्भयता तो स्वाभाविक ही आ जाती है। भगवान् की शरण होकर, निर्भय होकर हमारे हृदय में धीरता, वीरता, गम्भीरता नहीं है, तो हमारी गलती है। भगवान् का आश्रय लेकर पुरुषार्थ किया जाये तो वह अवश्य सफल होता है। संसार के पदार्थों का आश्रय लेना मूर्खता है। पीछे पश्चाताप करना पड़ता है। मेरे पास बहुत से रुपये हो जायेंगे तो उसके ब्याज से काम चल जायेगा, तब भजन करुँगा- यह तो मूर्खता है। यह मिथ्या वस्तु का आश्रय लेना है। इसी प्रकार मकान-भाड़े का आश्रय लेना भी संसार की आश्रय ही लेना है। इसी प्रकार किसी व्यक्ति का आश्रय ले लिया और परमात्मा की प्राप्ति नहीं की, तो धोखे की चीज है, जैसे स्त्री पति का, पुत्र माता-पिता का, निष्काम भाव से आश्रय ले ले तो ठीक है, नहीं तो धोखा है। आश्रय तो एक परमात्मा का ही लेना चाहिये। योग्य भी वही है। परमात्मा को छोड़कर किसी भी पदार्थ का आश्रय नहीं लेना चाहिये। बल्कि धर्म का भी आश्रय नहीं लेना चाहिये। उसका पालन आश्रयरहित होकर करना चाहिये। (गीता ६ । १, ४ । २०) जड़ वस्तु का आश्रय लेना धोखे की चीज है। अपने शरीर के भरोसे भी नहीं रहना चाहिये-जैसे मैं अपना रोजगार करके पेट भर लूंगा। प्रारब्ध का भरोसा भी नहीं करना चाहिये। भगवान् का आश्रय भी शरीर निर्वाह के लिये नहीं, किंतु आत्मा के उद्धार के लिये लेना चाहिये। किंतु यह भी बहुत ऊँचे दर्जे की चीज नहीं है। ऊँचे दर्जे की चीज क्या है। ईश्वर की भक्ति करना, जीव का यही कर्तव्य है। पर यह भी मुक्ति के लिये नहीं। भगवान् चाहे नरक में डाल दें, किंतु कर्तव्य का पालन करना चाहिये। भगवान् चाहे अपना कर्तव्य पालन न करें, किंतु हम अपने कर्तव्य का पालन करते रहें। तब भगवान् कहेंगे कि मेरा भक्त मुझसे बढ़कर है।

इस प्रकार का निष्काम भाव रखना चाहिये। सकाम भाव से जीना नीचे दर्जे का भाव है। इससे तो मरना अच्छा है। इसका मतलब यह नहीं कि आत्महत्या करें, किन्तु जीवन को सफल बनाना चाहिये-भक्त सारी बात प्रभु पर छोड़ देता है। उसका ऐसा जीवन ही उत्तम जीवन है। अपने शरीर-निर्वाह का आश्रय किसी जड़ पदार्थ अथवा प्राणी को बनाना मूर्खता है। विशेष समझ में न आवे तो जीवन के प्रारब्ध पर निकम्मा नहीं हो जाना चाहिये। भगवान् पर निर्भरता अथवा प्रारब्ध पर निर्भरता यह बात फल-त्याग के लिये है, निकम्मा होकर रहने के लिये नहीं। कर्तव्य में कर्तापन का अभिमान नहीं रखना चाहिये। सब कुछ उनकी कृपा से ही होगा, मैं तो केवल निमित-मात्र हूँ। इसी प्रकार हमको निमित मात्र बन जाना चाहिये- 'निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन् ' गीता ११ । ३३ । जिस प्रकार अर्जुन ने भगवान् को सौंपकर सारथि बनाया था। वे जैसा कहें वैसा करना चाहिये दूसरों के कहने पर ध्यान नहीं देना चाहिये। अपना सारा काम भगवान् करें, नाम हमारा करें, उनकी मर्जी। जो बात कही जाये उसे कटिबद्ध होकर काम में लाने की चेष्टा करनी चाहिये। गीता के वचन, भगवान के वचन श्री विश्वशान्ति शास्त्र के वचन मानने चाहिये। घर में कोई काम हो तो भगवान् का काम समझकर छीन-छीनकर काम करें।

अपने पास कोई पदार्थ हो तो अपना अहोभाग्य समझकर भगवान् के काम में लगा दें। वस्तु तो भगवान् की है। यदि अपनी मानें तो भी आपकी चीज भगवान् के काम में आ गयी।

जहाँ भी रहे वहाँ सेवा करनी चाहिये। बड़ों की सेवा श्रद्धा से, छोटों की सेवा वात्सल्य से। घर के काम में अपना नम्बर पहला रखे। कोई काम हो तो उसे उत्साह, धैर्य के साथ करें (श्री गीता ६ । १) पदार्थ पर अधिकार नहीं रखना चाहिये। यदि है तो उसका त्याग कर देना चाहिये। वह भी न हो तो भगवान् के समर्पण कर देना चाहिये। उसे योग्य पात्रों के काम में लगा देना चाहिये। ब्रह्मज्ञान का प्रचार संस्था का काम तो डंके की चोट भगवान् का काम है। अपने को सोचना चाहिये कि कहीं भगवान् को अर्पण करने के बाद चोरी तो नहीं की। नहीं तो भगवान् से बात छिपी नहीं रहेगी। भगवान् को धोखा देना बड़ी गलती है। मनुष्य जीवन भगवान् का दिया है तो उन्हीं के लिये लगना चाहिये। अपना मन, बुद्धि, इन्द्रिय, शरीर-सब भगवान् के काम में लगा दें। जितना कम लगाते हैं, वह चोरी है। भगवान् का धन बर्बाद करते हैं तो रुपयों की चोरी है। यह कभी न माने कि 'मुझमें कमी नहीं है, मैंने सभी कुछ लगा दिया है।' जब तक कर्तव्य, मान्यता है, तबतक यह न माने वहाँ तो एक क्षण का भी विलम्ब नहीं हो सकता है। अपना दोष, कमकसपना का है। कम-से-कम शरीर के आराम की तरफ ध्यान देना चाहिये। फिर एक क्षण की देर नहीं हो सकती। यदि हो तो प्रलय हो जाये। वे तो प्रतिक्षण प्रतीक्षा करते रहते हैं। मिलने के लिये हाथ बढ़ाये रहते हैं। किंतु हम लोग आराम तलब हो गये हैं। इन्द्रियों को सार्थक बनाना चाहिये, बना सकते हैं। पर आलस्य और प्रमाद के वशीभूत हुए हम अपने-आपको भगवान् का नहीं बनाते हैं। भावी जीवन का सुधार करना चाहिये। बीत गया सो बीत गया। कटिबद्ध होकर तत्परता से चले तो शीघ्र उद्धार हो सकता है।

■ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय भगवान् के गुण-प्रभाव के तत्व-रहस्य का वर्णन

ॐ आनन्दमय भगवान के तत्व-रहस्य को ठीक-ठीक समझने के लिए एक कहानी बतायी जा रही है। एक पंडित जी थे। उनका जो लड़का था वह बड़ा बदमाश था। उसमें झूठ, कपट, चोरी, व्यभिचार आदि सभी अवगुण थे। उसके पिता के पास बहुत रुपये थे। वे भगवान् के उपासक थे। उनके पास एक मंदिर, अपना मकान और बगीचा था। इसके अलावा उनके पास में एक लाख रुपये नकद थे और जगह-जमीन आदि जो था, वह भी करीब एक लाख का स्टेट था। उन्होंने सोचा- मेरे मरने पर यह लड़का मेरे धन को बरबाद कर देगा, तो यह इसका पात्र नहीं है, किंतु यह जमीन और यह सम्पत्ति तो रहेगी ही। इसको तो बेच नहीं सकते। लेकिन एक लाख रुपये जो नकद है, ये इसको नहीं देना है। उन्होंने उन रुपयों को गुप्त रख दिया। लड़के के बुरे आचरणों को देखकर वे सदा दुःखी रहते थे। जब वे मरने लगे तो रोने लगे। लड़का बोला- पिताजी रोते क्यों हो? बोले- तेरे में जो दुर्गुण है उनको देखकर मैं रोता हूँ। मेरी जो सम्पत्ति है इसको तू नष्ट कर देगा। तो लड़के ने कहा कि यह मेरे स्वभाव का दोष है, यह तो मेरे से दूर होना मुश्किल है, किन्तु एक बात कोई आप बतला दें तो उसको मैं काम में लाने की चेष्टा करुँगा। तो उसको पिता ने एक मंत्र सिखला दिया और बोले कि जब तुम स्नान करो तो इसका एक बार प्रतिदिन पाठ कर लिया करो। यदि कोई महात्मा तुमको इसका सच्चा अर्थ बतलाने वाले मिल जायेंगे तो तुम्हारी सांसारिक दरिद्रता नष्ट हो जायेगी। उसको मंत्र सिखला दिया और उसने उसको खूब कण्ठस्थ कर लिया। उस मंत्र का अभिप्राय यह था कि मेरे लड़कों में दुराचार बहुत है, यह सदाचारी बन जाय तो मेरा जो गुप्त धन है, इसको महात्मापुरुष बदला दें। मैंने एक लाख रुपये मंदिर की गुंबज में रखे हैं। इसका जो रहस्य

है, जब यह पात्र बने तभी महात्मा इसे समझाये नहीं तो नहीं- यह उसका अर्थ था। वह रोज स्नान करते समय इसका पाठ कर लेता। पिता मर गया। मरने के बाद वह पाठ करता ही रहा। उसकी संपत्ति मंदिर को छोड़कर प्राय: नष्ट हो गयी। वह जुआ खेलता रहा और उसमें बरबाद हो गया। पहले उसमें चोरी जारी, हिंसा, भक्ष्याभक्ष्य यह सभी बूरी आदते थीं, किन्तु रुपये जब समाप्त हो गये तो ये सब स्वत: ही बंद हो गये। वह दु:खी हो गया। न उसको उधार मिलता है न उसको भीख ही मिलती है माँगने पर। उस दु:ख से दु:खी होकर वह रो रहा था। स्नान किया और स्नान करके उसने समय के अनुसार उस श्लोक का पाठ किया। एक अच्छे विद्वान महात्मा उसे सुनकर उसका तात्पर्य समझ गये। उन्होंने कहा– जो तुम यह पाठ करते हो इसका क्या मतलब है? वह बोला- मतलब यह है कि जब मेरे पिताजी मरे तो उन्होंने कहा कि इस श्लोक का तुम सदा पाठ करना। इस श्लोक से तुम्हारी दरिद्रता दूर हो जायेगी। किंतु होगी तभी जब तुम दुराचारों को छोड़ दोगे, तो कोई महात्मा तुमको इसका तत्व रहस्य समझा देगा। महात्मा बोले– इसके तत्व रहस्य को तुम समझे? वह बोला नहीं समझा। महात्मा ने कहा– मैं समझ गया, उसका सार जो है मैं तुम्हें बतला रहा हूँ। सुनो, तुम्हारे पिता के पास रुपये थे? वह बोला एक लाख रुपये थे। बोले मरने के समय तुम्हे दिया नहीं? बोला– बतलाया भी नहीं। बोले- क्यों? बोला पता नहीं क्यों? महात्मा बोले मुझको पता है। बोला तो महाराज आप बतला दो, बोले– तुम्हारी पिता की यह आज्ञा है कि लड़का जब पात्र हो जाये, दुराचारों को छोड़ दे तब बतलाना। तुम इसका क्या अर्थ समझे? बोला मैं इसका यह अर्थ समझा कि हमारे एक मंदिर है, उसकी जो गुंबज है, उसमें पिताजी ने लाख रुपये रखे हैं। यह समझकर हमने उस गुंबज को तुड़वाया था किंतु उसमें एक पाई भी नहीं मिली फिर उस गुंबज को वैसा का वैसा बनवा दिया बोले- अच्छा किया। यदि गुम्बज में होता, उसका यही अर्थ ठीक होता तो रहस्य और तत्व को समझने की क्या आवश्यकता रहती इसका कोई तत्व रहस्य है और उसको मैं जानता हूँ। वह उनके चरणों में गिर गया। बोला-आप जानते हो, तो मैं बहुत दु:खी है, मेरे सिर ऋण भी हो गया। सम्पत्ति तो सब नष्ट हो गयी और इस मंदिर का पिताजी ट्रस्ट बनवा गये तथा उसको धर्माथ कर गये। मंदिर तो धर्माथ होता ही है। बस यही बचा है, जिसका मेरे पास कोई उपाय नहीं और कोई सम्पत्ति भी नहीं है। मुझको अब न ऋण मिलता है, न भीख, मारा-मारा फिरता हूँ, बड़ा दु:खी हूँ। बोले मैं तुम्हें बतला दूँ। किंतु तुम्हारे जो दुर्गुण-दुराचार हैं उनको तुम छोड़ दो तो। वह बोला - महाराज ! मैं छोड़ दूँगा। महात्मा बोले- पहले नहीं बतलाऊँगा। पहले तुम छोड़ दो। उसने कहा- तो आपको विश्वास कैसे आयेगा। वे बोले तुम साल भर इसका परहेज रखो, फिर सदा के लिये प्रतिज्ञा करो। उसने कहा- ठीक है।

एक साल के बाद वह फिर उस महात्मा से मिला और बोला महाराज ! अब हमने सब छोड़ दिया है। अब तो मैं केवल भगवान का भजन-ध्यान ही करता हूँ और इधर-उधर से भीख माँगकर खाता हूँ। उधार कोई देता नहीं, मुझ पर जो ऋण है वह है ही। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ - प्रतिज्ञा करता हूँ कि भविष्य में कोई भी दोष मुझ में नहीं आ पावेंगे। अब आप मेरे पिता का धन मुझे बतला देवें। वे बोले ठीक है, कल चार मजदूर कर लेना। बोला– ठीक है। दूसरे दिन महत्मा बोले- तुम्हारा मन्दिर कहाँ है, उसने जाकर मन्दिर दिखाया, उन्होंने चारों तरफ निगाह करके देखा और बोले जमीन खोदने की सामग्री सब मँगाकर रखो। उसने कहा रख दी और बोला- महाराज ! बतलाओ ! महात्मा जी बोले- तुम जो पाठ करते हो। उसमें जो मंत्र बोलते हो, उस मंत्र में तो यह बात है कि हमारा लड़का दुराचारी है, इसमें दुर्गण भरे हैं, जब इसमें दुर्गुण दुराचार न रहे तो हमारी जो सम्पत्ति है, इसको महात्मा बतला दें। हमारी सम्पत्ति मंदिर की जो गुंबज है, उसमें चैत्र-शुक्ल प्रतिपदा के दिन बारह बजे रखी गयी है। अत: दिन के बारह बजने दो। जब दिन के

बारह बज गये तो उसके गुंबज की जहाँ छाया पड़ती है वहाँ निशान कर दिया। और बोले- इसको यहाँ से खोदो। वहाँ खोदने से एक लाख रुपये निकले। वे बोले- यह तुम्हारे बाप की सम्पत्ति है, इसको तुम ले लो। वह बोला- आप भी कुछ लें। वे बोले हम कुछ लेते नहीं, तुम्हारे पिता का धन है, तुम्हारा है। तो इस प्रकार उसको अपने पिता की सम्पत्ति मिल गयी। अत:

हम लोगों के पिता एक ॐ आनन्दमय भगवान ही हैं। उनकी सम्पत्ति है मुक्ति और यह सबकी चीज है। यह जो लौकिक स्वराज है, वह तो एक को ही मिल सकता है। हमारे जो परम् पिता परमात्मा की सम्पत्ति है वह युवराज पद सबको मिल सकता है। इसी प्रकार की पदवी है, उसे परमात्मा की प्राप्ति कहो, मुक्ति कहो, वह सबको मिल सकती है।

यह आप से एक बात कही गयी। परन्तु इसका जो तत्व रहस्य है, वह सबको समझना चाहिए। तो आपका पिता कौन है– ॐ आनन्दमय परमात्मा। उन्होंने हम लोगों को गीता का उपदेश अर्जुन को निमित्त बनाकर दिया है। इसका हम लोग पाठ करते ही हैं, इसका अर्थ भी समझते हैं, शब्दार्थ समझते हैं किन्तु उसका तत्त्व रहस्य नहीं समझते। एक भी श्लोक का तत्त्व रहस्य समझ जायॅ तो बेड़ा पार है।

■ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

श्री कल्याण वर्ष ४४, अंक ८ से लिया

श्री अमृतोपदेश

(पुराने सत्संग से)

ॐ आनन्दमय भगवान की प्राप्ति के कुछ सरल-साधन

भगवत प्राप्ति के अनेक साधन बताए गए हैं, पर कुछ साधन ऐसे हैं जो सबके लिए हितप्रद है, जिनमें कम समय अपेक्षित होता है। जो प्रत्यक्ष लाभकारी होते हैं तथा जो वर्तमान में और मृत्यु के पश्चात दोनों में हितप्रद होते हैं। ऐसे साधनों को नियम की भाँति काम में लाना चाहिए। ऐसे साधन इस प्रकार हैं–

१- प्रत्येक माता, बहन, भाई सबको अपनी आत्मा के कल्याण के लिए ॐ आनन्दमय भगवान के नाम का जप अधिक से अधिक नियम से करना चाहिए। जो जितना जप कर रहे हैं , वे उससे और बढ़ाकर करने की चेष्टा करें।

२- उठते-बैठते चलते-फिरते हर समय ॐ आनन्दमय भगवान को याद करने का अभ्यास करना चाहिए। पाँच मिनट, पन्द्रह मिनट, आधा घण्टा करते-करते निरन्तर याद करने की चेष्टा करनी चाहिए, इसके लिए चार सुगम उपाय हैं :–

(क) प्रतिदिन एकान्त में बैठकर करुणा भाव से गदगद वाणी से ॐ आनन्दमय भगवान से प्रार्थना करें– **''हे श्री आनन्दमय भगवान ! मैं हृदय से आपकी स्मृति करना चाहता हूँ। आपसे भीख मांगता हूँ कि आपकी स्मृति बनी रहे ।''**

(**ख**) नियम पूर्वक सत्संग करे। कहीं सत्संग नहीं मिले तो इष्ट ग्रन्थ का स्वाध्याय करें।

(ग) बार-बार ऐसा विचार करें कि मानव जीवन का समय मूल्यवान है। मनुष्य शरीर मिल गया, यह ॐ आनन्दमय भगवान की दया है। यदि इस बार भगवत प्राप्ति से वंचित रह गए तो हमारे समान कौन मूर्ख है? अमूल्य समय अमूल्य कार्य में ही लगाना चाहिए। ॐ आनन्दमय भगवान् की स्मृति अमूल्य है। इस विचार से ॐ आनन्दमय भगवान की स्मृति स्वाभाविक होगी।

(घ) मृत्यु को बराबर याद रखें। बार-बार यह विचार करें कि ''मृत्यु'' न जाने कब आ जाए। मृत्यु के समय ॐ आनन्दमय भगवान की स्मृति रहनी ही चाहिए। अत: जब तक निरन्तर भजन न हो तब तक बड़ा खतरा है।

इन चार उपायों को काम में लाने से ॐ आनन्दमय भगवान की स्मृति को बड़ी सहायता मिलती है।

३- अपने गुरुजनों को पद एवं अधिकार की मर्यादा के अनुरूप प्रतिदिन प्रणाम करें। जो गुरुजन समीप न हो, उन सबको मानसिक प्रणाम करें।

४- सबके साथ प्रेम का व्यवहार करें, सबका हित कैसे हो यह बात सोचें और यथाशक्ति उसके अनुसार आचरण करें। सबको ॐ आनन्दमय भगवान का स्वरूप समझ कर उनके साथ प्रेम करें।

५- अपनी योग्यता एवं सामर्थ्य के अनुसार सबकी सेवा करें, जो बड़े हैं, पूज्य हैं, दु:खी हैं– उनकी सेवा का अधिक महत्व है। सबको ॐ आनन्दमय भगवान समझें और इसी भाव से सबकी सेवा करें। अपने पास जो भोग पदार्थ तथा ऐश्वर्य के साधन हैं तथा और जो प्राप्त हों, उसे दूसरों की सेवा में लगावे और इसमें अपना अहोभाग्य समझें। सेवा में दो वस्तुओं की आवश्यकता है– सेवा के उपकरण की और शारीरिक श्रम की। दोनों का समान महत्व है। पहली में ममता का त्याग करना पड़ता है और दूसरी में अहंता का। सब को आनन्दमय भगवान मान कर सेवा करें तो हमें भगवत सेवा का ही लाभ होता है। सेवा को ॐ आनन्दमय भगवान की सेवा मानना यह सेवक के हाथ की बात है। निरन्तर इस भाव को बनाए रखे कि साक्षात ॐ आनन्दमय भगवान ही इस रूप में प्रकट होकर सेवा ले रहे हैं, तो वह सेवा ॐ आनन्दमय भगवान की सेवा होगी।

६- मान-बड़ाई प्रतिष्ठा का त्याग करें। मान-बड़ाई की इच्छा अध्यात्मिक दृष्टि से मरण की इच्छा है। अच्छे-अच्छे मनुष्य इसमें फँस जाते हैं और साधन से च्युत हो जाते हैं। कञ्चन-कामिनी का त्याग करने वाले भी मान-बड़ाई में जाकर रूक जाते हैं। अतएव मान-बड़ाई प्रतिष्ठा से सदा सावधान रहें।

७- इन्द्रियों को एवं मन को संयमित रक्खे। मनुष्य-मनुष्य की रक्षा के लिए किले का काम करता है। तथा साधन की शक्ति प्रदान करता है। जो व्यक्ति संयम को महत्व नहीं देता है उसके सब साधन निश्चय ही असफल होते हैं वह कोई भी काम सुचारु रूप से नहीं कर सकता। अतएव शारीरिक एवं मानसिक-दोनों प्रकार के संयम को अपनाएं।

८- प्रतिदिन नियमित रूप से प्रेम-पूर्वक स्वाध्याय करें। स्वाध्याय से ॐ आनन्दमय भगवान के तत्व रूप, गुण, ऐश्वर्य, महत्व, लीला आदि का ज्ञान होता है तथा अपने कर्तव्य का बोध होता है।

९- सबसे महत्व की बात है कि अपने परमप्रिय प्रभु पिता जी को दिल से नहीं बिसारें, प्राण भले ही चले जाएँ आपत्ति नहीं पर वे कभी हृदय से न जाएँ। वहीं ॐ आनन्दमय भगवान देखें, जहाँ पर आपके नेत्र जाए। कान से उनकी चर्चा सुनें, वाणी से उनके नाम का जप करें, शरीर से उनकी सेवा करें, मन से उनका चिंतन-स्मरण करें। इस प्रकार अपनी सारी इन्द्रियों को सदा ॐ आनन्दमय भगवान में लगाए रखें।

सबमें अपने इष्टदेव समझकर सबकी सेवा करें।

जब तक मृत्यु दर है, शरीर निरोग है तब तक हमें अपने उद्धार का प्रयत्न कर लेना चाहिए। वही हमारा मित्र है, वही हमारा बन्धु है, जो हमको ॐ आनन्दमय भगवान की ओर लगाता है, नहीं तो सब स्वार्थ के सम्बन्धी हैं। हम जिस परिस्थिति में है उसी में हम धर्मपालन कर ॐ आनन्दमय भगवान को प्राप्त कर सकते हैं। संसार में रहते हुए भी हम ॐ आनन्दमय भगवान की ओर लग सकते हैं। अतएव सब बातों पर विचार कर जीवन के एक-एक क्षण को अमूल्य समझना चाहिए और उसे आनन्दमय भगवान के स्मरण-भजन में बिताना चाहिए, नहीं तो महान हानि है।

ॐ आनन्दमय भगवान सर्वत्र है। उनके, चरण, नेत्र, हाथ, मस्तक आदि सब जगह हैं। इस प्रकार सबमें ॐ आनन्दमय भगवान को अनुभव कर सबकी सेवा करनी चाहिए। सबकी सेवा करने के कई भाव हो सकते हैं, जैसे :–

१- सब ॐ आनन्दमय भगवान की संतान है सब हमारे भाई हैं, अतएव सबकी सेवा करना हमारा परम कर्तव्य हैं।

२- सब हमारी आत्मा है, अतएव सबके रूप में हम अपने को ही अनुभव कर सबकी सेवा करें। भाई से कभी वैर भी हो सकता है पर अपनी आत्मा के प्रति तो कभी परायापन नहीं हो सकता।

३- सब हमारे इष्टदेव के स्वरूप हैं। कभी क्रोध में आकर अपने आपको भी मनुष्य नुकसान पहुँचा सकता है पर अपने इष्टदेव के प्रति इसकी सम्भावना नहीं रहती। अतएव सबमें अपने इष्टदेव ॐ आनन्दमय भगवान को अनुभव कर सबकी सेवा करनी चाहिए।

इस प्रकार की सेवा के लिए योग्यता प्राप्त करनी पड़ती है इसके साधन हैं– सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य का पालन, काम-क्रोध, लोभ आदि का त्याग, ॐ आनन्दमय भगवान का ध्यान, बाहर-भीतर की शुद्धि, सबके साथ पवित्र व्यवहार तथा हृदय खोल कर गदगद् वाणी से करुणा भाव के साथ प्रभु से प्रार्थना करना– हे नाथ ऐसी कृपा करें, जिससे मैं सब रूपों में आपका अनुभव कर सकूँ। भगवान बड़े प्रेमी एवं दयालु है। वे जीव की इस प्रार्थना को अवश्य सफल करते हैं। **■ॐ शान्तिमय**

श्री सत्संग-सुधा

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

हे प्रिय आत्मन् ! जो मनुष्य क्रोध के बल द्वारा दुर्बल मनुष्यों के अहंकार को दमन करते हैं उन मनुष्यों के अहंकार को ॐ श्री न्यायाधीश जी सबल क्रोधियों द्वारा दमन कराते रहते हैं।

पशु-पक्षी आदि प्राणी क्रोध-अग्नि के द्वारा विध्वंस होते आये हैं।

क्रोधात् प्रणश्यति

अत: मनुष्य को चाहिये कि दूसरों को दमन न करके, काम-क्रोध को दमन कर ब्रह्मानन्द युक्त ब्रह्मपद को प्राप्त करें।

परम हितकारी विधान-धारा श्री गीता अ. ५/२३ से २६ तक प्रकाशित है।

*** कामक्रोधवियुक्तानाम् ***

■ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय
राग-द्वेष से रहित होने का ज्ञान

किसी भी व्यक्ति, या जीव को, पदार्थ को, या परिस्थिति को अपने सुख-दु:ख का हेतु नहीं मानना चाहिये। क्योंकि सुख में हेतु मानेगा, उसमें राग हो जायेगा और जिसको दु:ख में हेतु मानेगा, उसमें द्वेष हो जायेगा। फलत: साधक राग-द्वेष रहित नहीं हो सकेगा?

ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी हमारी जितनी और जहाँ तक सम्मान करते हैं, उतनी और वहाँ तक की हम कल्पना भी नहीं कर सकते।

हृदय के भाव पवित्र होने पर कल्याण में विलम्ब नहीं होता।

■ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

भगवन् ! आज के शुभ दिवस पर श्री गीता विधान में प्रकाशित अखण्ड ज्योतिर्मय ब्रह्मवाक्य उच्चारण किये जा रहे हैं। श्री गीता अ. १२/श्लोक ६ से ८ (बड़ी गीता पृष्ठ सं. ३१० लघु गीता पृष्ठ सं. २१५)।

× × ×

ॐ आनन्दमय भगवत प्रेम के श्रोता वीर-वीराङ्गनाओं की दिव्य सेवा में श्री विश्वशान्ति आदि इष्ट ग्रन्थों का सार तत्व कथन् किया जा रहा है।

हे प्रियवर छात्र-छात्राओं ! अपने मन-वुद्धि को दिव्य आठ सिद्धि दायक सम्पन्न राम लक्ष्मण बनाना है। आठ असिद्धि दायक रावण-सूपनखा नहीं बनाना है।

स्मृति रहे ! इस भगवत् सृष्टि की रचना में आस्तिक और नास्तिक नामक अथवा देव और असुर नामक दो ही मार्ग हैं।

दशरथ कुमार आस्तिक नामक देव मार्ग के श्रद्धालु हुये और रावण कुमार नास्तिक नामक असुर मार्ग के

श्रद्धालु हुये।

महात्मा श्री राम युवराज पद की प्राप्ति को श्रवण कर हर्षित नहीं हुये और वन गमन का विषय श्रवण कर न शोकातुर हुये, न भयातुर हुये और न क्रोधित हुये। वीतराग भय, क्रोध: रहे। इस ब्रह्मनिर्वाण सिद्धि का नाम भगवान राम हैं।

''दु:खेषु अनुद्विग्नमनः सुखेषु विगतस्पृहः'' इस आत्म तृप्ति युक्त तुष्यन्ति-रमन्ति सिद्धि का नाम भगवान राम है। तथा मन-बुद्धि और इन्द्रियों को अपना दास बनाकर अपने आपको ॐ आनन्दमय भगवान के समर्पण करने का नाम लक्ष्मण है और मन-बुद्धि व इन्द्रियों की दासता का नाम रावण कुमार है अर्थात रावण-सूपनखा है। अस्तु

भगवन् ! सुना गया है कि वायुयान की मशीनरी की व्यवस्था ऐसी है कि उसे आकाश में कहीं खड़ा नहीं किया जा सकता, उसे गन्तव्य स्थान की ओर चलाते रहने का ही विधान है। हमारे भीतरी शरीर की रचना भी ॐ आनन्दमय प्रभु जी ने ऐसी रची है कि इस मशीनरी को भी जन्म से प्राण वायु के अन्त समय तक हम अकर्मण्य नहीं रख सकते।

हाँ ! वायुयान को किस दिशा की ओर चलाया जाय यह चालक के श्रद्धा-युक्त पुरुषार्थ का विषय है। वैसे ही हम अपने मन-बुद्धि और इन्द्रियों की क्रियाओं को महात्माओं द्वारा कथित भगवत् मार्ग की ओर चलावें अथवा पापात्माओं द्वारा कथित आसुरी मार्ग की ओर चलावें यह हमारे श्रद्धा-प्रेम और पुरुषार्थ का विषय है।

इन दोनों ही मार्गों में जैसी हमारी श्रद्धा होगी वैसा ही पुरुषार्थ होगा। तदनुसार ॐ आनन्दमय प्रभु पिता की ओर से भगवान् राम-लक्ष्मण के जैसी आठ सिद्धिदायक फलों की प्राप्ति होगी अथवा रावण-सूपनखा के सदृश आठ-असिद्धिदायक दण्ड मिलता रहेगा। अनुकूल आठ सिद्धियों का और प्रतिकूल आठ असिद्धियों का ज्ञान श्री विश्वशान्ति भाग-१ में प्रकाशित है।

भगवन् ! हम अपने हृदय में ॐ आनन्दमय प्रभु पिता की प्रतिष्ठा करें अथवा आसुरी अहंकार की प्रतिष्ठा करें यह मानसिक बौद्धिक विचारों का देवासुर संग्राम अनादि है।

हे विचारशील बालकों ! आसुरी अहंकार और दिव्य अहंकार के प्रभाव विषयक एक उदाहरण उच्चारण किया जा रहा है। ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी आसुरी अहंकार की रौनक की मान-बड़ाई प्रतिष्ठा करवाते हैं, कैसी? कृष्णपक्ष के चन्द्रमा जैसी। और दिव्य अहंकार की रौनक चमकाते हैं कैसी? शुक्लपक्ष के चन्द्रमा जैसी।

भगवन् ! हम प्रतिमाह देखते हैं कृष्णपक्ष के चन्द्रमा की रोशनी को क्रमश: कलाहीन करते हुये उसे अमावस तक प्रकाश रहित बना देते हैं।

हे सत्संग अनुरागी छात्र-छात्राओं ! अब हम श्री गीता अ. १२/६ से २० तक प्रकाशित ॐ आनन्दमय भगवत् पददायक विधान युक्त सात्विक कर्म करें अथवा अ. १६/६ से २० तक प्रकाशित भगवत् जेल दायक आसुरी कर्म करें, इन मानसिक बौद्धिक विचारों में हमारी स्वतंत्रता है। कर्मफल दाता ॐ आनन्दमय प्रभु पिता हमारे हृदय में सदा-सर्वदा विद्यमान हैं।

स्मृति रहे ! अ. १६/६ से २० तक प्रकाशित विधान स्वार्थ भाव की सिद्धि कराने वाला है। स्वार्थी मनुष्यों का जीवन प्रतिकूल आठ असिद्धि दायक होता आया है ''परिणामे विषमिव'' और अ. १२/६ से २० तक प्रकाशित विधान परमार्थ भाव की सिद्धि करने वाला है परमार्थी जीवन आठ दिव्य सिद्धि दायक है।

भगवन् ! १६वें अ. में और १२वें अ. में प्रकाशित विधान का सुगम अर्थ श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग-१ में प्रकाशित है। श्री इष्ट ग्रन्थ में प्रकाशित विधि-विधान को आदर देना हमारी उन्नति का साधन है। अस्तु,

■**ॐ शान्तिमय**

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम् ।
प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्तुमव्ययम् ।।

भगवन् ! इस श्लोक का सुगम अर्थ कथन किया जा रहा है–

१- यह सद्गुण विद्या का ज्ञान सब विद्याओं का राजा है ।

२- यह सद्गुण विद्या का ज्ञान सब गोपनीयों का भी राजा है ।

३- यह दिव्य गुण विद्या अति पवित्र है ।

४- यह सात्त्विक सेवा विद्या अति उत्तम है ।

५- यह ध्यान विद्या प्रत्यक्ष फल दायक है ।

६- यह भगवत प्रेम विद्या अध्ययन करने में सुगम है ।

७- यह आनन्दमयी विद्या परम आनन्ददायक है ।

८- यह दिव्यगुण विद्या अविनाशी है ।

भगवन् ! यह सद्गुण विद्या का ज्ञान सब गोपियों का भी राजा है। इस ब्रह्मवाक्य का भावार्थ है कि ॐ आनन्दमय प्रभु पिता का दर्शन अत्यन्त गुप्त है तथा अपना आनन्दमय स्वरूप भी गुप्त तत्व है और ॐ आनन्दमय प्रभु पिता द्वारा प्राप्त होने वाला दिव्य आनन्द और दिव्य शान्ति भी गुप्त पदार्थ है अर्थात ॐ आनन्दमय प्रभु पिता द्वारा प्राप्त होने वाली सभी सम्पत्ति और दिव्य शक्ति दृष्टिगोचर होने वाली नहीं है। अस्तु,

भगवन् ! यह दिव्यगुण विद्या अति पवित्र है इस ब्रह्मवाक्य का भावार्थ है कि सद्गुण विद्या हृदयकोष को अपवित्र करने वाले १२५ मानसिक रोगों को शान्त करने वाली है और अज्ञान जनित बौद्धिक रोगों को नष्ट कर अन्त:करण को पवित्र करने वाली है।

भगवन् ! यह सद्गुण विद्या अविनाशी है इस ब्रह्मवाक्य का भावार्थ है कि सद्गुण विद्या द्वारा होने वाली दिव्य सम्पत्ति का कोई नाश नहीं कर सकता। इस भगवत् सम्पत्ति युक्त राज विद्या के पारदर्शी विद्वान चाहे वे भौतिक दृष्टि से दुर्बल अथवा निर्धनी ही हों, उनके सम्मुख सज्जन श्रेणी के राजा-रानी तक भी नतमस्तक होते आए हैं और क्रोध श्रेणी के द्वेषाचारी मनुष्य द्वेष कर नष्ट-भ्रष्ट भी होते आए हैं।

भगवत् ! हमें विचार करना है कि इन २० वर्षों में श्री ध्यानमग्न आत्माओं से द्वेष करने वाले कितने नन्द स्वामियों के दम्भाचारी शरीरों को ॐ आनन्दमय प्रभु जी ने महाभूतानि किया है, जो नन्द महाराज बचे हैं वे लोग भी मक्खन-मलाई सेवन करने की अभिलाषा से देहली-जेल की ताड़ना से कर्षयन्त: शरीरस्यं हुये थे। यह श्रद्धा करने योग्य विषय है। अस्तु,

भगवन् ! इस ब्रह्म-पद शक्तिदायक सद्गुण विद्या का प्रभाव अकथनीय है।

यह दिव्य-गुण विद्या आनन्दमयी विद्या है। इस सद्गुण विद्या को धारण करने में सब कोई स्वतंत्र है। इस सद्गुण विद्या के प्रभाव से मनुष्य दु:खरूप आसुरी संसार सागर से सदा के लिये मुक्त हो जाता है। मैं भी इस राज विद्या का लघु विद्यार्थी हूँ।

इस दिव्यगुण विद्या में श्रद्धा रहित मनुष्यों के लिये शाप रूप वैधानिक वाक्य हैं– भय, शोक, विषाद, दु:खालयम् आसुरी योनिमापन्ना मूढ़ा जन्मनि-जन्मनि ।

■ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मानसिक चिकित्सा एवं ध्यानयोग का प्रभाव

शारीरिक एवं मानसिक रोगों को दूर करने में स्मरण ध्यान का महत्वपूर्ण स्थान है। ध्यान से शरीर एवं मन-बुद्धि में शान्ति, पवित्रता एवं निर्मलता आती है। सदा प्राणीमात्र के कल्याण का विचार करने से एवं सभी सुखी

हों, निरोग हों और शान्त हों- इस प्रकार की भावनाओं की तरंगों को सभी दिशाओं में प्रसारित करने से स्वयं को सुख तथा शान्ति की प्राप्ति होती है। इसकी विधि श्री विश्वशान्ति भाग-१ से पृष्ठ-९५ पर ''गुणवानों के सात्त्विक भाव'' (सर्वभूतहितेरता: की विधि) के नाम से प्रकाशित है।

व्यक्ति जैसा चिन्तन करता है प्राय: वैसा ही बन जाता है। मैं आनन्दमय हूँ, दु:खमय नहीं, मैं शान्तिमय हूँ, चिन्तामय नहीं। इस प्रकार प्रतिपक्ष चिन्तन से अपने दिमाग को निरोग बनाते रहना परम आवश्यक है। इसे मानसिक चिकित्सा की विधि कहते हैं। इस विधि से अपने तथा दूसरों के दु:खों को दूर किया जा सकता है। श्री विश्वशान्ति भाग-१ में १२५ मानसिक रोगों का वर्णन है।

मैं दु:खमय हूँ, मैं अशान्तिमय हूँ, इस प्रकार बार-बार चिन्तन करने से व्यक्ति का मनोबल दुर्बल हो जाता है और मानस रोग बद्धमूल हो जाते हैं। मानसिक रोगों का निवारण तो प्रज्ञाबुद्धि युक्त ब्रह्मबल द्वारा ही करना चाहिए एवं शारीरिक रोगों का निवारण औषधियों से करना चाहिए।

शारीरिक और मानसिक रोगों से मुक्ति चाहने वालों को रोगोत्पादक सभी मूल कारणों को त्यागने का अभ्यास करना चाहिए एवं अपने अनुकूल शारीरिक तथा मानसिक चिकित्सा शास्त्रों द्वारा निर्दिष्ट सात्विक पथ्य, सद्गुण-सदाचार युक्त सात्विक कर्मों का सेवन करना चाहिए। श्री विश्वशान्ति भाग-१ में ग्रहण तत्व और त्याग तत्व में इसकी विस्तार पूर्वक व्याख्या की है। यथा सम्भव अनिष्ट चिन्तन से बचना चाहिए और चित्त को राग-द्वेष, मोह आदि दोषों से दूर रखना चाहिए।

सम्पूर्ण दु:खों का कारण तमोगुण युक्त अज्ञान, लोभ-क्रोध तथा मोह है। त्रिगुण के प्रभाव से और अज्ञान के बंधन से मुक्त होने का एक मात्र उपाय है- दिमागी रोगों के चिकित्सक देव की आज्ञानुसार सेवा-योग और ध्यान-योग का अभ्यास करना एवं ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के अनुग्रह को प्राप्त करना। ॐ आनन्दमय भगवान की अनुग्रह शक्ति ध्यानयोग से भी बड़ी शक्ति है। अतएव अहंता-ममता का त्याग करके भगवद् चरणों का एक आश्रय लेकर सेवायोग-ध्यानयोग की साधना करने से शारीरिक व्याधि के साथ-साथ त्रिविध ताप एवं भव-व्याधि भी कट जाती है। यदि शारीरिक व्याधि पूर्णतया न भी कटे, तो भी ऐसा साधक पूर्णतम आनन्द को प्राप्त करने में सर्वथा समर्थ हो जाता है।

■**ॐ शान्तिमय।**

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय
ज्ञान और अज्ञान का विकास

(१) निरहंकारी दया-प्रेम युक्त प्रसन्नचित्त में आनन्द-शान्ति दायक सात्त्विक ज्ञान प्रकट होने का विधान है (१८/६१)। यह निरोगी दिमाग के लक्षण हैं।

(२) अहंकार युक्त चिन्तित-क्रोधित चित्त में दु:ख अशान्ति दायक तामसी ज्ञान प्रकट होने का विधान है (१८/६१)। यह रोगी दिमाग के लक्षण हैं।

स्मति रहे ! चित्त की समता और प्रसन्नता की स्थिति के समय सदाचार का बर्ताव होता है तथा चित्त की नाराजगी और क्रोध की स्थिति के समय दुराचार का बर्ताव होता है अत: आप अपने दिमाग की चिकित्सा करें।

अपराधी नारी-नरों के दिमाग को ॐ श्री न्यायाधीश जी काम, क्रोध, चिन्ता आदि की १२५ अग्नियों द्वारा उबालते रहते हैं। ॐ

काम-क्रोध का नाश हो,
हर्ष-शोक का त्याग हो।
प्रेम-प्रसन्नता का विकास हो,
समता-सन्तोष की प्राप्ति हो।।

यह धर्म के दिव्य रत्न हैं और ज्ञानवीर दिमाग के लक्षण हैं।

■ॐ शान्तिमय

चार शत्रुओं का ज्ञान

(१) विटामिन रहित इन्द्रिय-भोगी तन अपना शत्रु है।

(२) गुण रहित कामी-क्रोधी मन अपना शत्रु है।

(३) प्रियता और प्रसन्नता रहित चिन्ता, नाराज़गी युक्त जन अपना शत्रु है।

(४) असत्य-व्यवहार का धन अपना शत्रु है।

यह चार शत्रु चिन्ता, क्रोध, भय, रुदन, नाराज़गी युक्त दु:ख अशान्ति दायक हैं और जन्म-मृत्यु के दाता हैं।

योगसिद्ध ब्रह्मवाची महामंत्र–

''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय''

को हर समय हर कार्य करते हुए जपें।

यह मंत्र महामंत्र ध्यान योग युक्त आनन्द-शान्ति दायक है।

■ॐ शान्तिमय

चार मित्रों का ज्ञान

(१) विटामिन युक्त इन्द्रिय विजयी तन अपना मित्र है। (युक्ताहार बोधस्य)

(२) ध्यानयोग-सेवायोग अभ्यासी सन्तोषी समतावान् मन अपना मित्र है। (युक्त योग बोधस्य)

(३) सुहृदता गुण सम्पन्न सन्तोषी समतावान् जन (श्री समाधिमग्न महात्मा) अपना मित्र है।

(४) निष्काम भाव से प्राप्त धन अपना मित्र है। (युक्त कर्म बोधस्य)

यह चार मित्र सुख, शान्ति युक्त भवगत् आनन्द-शक्ति दायक हैं और मोक्ष के दाता हैं।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

को हर समय हर कार्य करते हुए जपें ।

यह महामंत्र ध्यान योग युक्त आनन्द शान्ति दायक है।

■ॐ शान्तिमय

मनुष्य को निर्भागी बनाने वाले ग्यारह शत्रुओं का ज्ञान

१- चार - छै: घण्टे से अधिक सोने का प्रेम ।

२- ज्ञान शक्ति रहते हुए सेवा कार्य न करना । ''इसका नाम है आलस्य''

३- व्यर्थ कर्म भीतर से एवं बाहर से करना ।

४- चिन्ता (५) क्रोध (६) कपट विद्या में प्रवृत्ति ।

७- सांसारिक प्रेमी पदार्थों में आनन्द की अनभूती

८- प्रेमी पदार्थों की अति कामना ।

९- प्राप्त प्रेमी-पदार्थों पर अपनी अहंता-ममता ।

१०- आसुरी (भगवत् विधान के विपरीत) प्रेमी पदार्थों पर आसक्त हो जाना ।

११- आसुरी प्रेमी-पदार्थ और असुर विद्या का अहंकार । देव और असुर प्रेमी - पदार्थों के प्रभाव का विस्तार ज्ञान श्री गीता अ० १६ श्लोक १ से श्लोक २० प्रकाशित है ।

■ॐ शान्तिमय